𑒒𑒩𑒠𑒹𑒐𑒱𑒨𑒰

𑒮𑒳𑒦𑒰𑒭𑒔𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒨𑒰𑒠𑒫





𑒒𑒩𑒠𑒹𑒐𑒱𑒨𑒰



मैथिली अकादमी
पटना

घर देखिया

लेखक

श्री सुभाषचन्द्र यादव



मैथिली अकादमी प्रकाशन संख्या–८१

प्रकाशक,
मैथिली अकादमी
श्रीकृष्णपुरी, पटना–८००००१

१९८३
प्रति–११००

मूल्य—
अजिल्द–१०.०० (दस टाका)
सजिल्द–१२-५० (बारह टाका पचास पाई)



मुद्रक :
कालिका प्रेस
पटना-४

प्रकाशकीय

श्री सुभाषचन्द्र यादवक कथा संग्रह 'घरदेखिया'क प्रकाशन करैत मैथिली अकादमी बहुत हर्षक अनुभव क' रहल अछि। 'मिथिला-मिहिर' एवं मैथिलीक अन्य पत्र-पत्रिकाक पाठक हिनक कथा-साहित्यसँ पूर्ण परिचित छथि। हिनक कथाक ई प्रायः पहिल संग्रह थिक।

श्री सुभाष जी मैथिली साहित्यक अति नवीन पीढ़ीक रचनाकारमे अग्रगण्य छथि। मैथिली साहित्यपर एक प्रच्छन्न तथा कखनहुं प्रकट आरोप रहल अछि जे ई वर्गीय साहित्य थिक-अर्थात् मैथिली साहित्य वर्ग विशेषक स्थिति, सभ्यता, सामाजिक, आर्थिक, एवं सांस्कृतिक पृष्ठभुमिपर आधारित रहैत अछि। एखन धरि मैथिलीमे जे साहित्यकार रचना कयलनि अछि ताहिमे अधिकांश स्वभावतः ओही समाजक चित्रण कयलनि अछि जकर हुनका पुर्ण परिचय छलनि वा छनि। खास क' कथा एवं उपन्यासमे ई आवश्यक होइत छैक जे लेखक जाहि समाजक चित्रण करैत अछि तकर ओकरा सर्वांगीण परिचय रहैक। तेँ ई आक्षेप एकदम जिराधार सेहो नहि कहल जा सकैत अछि।

श्री सुभाष जीक कथाक मुख्य आकर्षण ई अछि जे ओ जाहि वर्गक लोकक सुख-दुख, आशा-आकांक्षा, उदासीनता, आक्रोश एवं सामाजिक, आर्थिक पृष्ठभूमिक चित्रण कयलनि अछि से एखन तक उपेछिते जेकाँ छल। हिनक कथा बहुत मार्मिक, शैली सहज एवं स्पष्ट तथा भाषामे सरल, तथा सभक हेतु बोधगम्य रहैत अछि।

श्री सुभाष चन्द्र यादव सहरसा जिलाक नव पीढ़ीक एक प्रगतिशील एवं प्रतिभावान साहित्यकार छथि। ई एखन धरि कथा लिखैत छथि, आब आलोचना दिस सेहो हिनक ध्यान गेल अछि। ई सहरसामे स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग मे अध्यापक छथि।

'धरदेखिया'क प्रकाशन निश्चित रूपेँ मैथिली साहित्यक क्षितिज-विस्तार कयलक अछि। आशा अछि जे भविष्यमे हिनक रचना सभसँ मैथिली साहित्यक अभिवृद्धि होइत रहत।

मदनेश्वर मिश्र
अध्यक्ष, मैथिली अकादमी

पटना,
दिनांक २६ मार्च, १९८४

विषय-सूची

अभाव

पूरा एक साल भ' गेल छैक। समयक एतेक दूरी पर सोचैत ओकरा आलस अबैत छैक। एहने मौसम रहैत छलैक। दिन सामान्य बनि-बनि बितैत जाइत छलैक। ओकरा केवल दू तरहक अनुभूति होइत छलैक। पछिया बहलापर एक तरहक उदासी आ प्रत्येक राति ई सोचब जे एकटा खाली दिन फेर गुजरि गेल छैक।

ओ कैक बेर सोचिक' रहि जाइत अछि। हिम्मति नहि होइत छैक। सुस्त भ' जाइत अछि। कोनो दोसर दिन पर टारि सोचबाक दिशा बदलि दैत छैक। कतेक दिनसँ एहिना भ' रहल छैक। ओकरा मोन नहि पड़ैत छैक, केहन मनः-स्थिति रहैत छलैक जखन ओ लिखि लैत छल। ओहन मनःस्थितिक लगातार बरख भरिसँ अभाव ओकरा दुःखप्रद बुझाइत छैक। ओ सोचैत अछि, लिखबा लेल पछिला सालक मनःस्थितिकेँ फेरसँ जियाब' पड़तैक ?

कोन-कोन चीज पर लिखल जा सकैत छैक, ओ बहुत बेर सोचि चुकल अछि। ओकरा किछु नहि बुझयलैक अछि। जेना सभ चीज पर धुंध पसरि गेल होइ। ओकरा लगलैक अछि जे एकटा एहन देबाल छैक जतसँ ओकर दिमाग टकराक' घूरि अबैत छैक।

लिखबा लेल ओ एक दिन अतिरिक्त 'मूड'मे तैयार भ' गेल छल। कागज, कलम हाथमे ल' लेलक। बहुत देर भ' गेलैक। हाथमे कोनो गति नहि, जेना लकबा मारि देने होइक। ओकरा बेचैनी होब' लगलैक। थोड़ेक दूरपर कुकूर सभ झौहरि मचायब शुरु क' देलकैक। ओ उठि गेल छल।

बिहाड़ि' 'पानि' 'पाथर' 'नदी-पहाड़
वेर-बेर किएक
हमरे लेल

ओ कखनसँ एतबे लिखिक' बैसल छल, मोन नहि पड़लैक। आन-आन चीज सभ सोच' लागल छल। एक बेर फेर ओ छूटल सूत्रकेँ पकड़' चाहैत छल। दिमागपर बहुत जोर देलकैक। बड़ी काल धरि आँखि मुनने रहल। ओकर टाङ बिना ओकर ध्यान खिचने खास ढंगसँ हिलैत रहलैक। कुर्सी पर बैसल रहब ओकरा तकलीफ देअय लगलैक। ओ बिछाओनपर आबि पड़ि रहल। निन्न आब' लगलैक।

बजार जयबाक काल ओ सतर्क भ' गेल। प्रत्येक वस्तुक क्रिया-प्रतिक्रिया पर ओकरा ध्यान देबाक चाही, ओ सोचलक। लिखबा लेल कोनो चीज सहायक भ' सकैछ। एतेक सतर्कताक अछैतो ओकरा नवीनता नहि बुझयलैक। सड़क, दोकान, लोक, हवा, मौसम, सभ किछु पूर्ववत् आ सामान्य छलैक।

ओ निर्णय लेलक, एक दममे जे होयतैक लिखि लेत। बादमे संशोधन करैत रहत। दस-पन्द्रह मिनट लागल होयतैक। एक पेज तैयार भ' गेलैक।

हमर बाँहि आ पीठपर
लगाओल गेल बिल्ला
बिजली जकाँ छिटक' लागल छल।
आ हम कँपैत रहलहुँ
आ वचावक दिशामे
एहि कोनसँ ओहि कोन धरि
भगैत रहलहुँ
जाहि कोठलीमे गेलहुँ
ओकर देबाल धधक' लागल छलैक
कोठलीसँ निकलिते
मौसम बदलि गेलैक
आ हम मरुभूमिसँ नदी आ
पहाड़क अन्तहीन दूरी
नपैत रहलहुँ

एहने कैकटा टुकड़ा आर छलैक। ओ ऊपरसँ नीचाँ धरि पढ़ि गेल। रचना स्वयं ओकरा बड़ कमजोर बुझयलैक। पचीस तीसटा शब्द एकदम फालतू लगलैक। कतेक टुकड़ा साफ कात भ' गेल छलैक। क्रमहीन आ अस्पष्ट टुकड़ा सभमे ओ लाख कोशिशक बादो कोनो संशोधन नहि क' सकल।

ओ 'पेज' दू दिन धरि टेबुल पर ओहिना पड़ल रहलैक। जखन-तखन ओहि पर ओकर नजरि पड़ि जाइत छलैक। ओ तुरन्त ओहि दिससँ मूड़ी फेरि लैत छल। 'पेज' ओकरा चुनौतीसँ कम नहि बुझाइत छलैक। जगह जगह कटलहा अंश देखि वितृष्णा होइत छलैक। ओ 'पेज'केँ मोड़ि जेबीमे राखि लेलक। खाली समयमे ओहि पर सोचत।

ओकरा छोड़ि चाहक दोकानपर दोसर गाहकि नहि छलैक। बगलमे तीनटा छोट-पैघ पीपरक गाछ। सड़क पर लोकक आबाजाही कम छलैक। हवा मन्द गतिसँ बहि रहल छलैक। सिहरन अनुभव कयल जा सकैत छल। ओकरा वातावरण उदास आ 'पोयटिक' बुझयलैक। चाहक बाद सिकरेट पिबैत-पिबैत ओ कविताकेँ दोसर ढंग सेँ लिखब शुरू कयलक।

शब्द संग नहि देलक कहियो
इच्छित सन्दर्भसँ अलग
बनैत अर्थक दुर्गम पहाड़
असफल रहलहुँ हम
कतहु पहुँचबामे
एक टा यातनामय संसारमे
जीबनक आरम्भ

एतहि आबि कलम अँटकि गेलैक। ओकरा भेलैक, आब ओ कहियो कविता नहि लिखि पाओत। ओकर संवेदनशीलताक मात्रामे ह्रास भ' गेल छैक। अपने हितमे खराबसँ खराब स्थितिक प्रति ओ बेसी काल संवेदित नहि रहि पबैत अछि। एहन अनुभव ओकरा बहुत बेर भेल छैक। साँझोखन एहिना भेल छलैक। ओकर मित्र खराब चीज कहैत-कहैत रुकि गेलैक। जबरदस्ती दबायल गेल शब्दक अर्थ ओ बूझि गेल छल। ओकरा दुःख भेलैक। किछु कालक बाद ओ लिखलक—

हमर पहुँच ओत' अछि
जाहि मोड़परसँ
शब्दक अर्थ
परिवर्तित आकारमे आब' लगैत छैक

कविता एहिसँ आगाँ नहि बढ़लैक। मित्रक प्रति ओकर आनि बिला गेल छलैक। तखन ओ सोचने रहय जे काव्य-रचनाक लेल तीव्र दुःखात्मक आबेग आवश्यक छैक।

रातिखन ओ व्यंग्यात्मक कविता लिखबाक चेष्टा कयने छल। तीन पाँती लिखयलैक। ओहिमे व्यंग्य नामक चीजक कतहु पता नहि छलैक। खाली सतही आक्रोश छलैक। ओकरा आक्रोश भेल छलैक, आन समय कविताक सैद्धान्तिक पक्षपर कोना ओ बहस करैत रहैत अछि। लिखबा काल किछु काज नहि दैत छैक।

हवा तेज भ' गेलैक। चाहवला बजैत छैक, बिहाड़ि अओतैक। ओकरा पछिला सालक निरन्तर पछियामे उड़ैत बालु आ उदासी मोन पड़ैत छैक।

(१९७१)

असंगति

एहि कात लड़कीवला होस्टल रहैक आ भिड़ले ओहि कात लड़कावला। दुनूक बीचमे चाह-पान आ फलक किछु दोकान रहैक। लड़का-लड़कीक बहरा गेलासँ होस्टल दिन भरि भकोभन्न भ' जाइक। मुदा साँझकेँ होस्टलक नीरस जीवनमे विचित्र सक्रियता आ गति आबि जाइक। लड़का-लड़कीक समूह वा जोड़ एगारह-बारह बजे राति धरि दोकान सभ लग बैसल गप्प करैत रहैक। किछु अनतुक्को लोक अबैक आ लड़की सभकेँ कार आ मोटर साइकिल पर घुमाब' ल' जाइक। मुदा, बेसी गोटे होस्टलेक लगपास रहिक' वातावरणकेँ रंगीन बनौने रहैक।

ओहू राति एहिना छलैक। करीब दसक अमल रहल होयतैक। दोकान सभ लग गोड़ तीसेक लड़का-लड़की छिड़िआयल छलैक। ओ सभ किछु खाइत-पीबैत अथवा ओहिना ठाढ़ भेल गप्प क' रहल छलैक। बेसी गोटे घोंदिआयल रहैक। खाली चारि-पाँचटा जोड़ा बेरल छलैक। दू-तीन दिनसँ जाड़ फाटि गेल रहैक, मुदा पूरा-पूरी भागल नहि रहैक। किछु गोटे सूटर-तूटर पहिरने आ किछु खालिए अंगमे छलैक।

लड़कीबला होस्टलक गेट लग एकटा कार ठाढ़ छलैक। कारमे बैसलि कुकी रणधीरसँ गप्प क' रहलि छलि। कनकनी नहि रहलासँ कखनो काल कारमे अबैत सिहकी ओहि दुनूकेँ सुखद आ सोहाओन लागि रहल छलैक। कनेक काल पहिने कुकी दोकानसँ दू कप चाह अनने छलि। ओना, बेसी काल एहन काज लड़के करैक। गप-सपमे आस्ते-आस्ते चाह खतम भ' गेलैक। कनेक काल धरि

दुनूक हाथमे खलियाहा कप पड़ल रहलैक। रणधीर जखन कप सीट पर राख' लगलैक त' कुकी ओकर हाथसँ कप ल' लेलकैक आ दुनू कपकेँ पकड़ने रहलि। एक मन भेलैक जे जाक' दोकान पर राखि आबय जे तीस-चालीस डेग पर छलैक, मुदा गेलैक नहि। बीच-बीचमे हाथमे पड़ल कप ओकर ध्यान खिचैत रहलैक। गप्पो कोनो तेहन नहि चलि रहल छलैक जे ओकरा एकाग्र आ तन्मय बनबितैक। नवीन दोकाने दिस आबि रहल छलैक। कुकीक लेल ओ अनचिन्हार रहैक, मुदा ओकरा लगलैक जे भरिसक नवीन चाहवला दोकान धरि जयतैक आ ओ ओकरा हाथे कप पठा सकैत अछि।

कारकेँ देखिते सहज आ उदासीन भावेँ नवीनकेँ ठेहकलै जे कोनो छौंड़ा-छौंड़ी होयेतैक। ओ अझक्के छौड़ीकेँ देखबो कयलकै, मुदा बिना कोनो रुचि लेने आगू बढ़ि गेलैक।

एक्सक्यूज मी !—कुकी आवाज देलकै। ओ नवीनेकेँ संबोधित कयने छलैक, किएक तँ तखन ओहि ठाम आर क्यो नहि रहैक। नवीन जिज्ञासामे कुकी दिस तकलकै। कुकी फुलपेंट आ उजरका अंगा पहिरने छलि। ओकरासँ सटिक' ओ छौड़ा बैसल रहैक, आ कुकीक हाथमे तराउपरी दूटा कप राखल रहैक।

'आर यू गोइंग टु दैट साइड ?'

नवीनकेँ कप देखिक' बुझा गेलैक जे कुकी किएक ई पूछि रहलि छैक। ओकरा प्रचण्ड तामस आ घृणाक अनुभूति भेलैक। ओ ठीके ओम्हरे जाइत छलैक, मुदा कहलकै–'नो'। प्रयासक अछैतो जवाब देबाक ओकर स्वर अस्वाभाविक रूपेँ तेज भ' गेल रहैक। वस्तुतः ओ कह' चाहलकैक–'तोरा हिम्मति कोना भेलौक ? हाउ डिड यू डेयर ?' मुदा शालीनतावश कहा गेलैक–नो।

ओ ओही ठाम पानवला दोकान लग ठाढ़ भ' गेलैक, ऊपरसँ अन्तस्थ आ क्षात्मलीन देखाइत। पानवला पुछलकैक तँ कने काल धरि ओकरा बुझयबे नहि कयलैक जे ओ किएक ठाढ़ भ' गेल छलैक, आ ओकरा की चाही। ओकरा चाहक दोकान दिस जययाक रहैक। मुदा आब ठाढ़ भ' गेल छल तँ किछु-ने-किछु लेबहि पड़तैक। ओ यंत्रवत् आ अज्ञात भावेँ सिगरेट धरौलकै। दोकानदारक सिगरेट देबासँ पहिनहि ओकर मन फेरसेँ भटकि गेल छलैक। हाउ डिड यू डेयर ? ओ किएक नहि कहि देलकै ? ई पाखण्ड किएक ? की ओ शालीनताक पात्री छलैक ? कुकी कतहु ओकरा अत्यन्त तुच्छ आ निम्न श्रेणीक लोक तँ ने बूझि गेल रहैक ? ओकर बगय अथवा वस्त्र तँ ने एहन संकेत आ सुझाव दैत रहैक ? मुदा जँ ई बात रहितैक तँ कुकी अंगरेजीमे

किएक पुछितैक—आर यू गोइंग टु दैट साइड ? बाहरसँ नहियों बुझयलापर असलमे ओ छलैक निम्ने श्रेणीक लोक। तैयो कुकी ओकरा तुच्छ नहि बुझने रहैक। एहि तरहेँ पुछनाइ कुकी सन लोकक दुनियाँमे स्वीकृत आ सामान्य छलैक। ओहिमे अशिष्टता वा अपमानक कोनो प्रश्न नहि रहैक। जँ ओ कप लेनहि जैतैक तँ की भ' जैतैक ? ओहिसँ ओकर उदार आ भद्रे चरित्र प्रकट होइतैक। ओ हीन नहि भ' जाइत।

अपन मनकेँ ओ हजार ढंगसँ बुझबैत रहलैक, मुद्रा घृणा आ क्रोधक आवेग कम नहि भेलैक। कुकीक प्रश्न ओकर करेजमे भूर करैत रहलैक। कोनो दोसर लोककेँ—बिन कारवला लोककेँ—एहन हिम्मति होइतैक ? ओकरा सन लोक बिना कोनो देरी कयने अपनेसँ कप राखि अबितैक, कारमे बैसल इच्छित व्यक्ति संगे गप्प करैत नहि रहितैक। अपन प्रत्येक इच्छा आ सुखकेँ सर्वोपरि मानि दोसरकेँ अनुचर जकाँ बना देबाक साहस नहि करितैक। आखिर ओ अपनोसँ तँ कप राखि आबि सकैत छलि ! फेर किएक हाथमे धयने रहलि ? आ धयने रहलि तँ ओकरासँ किएक पुछलकैक—आर यू गोइंग टु दैट साइड ? कुकीक धृष्टता ओकरा फेरसँ सुलफा जकाँ गड़लैक। ओ सोचलक जे कुकीक 'एक्सक्यूज मी' कहब कतेक नीच आ दुष्ट उद्देश्यसँ भरल छलैक !

वस्तुतः ओ एतेक विचलित नहि भेल रहैत जँ कुकी कने लत भ' क' ओकरासँ आग्रह कयने रहितैक। ओहन स्थितिमे ओ सहर्ष कपो ल' जैतैक। मुदा कुकीक लेल नवीनक कल्पना धरि नीचाँ उतरब असम्भव छलैक। ओकरा लेल तँ ओएह सहज आ संभव छलैक—एक्सक्यूंज मी ! आर यू गोइंग टु दैट साइड ? नो। नवीनकेँ ई गप्प सालैत रहलैक आ क्षोभ भेलैक जे ओ किएक नहि कहि सकलैक—हाउ डिड यू डेयर ?

(१९७८)

आँचर

आइ फेर नहि उबेर भेलैक ।

'आसिन मास जँ बहय इसान
घर-घर कानय गाय-किसान'

—क्यो बजैत छैक ।

बाप रे ! डब्बल सतरिया । नहि जानि, मेघमे कतेक भूर भ' गेल छैक । आठ दिनसँ बदरी लधने छैक । तुलसीक चौरा ! फेर ओकर ध्यान चल गेलैक । लगैछ जेना जँत्ता जकाँ क्यो कूटि देने होइक । पाँको माँटिमे बुनका-बुनका । धौर ! फेर ओएह मोन पड़ि गेल । ओकर मुह घोकचि गेलैक ।

बुन्न जोरसँ पड़' लगलैक । डोमी कलबारक टिन हरहराय लगलैक ।

'कोठियोमे दीप जरौने किछु नहि भेलैक'—ओ सुनलक ।

उबेर करौक आ कि बदरी लधने रहौक, ओकरा कोन मतलब ? मुदा ओकर तुलसीक चौरा ? कथी ले' पानि ढारतैक ! एतेक पानि तँ होइते छैक । तावत थोड़े ओ तुलसी सुखायल जाइत छैक ? एतेक पानि ढारलकैक से तँ किछु भेवे नहि कयलैक आ दू-चारि दिन नहिएँ ढारतैक तँ की होयतैक ! एह, हे भगवान ! फेर ई मोन पड़ि गेल ।

'हय, हरदीबाली किएक भोरेसँ बैसलि छैक ?'—'की करतैक ? धीया नहि पूता आ·· सुनबो करै छैक, हय ?'

तुलसीक चौरा ! फेर ओकरा मोन पड़लैक ।

'गय, आइ चुल्ही नहि जरतैक ?'—यैह छिऐक बियाही, ओकर सौतिन पेटमधबी ! सौंसे देह खाली पेटे पेट छैक । की जाने गेलिऐक, आर किछु सुझैत छैक की नहि । राछसनी !

'की करतैक धीया ने पुत्ता आ ··· ···'ओकरा फेर तुलसीक चौरा मोन पड़ि गेलैक ।

ओकर कठोर हृदय तुलसीक चौरा जकाँ पानिमे गल' लगलैक । सौतिनक प्रति मोनमे दयाक भाव आबि गेलैक । बेचारी ! खायत नहि तँ की करत ? पेटे ल' क' तँ दुनिया छैक ! मुदा ओकरे टा किएक सभ चीज बिरस लगैत छैक ? किएक ओ सदिखन उदास रहैत अछि ?

'तेँ एकटा मुसरियो नहि खसलौक, ओहिना पानि ढारिते रहि जेबेँ किछु नहि होयतौक'—क्यो कहने छलैक । आ फेर मोन पड़ि गेलैक तुलसीक चौरा ! मन भेलैक एक्के लातमे ढाहि दैक ।

'हे गय ! फेकि दही एकर सभ चीज अङनामे, चल जयतैक अपन बपहिया लग । बाप रे ! आठो पहर बाजत ने भूकत आ बैसल-बैसल टुकटुक तकैत रहत । हुँटा एहि डनियाहीकेँ, सोधि लेतौक सभकेँ'—ओ उनटिक' तकलक अपन सायँ दिस ।

'हे ! तोड़ि लैह मोटका कंठी आ खाह माछ-मांस । की होइत छैक ओहि मोटका तुलसीक ढेंगसँ ? नहि-नहि, चल जाह दोरिकाजी आ ल' आब' गय छाप जे आगिक काज नहि होयतह'—ओकरा मोन भेलैक जे कहि दी ।

'उबेर क' देलकैक' कोनो छौँड़ा चिकरल । हरदीबाली तकलक तुलसीक चौरा दिस । तुलसी हरियर कचोर भ' गेल छलैक । मुदा ओकर आँचर सुखायले छलैक । की ओकर आँचर कहियो हरियर नहि होयतैक ? एहिना छुच्छे रहतैक ?

रौद कड़गड़ भ' गेल छलैक । ओकरा बुझयलैक जेना तुलसी झामर आ मौनायल चल जा रहल होइक । फेर पानि ढार' पड़तैक ।

तखने एकटा कार कौआ तुलसीक चौरापर आबिक' बैसि गेलैक आ टाँसि उठलैक ।

(१९६९)

उत्तर मेघ

खूब जोरगर पुरबामे मेघ उड़िया गेलैक। ओ सभ फेर शान्त भ'क' चल' लागल। अगिला रेलवे ढलान लग मौजी बैसि गेलैक। ओ चलबामे धखाइत रहैक। तीन दिन पहिने चोरके खेहारबामे ओकर टाङक हड्डी उछटि गेल छलैक। शीबू, कामू, देबू आ विजेन्द्र ठाढ़ भ' गेल।

तीनटा मौगी अबैत छलैक। ओहिमेसँ एकटा मौजीक सामने बैसि गेलैक। दोसर जे बुढ़िया छलैक, ओकरा पाँजमे पकड़ि उठाब' लगलैक। ओ आङुरसँ पटरी पकड़ि लेलक। ओकर चेहरा पर बहुत रास नोछारक चेन्ह छलैक। शीबू, कामू आ विजेन्द्र ओकर दुनू स्तन दिस तकैत छल, जे आङीक अभाव आ ध्यान नहि देलाक कारणेँ झुलि रहल छलैक। की भेल छैक, मौजी पुछलकैक।

'दुनूकेँ अपनेमे की-कहाँदन भेल छैक'— बुढ़िया ओकर पति दिस संकेत करैत कहलकैक।

रुसनिहारि खूँट मे बान्हल रुपैयाकेँ ऊपर उठबैत बाजलि—'ई टाका नहि थिकैक जे ओ अंडा खिअयबाले धान बेचैत रहैक, धीया पूताक खरचा!'

रुसनिहारि बुढ़ियाक बेटी थिकैक, से जानि मौजी आश्वस्त होइत सुझाव देलकैक जे ओ चल जाय।

रुसनिहारि एखनो अड़लि छलि। 'छोड़ि ने दहक, भने रेलमे कटि क' मरि जयतैक।'—कामू कहलकैक।

'नहि जाइत छह, तँ एगो टाका द' दहक, मेला देखि औतैक।'—विजेन्द्र चुटकीं लैत कहलकैक।

मौजी संगे ओ सभ फेर बढ़' लागल आ ओहि तीनू मुसहरनीकेँ बिसरि गेल।

स्टेशनसँ थोड़ेक दछिने दुर्गा बनल छलैक। ओ सभ लाइनवला एकपेरिया छोड़ि मेला चल आयल। शीबू आ कामू एक बेर मूर्त्ति दिस उड़ैत नजरि ताकि छौँड़ीसभकेँ देख' लागल।

'आब चलू पान खयबा ले'—विजेन्द्र कहलकैक।

शीबू विरोध कयलकैक।

कामू, देबू, मौजी सहमतिमे चुप रहल। ओ सभ परमिनियाँसँ विजेन्द्रक बहिन रेखाकेँ देखि क' घुरल छल। लड़की पसिन्न नहि भेलि छलैक। कथा ठीक भ' जइतैक तँ शीबू पान खा सकैत छल। ओना, विजेन्द्रक परिवारबलाकेँ नापसिन्न-वला गप्प नहि बुझल छलैक। विजेन्द्र रातिमे परमिनियाँ जा सकैत छल, नहियोँ जा सकैत छल। एम्हर-ओम्हरमे पाइ उड़ा देलासँ दिक्कति भ' सकैत छलैक।

विजेन्द्रक जिद्दपर शीबू पान खा लेलक।

विजेन्द्रसँ एकटा विचित्र तरहक सम्बन्धक अनुभव शीबूकेँ बरोबरि भ' रहल छलैक, ओहि सम्बन्ध धरि पहुँचबामे रेखा आवश्यक छलैक आ आब ओ बहुत दूर फेका गेल छलैक।

विजेन्द्र स्टेशन धरि अयलैक। मौजी आ देबू साँझक गाड़ीसँ गाम चल गेलैक। विजेन्द्र घुरि क' दोसर ठामक मूर्त्ति देख' चल गेलैक। कामू आ शीबू ठेहिआयल बेंचपर बैसि गेल। ओ दुनू कव्वाली सुनबा ले रुकि गेल छल। कव्वाली नओ-दस बजे रातिसँ शुरू होयतैक। ओ दुनू बेंचपर बैसल-बैसल लाल नूआबाली एकटा अधवयसू मौगीकेँ देखैत रहल।

'चल, चाह पीबी' बड़ी कालक बाद शीबू प्रस्ताव कयलकैक। ओकरा संगमे पाइ रहितैक तँ ओ बहुत पहिने चाह पीबि लेने रहैत।

'छोड़ह, की चाह पीबह' कामूक विरक्तिपर शीबूकेँ तामस उठलैक। कामूक एहन व्यवहार शीबू लेल नव नहि छलैक। मुदा मेलोक दिन तँ कमसँ कम मुट्ठीकेँ कनेक ढील करबाक चाही। शीबू मेला देखबाक पक्षोमे नहि छल। कामुए जोर कयने छलैक।

'आइ मेला थिकैक, बुझल छौक कि नाहि?'—शीबू कहलकैक।

'तँ की भेलैक?'—कामू उत्तरमे प्रश्न कयलकैक।

ओ दुनू चुप भेल बैसल रहल।

कामूक भागिन जगदीश हालेमे कपड़ाक दोकान खोलने छलैक। कामू आ शीबू दोकानपर बैसि रहल। जगदीश कामूसँ शिकाइत करैत रहलैक जे ओ आन बहिन सभक ओहि ठाम जाइत छैक आ ओकरा ओहि ठाम नहि जाइत छैक। कामू पूरा समय धरि सफाइ दैत रहलैक।

'ई सभ तँ होइते रहतैक, हमरासभकेँ रंगीनियो देखबाक अछि ।'—शीबू टोकलकैक ।

'अहाँ सभ तँ मेलामे लोककेँ देखैत छिऐक । मुदा हम इएह देखैत छिऐक जे लोकसभ कतेक प्रसन्न भ' क' मेला देखि रहल छैक आ के केहन कपड़ा पहिरने छैक । आइ एकटा मौगी एहन देखलिऐक जे दस वर्ष पहिलुका 'वाइल' पहिरने छलि ।'—शीबूकेँ जगदीशक दृष्टि व्यापारिक बेसी बूझि पड़लैक ।

कामू आ शीबू ओत'सँ बिदा भेल तँ कामूक पितियौत बहनोइ उपेन्द्र भेटि गेलैक । उपेन्द्र एकटा अस्पतालमे कम्पाउन्डर छल, मुदा बड़ टिप-टॉपमे रहैत छल । ओकरा रहलापर चाह आ पान भेटि सकैत छलैक । ओ तीनू भाङक एक-एक पुड़िया पानि संगे पीबि गेल । प्रस्ताव शीबूक छलैक आ पाइ उपेन्द्रक ।

उपेन्द्र कहलकैक जे ओकरा बड़ जरूरी काज छैक आ ओ जाय चाहैत छल ।

'मेला दिन कोन एहन काज भ' सकैत छैक ?' शीबू पुछलकैक ।

'एकटा संगीकेँ तकबाक अछि ।'—उपेन्द्र उत्तर देलकैक ।

'छोड़, राति भरिमे ओ थोड़ेक मरि जयतैक !'—शीबू कहलकैक ।

'अरे, ओ शराब पियबैत ।'—उपेन्द्र कहलकैक ।

कामू उपेन्द्रक डेन पकड़ि स्टेशन दिस बढ़' लागल । रास्तेमे एकटा बूढ़ सन लोक भेटलैक । उपेन्द्र ओकरहि तकैत छल । ओ बुढ़बा खादी भण्डारमे कोनो काज करैत छल । एखन ओ एक टा मास्टरनीक जासूसी क' घुरल छल । उपेन्द्र आ बुढ़बाक एकान्तीसँ शीबू आ कामू अन्दाज लगौलक जे कतहु कोनो गड़बड़ छैक ।

शीबू आ कामू आगाँ बढ़ि गेल । उपेन्द्र आ बुढ़बाकेँ विपरीत दिशामे जाइत देखि दुनू ओहि दिशाक अनुसरण कर' लागल ।

आगाँ बहुत दूर धरि कोनो छौँड़ी नहि देखाइत छलैक जकर अन्दाज शीबू आ कामू कयने छल । उपेन्द्र आ बुढ़बा नजरिसँ फराक नहि भेल छलैक ।

ओ दुनू रुकि गेल ।

उपेन्द्र आ बुढ़बा बढ़ि गेलैक । ओ दुनू फेर बढ़' लागल ।

अगिला बिजलीवला पोल लग एकटा करिक्की अधवयसू मौगी एक गोटेसँ गप्प क' रहलि छलैक । शीबू आ कामूकेँ ओ मौगी गहिकी नजरिये देखलकैक । मोड़पर उपेन्द्र आ बुढ़बा ठाढ़ छल ।

'अहाँ दुनू गोटे दस मिनट धरि स्टेशनपर रहू, हमसभ आबि रहल छी । अहाँसभ रहबैक तँ ओकरो चारि गोटे भारी लगतैक ।'—उपेन्द्र कहलकैक ।

शीबू आ कामू तत्काल ओकर प्रस्ताव मानि बढ़ि गेल ।

उपेन्द्र आ बुढ़बा सोझे बढ़ि गेल । ओ अधवयसू मौगी स्टेशन होइत फेर बजार दिस जाय लगलैक । ओकरा संगे एकटा सात-आठ वर्षक छौँड़ा छलैक ।

शीबू आ कामूकेँ सन्देह भेलैक ।

'उपेन्द्र आ बुढ़बा आब नहि औतैक' शीबू कहलकैक ।

शीबू आ कामू ओहि मौगीक पाछाँ कर' लागल ।

ओ मौगी रेलवे क्रॉसिंग लगक चाहवला दोकानमे ओहि छौँड़ाकेँ राखि पच्छिम मुहेँ बिदा भ' गेलैक । शीबू आ कामू सिकरेटवला दोकानपर बिलमि गेल । अगिला मोड़पर ओ दुनू ठाढ़ भ' गेल । ओ मौगी रहस्यमय ढंगसँ गायब भ' गेल छलैक ।

'अजीब चकमा देलकह !'—कामू कहलकैक ।

'ई दुनू सेहो कत' गायब भ' गेलौक ?'—शीबूक संकेत उपेन्द्र आ बुढ़बा दिस छलैक ।

'हे ओएह !'—कामू लगभग उत्तेजित होइत चिचिआयल । ओ मौगी ओम्हरे आबि रहलि छलैक । मौगी छप्पावला पियरका साड़ी आ लाल ब्लाउज पहिरने छलि। ठोर लिपस्टिक अथवा पानसँ लाल छलैक । ओ मोड़परसँ एकटा गलीमे ढुकि गेलि । कनेक दूर गेलापर ठाढ़ भ' क' शीबू आ कामू दिस देखलक आ फेर बढ़' लागलि ।

'अपने दुनूसँ दिशा पूछि रहल छौ'—शीबू कहलकैक ।

कामू कहलकैक—'चल, नहि तँ फेर गायब भ' जयतौक ।'

ओ दुनू फेर पाछाँ कर' लागल । बहुत दूरक बाद शीबू आ कामू रुकि गेल । उपेन्द्र आ बुढ़बा एकटा गाछ लग ठाढ़ छलैक । मौगी ओहि दुनूकेँ गाछक अन्हारमे देखि पानक दोकान पर चल गेलि । ओकरा पान खयबामे दस मिनट लागल होयतैक । फेर ओ घुरलि आ गाछक अ'ढ़मे गायब भ' गेलि ।

शीबू आ कामू अन्दाज लगौलक जे आब ओ दुनू शुरू क' देने होयत ।

'आब की करबहक ?'—कामू पुछलकैक ।

'कनेक कालक बाद स्पॉटेपर पकड़बैक । कि तँ भङठि जयतैक, नहि तँ सुतरि जायत ।'—शीबू कहलकैक ।

दस मिनटक बाद कामू पुछलकैक–'चलबहक ?'

'चल ने !'—शीबू उत्तर देलकैक।

मुदा ओ दुनू एक-दोसरक भय आ कमजोरीकेँ अनुभव क' रहल छल।

दस मिनट फेर बीतल होयतैक। ओ दुनू फेर ओएह प्रश्न एक-दोसरसँ कयलक।

'बरनी चल, पान खयलाक बाद चलल जाय'—शीबू कहलकैक।

ओ दुनू पान खा क' घुरल तँ एकटा दोसर बुढ़िया मौगी ओहि गाछ लग बैसलि छलैक।

'दू-दूटा रखने छैक हौ ?'—कामूकेँ आश्चर्य भेलैक।

तावत् एक टा पुरुष रिक्शासँ उतरलैक। ओ मौगी ओकरा संगे एकटा कोठलीमे चल गेलैक।

शीबू आ कामू कोठली लग ठाढ़ भ' गेल जाहिमे उपेन्द्र आ बुढ़बाक होयबाक संभावना छलैक।

केबाड़क फाँक द' क' उपेन्द्र देखाइत छलैक आ ओहि बुढ़बाक आवाज मात्र सुनल जा सकैत छल।

ओ दुनू सोचलक जे एक आदमी आर छैक जे एखन मौगी संगे पछिला कोठलीमे छैक। ओहि दुनूकेँ हिम्मति नहि भेलैक जे केबाड़ खटखटाबय। दुनू फेर पानक दोकान दिस चल आयल।

'दुनूकेँ निकल' दहक तखन कहबैक जे खोआबह'—कामू कहलकैक।

शीबूकेँ एखन अनुभव भेलैक जे एगारह बाजि रहल छैक आ ओ भूखल अछि। ओकरा कामूक एहि संचय-वृत्तिपर बड़ तामस आ दुःख भेलैक।

ओ दुनू घुरल तँ उपेन्द्र आ बुढ़बा सड़क पर ठाढ़ छलैक।

'की औ, खूब उड़लैक ने !'—शीबू कहलकैक।

'एह, हम सभ तँ बैसल छलिऐक।'- उपेन्द्र कहलकैक। ओकरा संगक बुढ़बा चुप छलैक। शीबू आ कामूकेँ बुढ़बा एकटा निर्लज्ज चेहरा सन बुझा रहल छलैक।

'अहाँ तँ आब कव्वाली सुन' नहि जायब। आब तँ अहाँकेँ ओंघी लगैत होयत ?'—शीबूकेँ सन्देह छलैक जे ओ दुनू ओहि मौगीकेँ बन्न क' आयल अछि आ आब राति भरि··'।

'अहाँकेँ शंका अछि तँ चलू, हम अहीं सभक संग रहब'—उपेन्द्र कहलकैक।

'शंकाक कोन बात, ई तँ सत्ये थिकैक'—कामू कहलकैक।

'से रहितैक तँ अहाँसभकेँ किछु बुझलो नहि होइत। अहाँसभकेँ कोन अनुभवे अछि !'—उपेन्द्र कहलकैक।

'तखन भेलै की ?'—शीबू पुछलकैक।

'ओकरा फुरसतिए नहि रहैक।'—उपेन्द्र उत्तर देलकैक।

'तखन आयले छलि किएक ?'—शीबू पुछलकैक।

'विश्वास नहि होइत अछि तँ चलू ओकरा स्टेशन पर देखा दत छी।' उपेन्द्र कहलकैक।

ओ चारू गोटे स्टेशन दिस बढ़ि गेल। ओ मौगी ठीके कासिगवला चाहक दोकान लग चाह पीबि रहलि छलि। ओ छौड़ा ओकरा लग ठाढ़ छलैक।

'देखियौक ने, आन दिन कैकटा ने भेटैत रहैक'–उपेन्द्र अफसोस प्रकट कयलकैक।

कामू आ शीबूकेँ सभ किछु रहस्यमय बुझयलैक।

ओ सभ स्टेशन आबि गेल।

'आब नहि भेटत ?'—शीबू उपेन्द्रसँ पुछलकैक।

'बड़ राति भ' गेल छैक।'

'आइ बड़ कम छल'—शीबू कहलकैक।

एकटा छौँड़ी लगसँ गुजरलैक। उपेन्द्र आ बुढ़बा ओकर अनुसरण कर' लागल।

'आब तँ नहिएँ आयब ?'—शीबू हल्ला करैत उपेन्द्रसँ पुछलकैक। उपेन्द्र बुढ़बासँ गप्प करैत उत्तर देलकैक–'भिनसरुका ट्रेनमे।'

कामू आ शीबू छौँड़ी आ ओहि दुनूकेँ जाइत देखैत रहलैक।

पेट खाली रहबाक कारणेँ शीबूकेँ बड़ हल्लुक निसाँ आयल छलैक।

'चल, किछु खायल जाय' - मेलापर आबि शीबू कहलकैक।

'आब की खायल जाय, चाह पीबि ली'—कामू कहलकैक।

कनेक-कनेक फूही शुरू छलैक। दोकानमे स्वभावतः भीड़ बढ़ि गेल छलैक।

दोकानक पच्छिम दूटा सिपाही हाथमे डंटा लेने ठाढ़ छलैक। आ कव्वाली सुनैत छलैक।

स्टेशनक बगलमे संभवतः दरोगा एना ठाढ़ छलैक जेना अगिला दृश्यमे ओकरा अभिनय करबाक हो।

ओ दुनू चाह पीब' लागल। कातमे बैसलाहा लोकसभ पछिला सालक कव्वाल पार्टीक प्रशंसा करैत बहस क' रहल छलैक जे ओ पार्टी एहि साल कत' गेल छैक।

ओ दुनू स्टेजक पुबारी कात चल आयल। कनेक दूरपर शंटिंगक दशामे एकटा इंजिन आबि क' स्टेजक पूब ठाढ़ छलैक। दुनू ड्राइवर इंजनेपरसँ कव्वालपार्टी दिस देखि रहल छल। कनेक कालक बाद दरोगा स्टेजक पछबरिया कातसँ उतरि हाथवला डंटा झुलबैत स्टेशन दिस तेजीसँ बढ़ि गेलैक। शीबूकेँ आश्चर्य भेलैक जे मेलामे दरोगा एतेक क्रियाशील आ उत्साही अछि।

कनेक कालक बाद जोरसँ पानि शुरू भ' गेलैक। ओ दुनू ठाढ़े रहल। भीड़ भगलैक। मुदा ओहि दुनूकेँ ई नहि पता चललैक जे छौँड़ी सभक भीड़ कोन बाटे निपत्ता भ' गेलैक। ओ दुनू किछु हतोत्साह सन स्टेशन घुरि आयल। स्टेशनक सभटा बेंच भरल छलैक। चारू दिस एके तरहक हल्ला छलैक—'केहन जमल जाइत रहैक, पानि चौपट क' देलकैक।'

ट्रेनसँ एकटा परिवार उतरलैक, जाहिमे तीन-चारिटा एकतुरिया छौँड़ी सभ छलैक। ओहि सभक लगपास बेस भीड़ जमा भ' गेलैक। शीबू आ कामू भीड़मे मिलि गेल छल। ओहि परिवारक पुरुष-सदस्य अस्तव्यस्त सन बुझाय लगलैक। कनेक कालक बाद ओ 'लेडीज वेटिंग रूम' खोलबौलक। भीड़ स्वतः छँटि गेलैक।

गाड़ी खुजबा धरि कामू आ शीबू स्टेशनपर घूमि-घूमि छौँड़ीसभकेँ देखैत रहल।

'एक्कोटा नीक नहि छैक!'—कामू कहलकैक।

शीबू चुप भेल छौँड़ीकेँ देखैत छल।

बाहर पानि टिपटिपाइत रहैक।

(१९७२)

एक टा दुःखान्त कथा

सुगियाक उमेर पैंतीससँ चालीसक बीच रहल होयतैक। ओकरा तीन टा धीया-पूता छलैक आ जेठका बेटा चौदह बरखक भ' गेल रहैक। मुदा ओकर बान्ह-काठ एखनो आकर्षक आ सौन्दर्यसँ युक्त छलैक।

सुगियाक विपरीत उपेन अनाकर्षक बाइस सालक जवान विद्यार्थी छलैक। पहिने दुनू देयर-भौजीमे कहियो पटैत नहि छलैक। उपेन तहिया अबोध रहैक। ओकर तकलीफ देखिक' सुगियाक सासु ससुर उपेनवाँ ल'क' भिन्न भ' गेलैक। भिन्न भेलाक बाद पुरनका वैमनस्य आ कटुता भेटा गेल रहैक। कहियो कोनो बात ल'क' घोंघाउज होइतो रहैक तँ ओकर प्रभाव अस्थायी होइत छलैक। दुनू देयर-भौजीमे हँसी-चौलबला सहज आ सामान्य सम्बन्ध बहुत दिन धरि बनल रहलैक।

सुगिया अपन घर-दुआर, खेत-पथार आ भविष्यक चिन्तामे निमग्न रहैक। उपेनक बेसी समय संगी-साथीक गप्प आ ताशमे कटि जाइक। आन एकतुरिया जकाँ उपेनो सभ जवान लड़कीक प्रति समान रूपसँ कमजोर आ अनुरक्त छलैक। सांसारिक दायित्व आ अनुभव ओकरा लेल एखनो अनभोआर छलैक।

मुदा एक दिन अकस्मात् सभ किछु बदल' लगलैक। सुगियाक सौन्दर्यपर उपेन कहियो धेयान नहि देने रहैक। मित्रक प्रशंसाक बाद जखन उपेन सचेत भेलैक तँ एतेक दिनसँ चीन्हल-जानल सुगिया ओकरा एकदम नव आ भिन्न बुझयलैक। उपेन जतेक बेर सुगियाके देखलकैक ततेक बेर ओकर अभिनव भाव आ संवेदनक अनुभूति होइत रहलैक। सुगियाक प्रत्येक गति आ क्रिया ओकरा लेल दिव्य आमोद

भ' गेल छलैक। सुगियाकेँ निहारैत रहबाक आ पयबाक आकांक्षा निरन्तर तीव्र आ प्रबल होइत गेलैक। मुदा उपेन जखने किछु कह' चाहैक तखन ओकरामे एक टा विचित्र डर आ आदंक समा जाइत छलैक।

'भौजी, अहाँ अखनो बहुत खापसूरति छिऐक।'—एक राति बड़ मोसकिल आ बहुत प्रयत्नक बाद उपेन कहि देने रहैक।

सुगिया थोड़ेक काल चूल्हिकेँ चुप-चाप देखैत रहलैक। ओकरा रोमांचक प्रसन्नता आ फेर परितापक अनुभूति भेलैक।

—'आब ऐ देहमे की रहि गेल छैक।'

ओहि सभ चीजक लेल ओकरा पश्चात्ताप आ अवसादक अनुभव भेलैक जे अवांछनीय ढंगसँ बीति गेल रहैक।

—'भौजी हमर तँ मन होइत अछि जे अहीँ लग बैसल रही आ गप करैत रहीं।'—ई कहैत उपेनकेँ फेर घबराहटि आ डर भेलैक।

उपेनक प्रशंसा आ इच्छा कनेक कालक लेल सुगियाकेँ विचलित आ अस्थिर क' देलकैक। अपन ई कहब ओकरा झूठ बुझयलैक जे ओकरामे आब किछु नहि छैक। ओ तखनो सम्पूर्ण विश्वासक संग ई गप्प नहि कहने रहैक।

सुगिया प्रतिष्ठित आ सम्पन्न घरसँ आयलि एहि परिवारक पहिल पुतहु रहैक। एहि विशिष्टता आ सौन्दर्यक कारणेँ ओ सभ व्यक्तिक स्नेह, आदर आ धेयानक केन्द्र बनि गेलि रहैक। ताहिया ओकर समस्त युवा सौन्दर्य आ आत्मा पतिकेँ समर्पित छलैक। ओहि जीवनक ततेक अभ्यस्त भ' गेलि रहैक जे ओ ई बिसरि जकाँ गेलि रहैक जे ओकरामे एखनो एहन चीजक अस्तित्व छैक जे आन लोकमे महत्व आ आकांक्षाक जन्म द' सकैत छैक। ओकरा आगू युवावस्थाक ओ स्मृति सभ सजीव मूर्त भ' उठलैक जे प्रिय आ सुखद छलैक।

उपेन छाँह जकाँ सुगियाक पछोड़ धयने रहैक। ओकर एहि काजसँ सुगियाकेँ लाज आ डर होइक। उपेनकेँ जेना कथूक चिन्ता नहि छलैक। घरक काज आ पढ़नाइ ओ बिसरि गेल छलैक। माय-बापक तामस आ फज्झतिक ओकरा पर कोनो असरि नहि होइक।

सुगिया बहुत दिन धरि उपेनकेँ ल'क' दुविधा आ अनिश्चयमे पड़लि रहैक। उपेनक अभ्यर्थना आ अनुनय ओकरा लगातार खिचने चल जा रहल छलैक। ई सभ बहुत पीड़ादायक आ आकुल कर'बला छलैक।

फेर एक राति आवेश आ जोआरिमे ओ भयंकर घटना भ' गेलैक। ओ ई की क' लेलकैक ? ओकर चेतना पर जेना केयो जबरदस्त प्रहार क' देलकैक। पति कतहु अनत' गेल रहैक आ धीयापूता सभ किछुसँ अनजान निन्नमे डूबल रहैक। कातमे शिथिल पड़ल उपेनसँ ओकरा तीव्र घृणा भेलैक। अपन कृत्य आ ईश्वरक स्मृतिसँ ओ काँपि गेलैक। ओकर कंठ अवरुद्ध भ' गेलैक। पति, धीयापूता आ अपना ले ओकरा जोर-जोरसँ विलाप करबाक मन भेलैक।

किछु दिन धरि सुगिया उपेनक प्रति जड़ का उदासीन बनलि रहलैक। ओकरा आश्चर्य भेलैक जे ओकर ओ घृणा कत' अलोपित भ' गेलैक जकर तीव्र आ सघन अनुभूति ओकरा भेल छलैक। भरिसक ओ सत्यसँ दूर आ क्षणिक छलैक।

एक दिन फेरसँ सभ किछु शुरू भ' गेलैक। उपेनक आराधना आ याचना मे कोनो परिवर्तन नहि आयल छलैक, मुदा ओकर स्वरूप आ अर्थ सुगियाकेँ नव आ भिन्न बुझयलैक। ओकर सर्वग्रासी प्रभाव सुगियाकेँ अभिभूत आ द्रवित क' देलकैक।

एहि बेर ओहि घटनाक पुनरावृत्ति ओकरा भयंकर नहि लगलैक। खाली अपना पर खौँझ आ दया भेलैक। ओकरा आभास भेलैक जे आब ई निरन्तर चलैत रहतैक आ नैतिक दुविधाक बादो ओ अपन कमजोरी सँ मुक्त नहि भ' सकतैक।

कहियो काल उपेनक दुराग्रह पर ओकरा प्रचंड तामस उठैत छलैक। ओ उपेनक उपेक्षा आ तिरस्कार करैक। उपेन आहत आ पीड़ित होइत छलैक। ओकरा अपन विवशता आ आत्महीनता पर ग्लानि आ क्रोध होइक। ओकरा लगैक जे ओ नीच आ पतित भ' गेल छैक। ओ कतेको बेर सोचने होयत जे आब ओकरासँ कोनो सम्बन्ध नहि रखतैक। मुदा सुगियासँ दूर होइते ओकरा सभ चीज उसट्ठ-उदास लगैक।

ओ निरीह आ अपाहिज जकाँ बेर-बेर सुगियाक आश्रय तकैत रहैक। ओकर कोठलीक खिड़की लग राति-राति भरि ठाढ़ रहि जाइक। ओसारापर पड़ल इजोरियाकेँ मलिन होइत देखैत रहैक। समर्पण आ उत्सर्गक एहि सीमापर सुगियाक सभ टा दृढ़ता आ बन्हन टूटि जाइत छलैक। ओ ततेक उद्विग्न भ' जाइत छलैक जे ओकरा होइक जे ओ बिहाड़िक वेग जकाँ दौड़िक' ओकरा लग पहुँचि जाय। ओकरा पाँजमे समेटि लेअय आ कहियो फराक नहि होब' दैक। एकर विरुद्ध कोनो विचार आ शक्ति ओकर आत्माकेँ कष्ट दैत छलैक।

कखनो काल ओकरा लगैक जे ओ कोनो पाप नहि क' रहलि छैक। ओकर सम्पूर्ण आत्मा आ मन-प्राण खाली उपेनकें चाहैत छलैक। एहिमे दोसरक कनियों दखल नहि छैक। ओकर पतियोक नहि। मुदा ई विचार आ तर्क स्थायी नहि रहैत छलैक। अगिले क्षण ओ भ्रम आ संदेहमे पड़ि जाइत छलैक। ओकरा लगलैक जे आब ओ कहियो एहि दुविधासँ मुक्त नहि भ' सकतैक आ अनिवार्य रूपसँ पीड़ा भोगैत रहतैक।

(१९७७)

एक टा प्रयोग ओहिना

आइ तीन दिनसँ पानिक टिपटिपयनाइ बन्द नहि भेल छैक। एहि छोटका शहरमे अलकतरोक सड़क पर थाल छैक। लोक सड़कपर निकलैत छैक तँ चप्पलक पछिलका भागसँ फिच्च। आ सभ टा पाछूक वस्त्र खराब भ' जाइत छैक। थाल-खीचक कारणें कतहु निकलबाक मोन नहि करैत छैक। सड़क पर तानल असंख्य छाताक कमानी सभसँ आँखि आ कनपट्टी छिलयबाक डर होइत रहैत छैक।

ओ दू घंटासँ होटलमे बैसल पानिक ई टिपटिपयनाइ देखि रहल अछि। अथवा कोनो निर्णय लेबासँ असमर्थ दू बेर चाह पिबि चुकल अछि। संभव जे अगिला चाहक बाद ओ समस्या सभपर नव ढंगसँ सोचि सकत। परंच दुनूमे एको नहि भेलैक। ने तँ ओ उचित ध्यान द' क' बाहरे देखि सकल आ ने कोनो निर्णय ओकरा हाथ अयलैक। अपन एहि तरहक असफलताकें अस्वीकार करबाक लेल ओ सोचलक जे बिना चाह पीने होटलमे बैसैयो तँ नहि दितैक।

पानिक टिपटिपयनाइ होटलक भीड़ बढ़ा रहल छैक। असंख्य शब्दक टकरायबसँ एकटा विचित्र आ असहनीय तनाव ओकरा माथकें अनुभव होइत छैक। जेना शब्द सभ ओकर समूचा देहमे गड़ि रहल हो। ओ तीव्र गतिएँ पड़ा जयबाक लेल तैयार होइत अछि। मुदा ओहि मानसिक निर्णयकें ओ कार्यरूप नहि द' पबैत अछि। ओकर देह बड्ड शिथिल भ' गेल छैक।

ओ अपनाकें स्वस्थ अनुभव करबाक प्रयास करैत अछि। कनेक डाँड़ सोझ क' लैत अछि, झुकलाहा मूड़ी ऊपर उठा लैत अछि, दूर धरि पसरल टाङकें व्यवस्थित करैत अछि आ कानसँ टकराइत प्रत्येक शब्दकें सुनबाक लेल सतर्क भ' जाइत अछि।

शिक्षा, राजनीति, कृषि, बेकारी आ बहुत रास सामयिक प्रसंगक चर्चाक स्वर ओकर कानसँ निरन्तर टकराइत रहैत छैक। बेकारीक चर्चाकेँ ओ अतिरिक्त मनःस्थितिसँ ग्रहण करैत अछि। कातमे बैसल ओहि व्यक्तिकेँ ओ बड्ड करुण दृष्टिसँ देखैत अछि। देखैत रहि जाइत अछि बड़ी काल धरि ओकर रुग्ण देह आ ओकरा बुझाइत छैक जे ओकर प्रत्येक विचार नियतिसँ संपृक्त भ' गेल छैक। फेर ओकर आँखिमे ओहि व्यक्तिक चेहरा डूबि जाइत छैक। ओकर सतर्कता आब समाप्त भ' गेल छैक। सभटा शब्द आ वाक्य ओकरा लग पहुँचि अर्थहीन भ' जाइत छैक।

ओ आइ धरि नियतिकेँ अस्वीकार करैत आयल अछि। परंच ओकरा बुझाइत छैक जे ओकरा सन लोक नियतिकेँ अस्वीकार नहि क' सकैत अछि। ओ एखन कतबो कोशिश करत, तैयो भोरसँ खाली पेटकेँ नहि भरि सकत। केओ एको टा पाइ नहि देतैक। कोनो होटलक मालिक ओकरा फोकटमे नहि खोआ सकतैक। नियतिकेँ स्वीकार करबा लेल ओकरा एहने सभ स्थिति बाध्य करैत छैक। ओकर शिक्षा आ लोक जे ओकरा कोनो 'सभिर्स' नहि दैत छैक, से बाध्य करैत छैक। राति-दिन सड़कपर आवारा घूमब आ लोकक तरबा चाटब ओकरा नियतिवादी बना दैत छैक। ओकर मुँहसँ एक टा केहन दन गारि निकलैत-निकलैत रहि जाइत छैक।

आब ओकरा ई सभ नहि सोचबाक चाही—ओ सोचैत अछि। ओकर माथ गर्म आ भारी बुझाइत छैक। लोकक असम्बद्ध गप्प सभ ओकर कानमे फेर पैस' लगैत छैक।

ओ जेबीमे बीस टा पाइ होयब अनुभव करैत अछि। ओकरा अपन मित्रकेँ धन्यवाद देबाक इच्छा भेलैक जे अबैत काल आठ आना पाइ द' देने रहैक। नहि तँ ओ एखन एक टा आर चाहक आशा नहि क' सकैत छल। मित्रक पाइ देबाक ढंगपर ओहि काल ओकरा तामस भेल छलैक मुदा ओहि प्रसंगकेँ मोन पाड़ि अपन मोनकेँ ओ तीत नहि बनब' चाहैत छल। ओ सोचलक जे ओकरा अपन मित्रक प्रति इमानदार रहबाक चाही।

तखने ओकर दिमाग असाधारण रूपेँ काज कर' लगलैक। ओ जेना बिसरि गेल छल जे ओकर सासुर एहि ठाम छैक। एखन जँ मोन पड़लैक तँ ओकरा अपने

पर हँसी लागि गेलैक। ओ निर्णय कयलक जे आइ सासुर जायत आ दोसर निर्णय ई जे किछु पाइ सेहो मङ्गतैक। 'हमरा व्यवस्थित होयबामे ओकरो बेटीक भविष्य तँ छैक। नहि देताह टाका तँ राखथु, कहिया धरि रखैत छथि अपना बेटीकेँ'— ओ सोचलक। ओकरा एक तरहक आन्तरिक खुशी भेलैक। ओ तुरन्त एक टा चाहक 'आर्डर' द' देलकैक।

चाह आब' धरि ओ जयबाक लेल कोनो उपयुक्त समयपर विचार करैत रहल। जाड़ मास छोड़ि दोसर कोनो मौसममे ओ दिनमे सासुर नहि जाइत अछि। ओकरा ससुरक पूरा परिवार एके टा कोठलीमे रहैत छैक। ताहि लेल जाड़मे ओ दिनोमे छतपर बैसल रहैत अछि। दोसर कोनो 'मौसम' मे ओ छतपर नहि बैसि सकैत अछि। ओकरा कनेक घुटन अनुभव भेलैक जे एहि बरिसातमे एखन पूरा परिवार एके टा कोठलीमे औनाइत होयतैक। ओ जल्दी-जल्दी चाहक दू-तीन घोँट पीबि गेल। चाह पीलाक बाद ओ अन्हार होयबाक प्रतीक्षा कर' लागल।

पानिक टिपटिपयनाइ बन्द भ' गेल छलैक आ आब लोकसभ बत्ती जरबैत छल। ओ किछु काल आर बैसल रहल। जखन भूखसँ आँत जर' लगलैक तँ तेजीसँ उठि गेल जेना कोनो विचार तुरत दिमागमे चौँकि गेल होइक। थाल-खीच लोकक जुत्ता-चप्पलमे लागि कम भ' गेल छलैक। भीड़ अपेक्षाकृत बढ़ि गेल छलैक। कतहु-कतहु लोककेँ धकलैत ओ बढ़ैत गेल। आब ओकर सासुरक दूरी मात्र तीन मकानक छलैक। ओ ठाढ़ भ' क' सोच' लागल जे केओ भेटि जयतैक तँ ओ कोठलीमे प्रवेश पयबासँ पूर्वक परेशानीसँ बचैत। मुदा बड़ी काल धरि केओ नहि भेटलैक। ओ एक बेर अपन वस्त्र दिस तकलक। वस्त्रक हालति देखि ओकर मोन कोनादन भ' गेलैक। ओकरा हिचकिचाहटिक अनुभव भेलैक। आब जँ ओ घूमिक' चल जायत तँ रेलवे प्लाटफार्मपर राति भरि भूखसँ छटपटाय पड़तैक— ओ सोचलक। नहि, ओ नहि घूमि सकतैक। पयर पटकि क' ओ निश्चय कयलक।

कोठली तेसर मंजिलपर छलैक आ तकर बाद ऊपर छत। बरिसातकेँ छोड़ि मेहमानक बिछाओन छतपर लगैक। मुदा एखन तँ टिपिर टिपिर। एक बेर ओ सोचलक जे सारिकेँ हाक पाड़ितय ? ओकरा तामस उठि रहल छलैक जे आन समय ओकर ससुरक फौज केहन दौड़ बरहा करैत रहैत छैक, परंच एखन बेरपर कोना निपत्ता भ' गेलैक अछि। एक-आध बेर ओ जोरसँ खखासु कयलक। केओ नहि बहरयलैक। ओकर मुँहसँ एक टा गारि निकलि गेलैक।

सासु आ पत्नीक अस्तव्यस्तताकें सोचि ओ सीढ़ी चढ़' लागल ।

ओकरा देखिक' छोटका सार चिचिअयलैक । ओ तावत ठाढ़ भ' गेल छल । कोठलीमे हड़बिरड़ो मचि गेलैक । सभ अपन वस्त्र आ कोठलीक अस्तव्यस्त चीजकें व्यवस्थित करब शुरू क' देने छल । ओकर सार यंत्रवत् ओकरा समक्ष ठाढ़ भ' गेल छलैक आ निर्निमेष ओकरे देखि रहल छलैक । जेना किछु काल पहिने ओ नहि, केओ आन चिचिआयल छल होयतैक । ओकरा सारक छोट-छोट आँखिमे एक टा स्पष्ट अभिव्यक्ति छलैक 'हे औ, आबो तँ निकालू ?' ओ उदास आँखिसँ अपन सारकें देखि रहल छल । ओकर मोन छटपटाय लगलैक । ओहि अभिव्यक्तिक उत्तर ओ नहि द' सकत !

आब ओ कत' बैसत, सैह सोचि रहल छल । ओकर सारि किछु क्षण पश्चात् कोठली होइत ओकरा बरण्डापर ल गेलैक । जगहक बड़ु तंगी छलैक, आ कुर्सी-टेबुलपर बैसबामे विशेष प्रयास जरूरी छलैक । ओहि विशेष प्रयासमे ओकरा ठेहुनेमे चोट लागि गेलैक । चोटक बाह्य संकेतकें भीतरे-भीतर पीबि जयबामे ओकरा बड़ मानसिक पीड़ा भेलैक । ओ इस्स धरि नहि कयलक ।

ओकरा अयला सन्ताँ वातावरणमे एक टा विचित्र परिवर्तन आबि गेलैक । तीन सारि, दू सार आ पत्नी बला ओकर सासुक ई परिवार किछु समयक लेल जेना शीशामे बन्द भ' गेलैक । आबाजो होइक तँ ओकर स्पष्टता कोठलिए धरि सीमित रहैक ।

कोठलीसँ बरण्डापर अबैत काल ओ कनेक आँखि टेढ़ क' देखने छल । तरकारी बनि गेल छलैक । ताबापर रोटी राखल छलैक । ओकर मुँहमे पानि भरि गेलैक । ओ थूकसँ कण्ठ भिजओलक ।

खाक' ओ फेर कुर्सीपर चल आयल छल । ओकर जेठका सार ट्यूशन पढ़िक' घूरि आयल छलैक । अपन बात ऊँच रखबाक लेल ओकर सासु कैक बेर कहि गेलैक जे आब शीघ्रे दू कोठलीक मकान लेल जयतैक । सत्ते, एहि एक कोठलीमे बड़ किचकिच होइत छैक । आ फेर छोटकी सभक बियाहो तँ····। ओकरा मोन पड़लैक जे ओकर बियाह गामेसँ भेल छलैक ।

'दुलहाकें पुछही, एखन धरि कोनो काज नहि भेटलनि ?' कोनो कोनसँ आयल ई प्रश्न सहसा ओकर सभ सुखद प्रसंगकें अप्रिय बना दैत छैक । ओ कोनो

उत्तर देबाक स्थितिमे नहि अछि । ओकर चुप्पी देखि सासु बड़बड़ाइत छैक । ओ कैक बेर कड़गर जबाब सोचिक' रहि जाइत अछि । सभ टा खायल-पीयल व्यर्थ बुझाइत छैक ।

तखने कतहुसँ एक टा दार्शनिक भाव ओकरा मोनमे अबैत छैक । ओ सोचैत अछि जे जकरा नोकरी भेटलो छैक, सैह कोन उल्लेखनीय काज करैत अछि ? दिन भरिक थाकल-ठोहिआयल आदमी खयबा-पीबाक बाद चितङ ! एहिसँ बेसी बहुत कम गोटे सोचि पबैत अछि, तखन जीवनक कोन अर्थ रहि जाइत छैक ? ओकरा आश्चर्य होइत छैक जे जीवनक एहन व्यर्थता लोक किएक नहि बूझि पबैत अछि ? ओ किछु सोचबाक प्रयास करैत अछि । एक टा सूत्र ओकर हाथ अबैत छैक । फेर पत्नी मोन पड़ैत छैक । ओ एक प्रकारक प्रसन्नताक अनुभव करैत अछि । ओकरा कनेक रोमांस होइत छैक ई सोचि जे ओ पत्नीक सम्पर्कसँ अधिक वंचित रहल अछि आ आइ··! की इएह कारण मूलमे छैक ?

मेघ छँटि गेल छलैक । मौसम एकदम साफ । कोठलीक बत्ती मिझा देल गेल छलैक । केबाड़ आ खिड़कीसँ टकराइत इजोत कोठलीमे बड़ु कम अबैत छलैक । ओहि हल्लुक इजोतमे साधारण रूपें सभ किछु देखल जा सकैत छल ।

ओकर अगले-बगल पूरा परिवार पसरल छलैक । ठीक बाँहि भरिक दूरीपर ओकर पत्नी सूतलि छलैक । सार ओकर पश्चिम कनेक दूरपर । ओ अपन बाँहि पसारलक । पत्नीक आङुरसँ ओकर आङुर टकरयलैक । ओ आँखि खोलि पूरा कोठलीकें देखलक । ओकरा बुझयलैक जे एक-आध गोटे जगले छैक । ओ फेर आँखि मुनि सभक निन्नक प्रतीक्षा कर' लगलैक । शीघ्रे ओकरा भेलैक जे ओकर आँखिमे निन्नक एक टा धुंध पसरि रहल छैक आ ओ सुति जयतैक । ओ एही डरसँ आँखि खोलि लैत अछि । फेर बुझयलैक जे एक-दू गोटे जगले छैक । साधारणे ढंगसँ ओ आँखि मुनि लेलक, निन्न नहि आबि जाइक । ओ पुनः अपन पत्नीक आङुरकें छूलक । पत्नी ओहिना पड़लि रहलैक । कनेको ऊकस-पाकस नहि । ओ सोचलक जे सभ सूति जयतैक तखन ओ पत्नीसँ गप्प शुरू करत ।

फेर ओ जेना अगम-अथाह गहिरैमे डूब' लगलैक । आ डूबैत चल गेलैक । छोटको सारिक चिचिआयबसँ ओकर निन्न टूटि गेलैक । एक टा संतोषक भाव अयलैक जे आब ओ नहि सूतत । ओ देखलकैक जे ओकर हाथ पूर्ववत् पत्नीक आङुरकें छूबि रहल छैक । पत्नी एखन धरि प्रतिकारमे हाथ नहि हटओने छैक ।

ओकर सासु जागि रहलि छलैक। ओ अपन हाथ हँटा लेलक। बड़ी काल धरि ओ छोँड़ी कनैत रहलैक। ओकरा किछु तामसक अनुभव भेलैक। पूरा राति जागब व्यर्थ··। ओकर आँखिमे फेर जेना एक टा धुंध पसर' लगलैक। ओ खूब जोरसँ आँखि मिड़लक। फेर हाथ बढ़ओलक। पत्नीकेँ हल्लुक त कतिसँ अपना दिस खिचलकैक। पत्नी जोरसँ ओकर हाथकेँ दाबि देलकैक आ करोट फेरिक' सूति रहलैक। ओ किछु नहि बूझि सकल। ओकर सार करोट फेरलकैक।

ओकर समूचा देहमे एक टा अजीव टूटन आ कसमसाहटि पसर' लगलैक। आँखिपर असहनीय दबाब पड़' लगलैक। ओकरा लगलैक जे आब ने तँ ओकरा निन्न अओतैक आ ने ओ निश्चिन्ततासँ पड़ले रहि सकैत अछि। ओ करौट फेरैत रहल।

किछु कालक बाद ओकरा भेलैक जे आब भोर भ' जयतैक। ओकर आँखि अपने मुना गेलैक। मुदा निन्न नहि अयलैक। पत्नी, सासु, सार, सारि, टाका, नौकरी आ निन्नकेँ छुबैत एक टा विचित्र तनाव ओकर दिमागकेँ छपने रहलैक। चाह पीयब ओकरा बड्ड जरूरी सन बुझयलैक। मुदा चाह? एहि ठाम तँ चाहक कोनो बर्तनो नहि छैक! आ ने ओकरा संगमे एको टा पाइये छैक! पत्नी एकसरमे भेटितैक तँ ओकरोसँ माङि लितय, मुदा? ओकरा बुझयलैक जे एक टा सामूहिक षड़यंत्र चारूकातसँ ओकरा घेरि लेने छैक, जाहिमे पड़िक' ओ भूखे-पियासेँ, एक कप चाहोक लेल तरसिक' मरि जयतैक।

जलखैक बेरमे ओकर सासु हितोपदेशक मोटरी ल' क' बैसि गेलैक। कह' लगलैक—'एना बौअयने कहिया धरि काज चलतनि? कमसँ कम एकरो तँ देखियौक! जवान भेलैक, आब एहि ठाम कोना बैसलि रहतैक! लोक कतेक तरहक गप्प करैत छैक।' एहि बीचमे कतेको आदर्श उदाहरण ओ द' देलकैक। ओकर मोन एकदम उखड़ि गेलैक। चाहक बिना ओकर स्नायु सभ टूटल जाइत छलैक आ ताहिपर ई हितोपदेश! ओकरा मोन भेलैक जे ओ एक लात मारिक' भागि जाय।

दिन भरिक दम घोटँबला वातावरणकेँ सोचि ओकर मोन करिया गेलैक। ओ निश्चय कयलक जे आब ओ एको क्षणक लेल एहि ठाम नहि रहत।

ओ तीर जकाँ कोठलीसँ निकलि गेलैक। सासु ओहिना चिचिआइते रहलैक। ओ ककरो किछु नहि सुनतैक। पाइक लेल ओ अपना दिमागकेँ तनावक अखाढ़ा नहि बन' देतैक।

सड़कपर खूब तेजीसँ बढ़ि रहल अछि। पाइपर ओ लात मारि देने छैक एखन फेर। अपन चरित्रक एहि अदम्य शक्तिक अनुभव ओकरा एहिसँ पूर्व नहि भेल छलैक। तकर बाद ओ जतेक सोचैत गेल, ओकरा बुझयलैक जे ओकरा भीतर कोनो विद्रोहक प्रचण्ड बिहाड़ि उठि रहल छैक। ओ विद्रोह करतैक—एक टा भयानक विद्रोह। खाहे ओकर अस्तित्व खत्म भ' जाउक।

एक टा पैंघ होटलमे ओ ढुकि जाइत अछि। नोकरबाकेँ खूब जोरसँ हाक पाड़ैत छैक। तेज आवाजमे चाह आन' कहैत छैक। चाह आबि गेलैक तँ ओ स्थिरसँ पीब' लगैत अछि। ओकरा भेलैक जे भीतर कतहुसँ ओ कमजोर भ' रहल अछि। एक बेर ओ अपन ताकत समेटलक। जल्दीसँ चाह खतम कयलक आ तेजीसँ बिदा भ' गेल। जखन नोकरबा पाइ लेल टोकलकैक, तखन ओकर कलेजा धक्क-धक्क करैत छलैक। तखने ओ फेर निश्चय कयलक जे अपन पहिल प्रयोगमे ओकरा अवश्य सफल होयबाक चाही। अधिकारपूर्ण आवाजमे ओ काल्हि पाइ देबाक गप्प कहलकैक। नोकर आ मालिक दुनू कछु सहमि गेलैक। असाधारण प्रभाव पड़ैत देखि ओ डेग झाड़िक' बढ़ि गेलैक आ एक बेर ठहक्का द'क' हँसि पड़ल। लोकसभ गहिकी नजरिएँ ताक' लगलैक तँ ओकर इच्छा फेर हसबाक भेलैक। ओ दोसर बेर नहि हँसि सकल।

भरि दिनक थकनी ओकर आँखिमे पैसि गेल छैक। आँखि गड़िया रहल छैक। साँझक ई ठंढी एहि गड़िआयबकेँ नहि ठीक क' सकतैक। ओकर देह सुन्न भ' गेल छैक। एक टा शिथिलता ओकरा निष्प्राण बना देने छैक। लाख कोशिशक उपरान्तो ओ विद्रोहक प्रयोग दोसर बेर नहि क' सकल। तखनो नहि, जखन ओकर इच्छा मन्दिरमे चढ़ाओल पाइ ल'क' भागि जयबाक भेल छलैक। एक टा तीव्र आक्रोश ओकर दिमागी सन्तुलनकेँ बिगाड़ि देने छलैक। ओकरा मोन भेलैक जे मुरतीक मुँहपर एक चोत गोबर साटि दैक। धर्मक नामपर नष्ट पाइमे ओकर भूखक हिस्सा छैक। मुदा ओ ओहि हिस्साकेँ बाँटि नहि सकत। ओ विवश अछि। ओ एहिना रेलवे-प्लेटफार्म, पार्क आ होटलक ढहनाइत बेंचसभपर सटल रहि जायत। ओ फेर डेग बढ़यबाक प्रयास करैत अछि। मुदा ओकरा बुझाइत छैक - आब ओ एको डेग आगाँ नहि बढ़ि सकैत अछि। ओ बेंचपर बैसि जाइत अछि।

स्टेशन खाली भ' गेल छैक—एकदम सुनसान। चारि-पाँच घंटा धरि कोनो गाड़ी नहि छैक। उत्तर दिस किछु भिखमंगा सभ सूतल छैक। सोझाँमे दक्षिण भर

सिगनलक ललका बत्ती जरि रहल छैक। ओ सोचैत अछि जे भूखल पेटमे लोलक सेक्स मरि जाइत छैक। दिन खन छौंड़ीसभकेँ देखि ओकरा विचित्र अनुभूति सभ भेल छलैक।

आब किछु नछि सोचत, से निर्णय ओ करैत अछि। ओकरामे कोनो टा शक्ति आब शेष नहि छैक। कोनो शब्दो नहि सूनत। नीकसँ नीक शब्द अप्रिय लगलैक। बेंचपर बैसबामे ओकरा असुविधा होइत छैक। ओ किछु काल छटपटाइत अछि। फेर बेंचकेँ एक मुक्का मारि उठि जाइत अछि आ डेग बढ़बैत अछि। मुदा कत' ?

(१९७०)

एक टा सम्बन्धक अन्त

खेल शुरू होयबासँ पहिने प्रदीप एकटा शर्त राखि देने रहैक। एक गेममे जे हारितैक, तकरा कबाब खोआब' पड़ितैक। रागिनी दत्ता आ विपुल मानि गेल छलैक। मुदा हम बड़ निरीह भावसँ चुपचाप सुनि लेने छलिऐक। इच्छा भेल छल जे मना क' दिऐक। पाइ नहि छल। रहबो करैत तँ भरिसक हम तैयार नहि होइतिऐक। कबाबमे आठ टाका लगितैक। अपन हिस्सा चारियो टाका देब हमरा लेल कष्टकर होइत।

मुदा हम मना नहि क' सकल छलिऐक। निरीह आ चुप बैसल रहि गेल छलहुँ। फेर शर्तक व्यावहारिकताक प्रति संदेह भेल रहय—भ' सकैत छैक, ओ सभ शर्तकेँ एकदम गंभीरतासँ नहि ल' रहल हो। मुदा हमर अवचेतन अपेक्षा क' रहल छल जे हारि जयबाक स्थितिमे दत्ता आ विपुलकेँ शर्तकेँ गंभीरतासँ लेबाक चाही।

एहन सोचब हमर क्षणिक भ्रम छल जे हारि गेलापर प्रदीप एकसरे सभटा पाइ द' देतैक। ई बात फरिछा देल गेल छलैक जे पाइ हमरा दुनूकेँ देब' पड़तैक।

प्रदीप हमर प्रशंसा दत्ता आ विपुलसँ क' रहल छलैक जे हम बड़ नीक खेलाइत छी। हमरा अपन क्षमतापर ओतेक विश्वास नहि छल जतेक प्रदीपक क्षमतापर। हमर प्रशंसासँ दत्ता आ विपुलकेँ हारि जयबाक आशंका भेल छलैक आ तेँ ओ दुनू पहिल बेर एकटा फास्ट बोर्ड खेलयबाक प्रस्ताव कयने छल।

फास्ट बोर्डमे हारियो गेलापर दत्ता आ विपुल हमर कमजोर क्षमता-प्रदर्शनकेँ देखि शर्तकेँ अंतिम रूपसँ स्वीकार क' लेने छल।

अगिला दू बोर्ड हम सभ हारि गेल रही। फास्ट बोर्डमे ओतेक नीक खेलाय बला प्रदीपकेँ पता नहि की भ' गेल छलैक। दत्ता आ विपुल सत्रह प्वांइट बना लेने छलैक। बहुत सतर्कतासँ लक्ष्य करितो हमरा बुते दू-तीन टा गोटीसँ फाजिल नहि

पिलैत छल । प्रदीपक प्रशंसाक तुलनामे हमर एहन स्थिति बड़ लज्जाजनक आ हास्यास्पद छल जकर अनुभव स्पष्टतः ओहो तीनू क' रहल छल ।

प्रदीपक चेहरा थाकल सन बुझाइत रहैक । वा भ' सकैत छैक अपन विचलित मनःस्थितिक कारणें हमरा ओहन लागल होअय । दत्ता आ विपुलमे उत्साह आ स्फूर्ति आबि गेल रहैक ।

अगिला बोर्ड हमसभ जीति गेल रही । प्रदीप हमरा तीनूक नीक शॉटपर टिप्पणी देब शुरू क' देलक – ब्यूटीफुल' 'एक्सेलेंट' ।

एक परतार तीन बोर्ड हारैत रहलासँ दत्ता उत्तेजित भ' गेलि छलि । हमरा जल्दी विश्वास नहि भेल छल जखन ओ कहने छलि जे ओकर दुनू कनपट्टी गरम भ' गेल छैक ।

चारिम बोर्ड हमहीं सभ जीति लेने रहिऐक आ ओ दुनू अन्ततः हारि गेल रहय ।

कॉमन रूममे बड़ी कालसँ भीड़ आ हल्ला बढ़ि गेल छलैक, जकरा हम सभ खेल खतम होयबाक बादे लक्ष्य कयने रही ।

कॉमन रूमसँ निकललापर दत्ता अपन इच्छा व्यक्त कयलक जे कबाबक बाद चाह हमरा सभकें पियाब' पड़तैक । हमरा लग पाइ रहैत तँ हम ओकर इच्छाकें मानि लितिऐक । प्रदीपो लग दसे टा पाइ रहैक । दत्ता आ विपुलसँ हमर परिचय खेल शुरू होयबासँ पहिने प्रदीप करओने छल । एकर संभावना कम छलैक जे ओ दुनू हमर हाथ छुच्छ रहबाक स्थितिपर विश्वास क' लेअय तँ एक क्षणक लेल हमरा भेल छल जे कतहु ओ दुनू हमरा सोम ने बूझि लेने होअय !

प्रदीप बड़ प्रसन्न छल आ ओहि दुनूकें चुप देखिक' बाजल जे सत्रह बड़ लक्की नम्बर होइत छैक आ ओ सभ जीति सकैत छल । दत्ता आ विपुलक फेर चुप रहि जयबासँ प्रदीपकें भेलैक जे ओ सभ नहि बूझि सकल जे सत्रह कोना लक्की नम्बर होइत छैक । ओ फरिछौलक जे सत्रह भ' गेलाक बाद कम्पीटीशन बड़ टफ भ' जाइत छैक। छओसँ बेसी प्वाइंट होयबाक संभावना नहि रहैत छैक । एहि प्रकारें सत्रह छओ तैस आ तैस-छओ उनतीस भ' जाइत छैक ।

प्रदीप अपन अचूक लौंग-शौट आ रिबाउण्ड देया कहैत रहलैक । ओ दुनू प्रदीपक गप्पमे रुचि नहि ल' क' इजोरिया आ कुहेस देखि रहल छल ।

कबाबक बाद चाह दिया ओ सभ तेना अनठा देने रहैक जेना ओकरासभकें

मोने ने होइक जे कखनो ओ सभ चाहक गप्प कयने रहय । ओतेक तीव्र नहि, मुदा चाह पीबाक इच्छा हमरा छल । हम उमेद कयने छलहुँ जे ओ सभ थोड़ेक कालमे चाह ऑफर करत ।

साढ़े नओ बाजि गेल रहैक । बाहर निकललापर किछु काल आर खेलयबाक विचार भेलै । कॉमन रूम धरि दत्ता मद्धिम स्वरमे एकटा उदास गीत गुनगुनाइत रहलि । ओ हमर बड़ प्रिय गीत छल । बोर्ड खेलाइत काल कतेक बेर ने हम ओकर धुनिकें दोहरबैत रहलहुँ । हमरा देखिक' दत्तो फेरसँ ओहि धुनिकें स्वर देने छलि ।

कॉमन रूममे हमरा सभक अतिरिक्त दू टा विद्यार्थी आर छल । ओ सभ 'चाइनीज चेकर' खेलाइत रहय । ओहिठाम ततेक शांति छलैक जे बीच-बीचमे हमसभ बिसरि जाइत रही जे ओ दूनू एखनो खेला रहल अछि । घूमिक' ओहिसभकें देखलापर हल्लुक आश्चर्य होइत छल ।

हम आ दीप सभ बेर हारल जाइत रही । प्रदीप कैक बेर ने कहलक जे ओकर मूड नहि छैक । दत्ता आ विपुल एखनो खेलाय चाहैत छल ।

एगारह बजे हमसभ 'गुड नाइट' क संग फराक भ' गेल रही । चाहक गप्प ओहिना सैंतल रहि गेल छलैक ।

ओकर तेसर दिन बोर्डपर हमरा दत्ता आ विपुलसँ फेर भेंट भेल छल । हमरा सभक बीच एकटा छोटसन हलो' भेल रहय । ओहि दिन हमरा संगे प्रदीपक बदला केओ आन खेला रहल छल, जकरा हम चेहरासँ जनैत छलिऐक ।

थोड़ेक कालमे दत्ता हमरासँ पूछलक जे हम चाह पीब' चाहब कि नहि । हम अनिश्चयात्मक ढगसँ स्वीकृति द' देने रहिऐक । फेर ओ हमर खेलक संगीसँ पुछने छलि आ अन्तमे विपुलसँ ।

"की चाह !"—विपुल घुनघुनाइत बाजल छल । ओकर हाव-भाव तेहन छलैक जे दत्ता चुप भ' गेलि छलि । विपुल दत्ताक ब्यॉय-फ्रेंड छलैक । ब्वॉय-फ्रेंडक हिसाबें ओकर व्यवहार हमरा विचित्र आ अनभोआर लागल छल। विपुलक अन्यमनस्कता देखि क' हमसभ आर एक बोर्डसँ फाजिल नहि खेला सकल छलहुँ ।

ओहि दुनूक चल गेलाक बाद हमरा किछु नहि फुराएल छल जे हम की करी । कनेक कालधरि हम भाव-शून्य ठाढ़ रहि गेल छलहुँ । फेर धीरे-धीरे बाहर निकलि आयल रही । बाहर साँय-साँय करैत सर्द हवा बहि रहल छलैक ।

(१९७६)

एक दैनिक घर

दू बजैत छैक। बस ओकरा उतारि पूर्णियाँ बिदा भ' गेल छैक। नेशनल हाइ-वेबला ढलानपर ओ आस्ते-आस्ते उतर' लगैत अछि। सहरसाक लेल तीन बीसमे गाड़ी छैक। मुदा, चारिसँ पहिने कहियो ने खुजैत छैक। तेँ ओ अपनामे कनियोँ हड़बड़ी अनुभव नहि करैत अछि।

मानसी स्टेशनक दछिनबरिया भागमे भीड़ नहि छैक। बुक-स्टॉल लग दू टा छौंड़ा गप्प क' रहल छक। एकटाकेँ ओ चिन्हैत अछि। छौंड़ासँ ओकरा ज्ञात होइत छैक जे बहुत धमकी आ दबाबक बाद आइ दुपहरियाकेँ चौबीस घंटामे एकटा ट्रेन सहरसा गेल छैक। परिचित छौंड़ाकेँ कतहु नहि जयबाक छैक। ओकर संगिये सहरसा जयतैक। ओ अखबार कीनैत अछि। अपरिचित छौंड़ा मथदुक्खीसँ त्र ण पयबा ले कतहु बैसिक' चाह पीबाक प्रस्ताव करैत छैक। स्टेशनसँ दच्छिन एकटा हलुआइसँ ओकरा परिचय छैक। अपरिचित छौंड़ाकेँ ओ संग-संग चल' कहैत छैक।

हलुआइक नाम महादेव थिकैक। ओकर दोकान एक कातमे अछि। बड़ कम मोसाफिर अबैत छैक। घरो नरभरायल छैक। महादेवकेँ हाक पाड़ि ओ सभ बैसैत अछि। महादेव अबैत छैक तँ किछु काल ट्रेनक गप्प चलैत छैक। अन्तमे महादेव टिप्पणी दैत छैक जे आब भारतमे क्रान्ति होयतैक। ओ कहैत छैक जे क्रान्ति एहन आसान बात नहि छैक। एहि पर ओ दुनू चुप भ' जाइत अछि। क्रान्तिक लेल मानसिकता आ नेतृत्व चाही जकर एखन अभाव छैक। दुनू चुप भ' जाइत अछि ओ सोच' लगैत अछि जे महादेव ई बात कतहु सुनि लेने होयत। ओकर भाषामे कनेको आवेश नहि छैक जाहिसँ क्रान्तिक प्रति ओकर लगावक पता चलैत हो।

ओ जाँघपर अखबार पसारि लैत अछि। सभसँ पहिने रेलवे लोको कर्मचारीक हड़तालबला समाचार पढ़' लगैत अछि। देशभरिमे काल्हिसँ साठि

ट्रेन रद्द कयल गेलैक आ अढ़ाइ सय लोकके गिरफ्तार कयल गेलैक। ई सुनि महादेवकेँ आश्चर्य होछत छक। किछु कर्मचारीक अपहरणपर ओ हँस' लगैत अछि। उत्तर रेलवे हड़तालसँ अत्यधिक प्रभावित भेल छैक। ओ तीनू गम्भीर मौन धारण क' लैत अछि

अपरिचित छौंड़ाकेँ भरिसक बेचैनी भ' रहल छैक। ओ सभ चाह पीब' दोसर दोकान चल अबैत अछि। हाइ- वे पर भीड़ बढ़ल जा रहल छैक। स्टेशनसँ हाइ-वे धरि लोकक धारी लागल छैक। लोक बस अयबाक दिशामे आँखि पथने अछि। दूर-दूर धरि बस कतहु नजरि नहि अबैत छैक।

महादेव ओहि छौंड़ासँ परिचय पूछैत छैक। ओकर नाम सत्यनारायण थिकैक। आइ० एस - सी०मे एहि बेर परीक्षा छोड़ि देने छैक। गिरिडीहसँ आबि रहल अछि। सुपौलमे एकटा दोकान छैक। महादेव ओकर जाति पूछैत छैक। सत्य-नारायणो महादेवक मादे किछु काल पहिने एहने प्रश्न कयने छलैक।

एकटा मालगाड़ी आउटर सिग्नल दिस जा रहल छैक। सत्यनारायणकेँ भेलैक जे ओ गाड़ी सहरसाक लेल खुजि गेल छैक। ओकरो लगैत छैक जे गाड़ी साँचे खुलि गेल छैक। सत्यनारायण तेना एहि विषयकेँ उठबैत छैक आ अफसोच कर' लगैत छैक जे ओ अपराध-भावसँ ग्रस्त भ' जाइत अछि। सत्यनारायण अनेक बेर गाड़ी छूटि जयबाक आशंका व्यक्त करैत अगुताइ देखौने छलैक। ओकरा कोनो उपयुक्त शब्द नहि भेटैत छैक जाहिसँ ओ सत्यनारायणक भितरिया आक्रोश आ क्षोभ मेटा सकय। तीन-चारि मिनट धरि ओ दुनू एकटक गाड़ीकेँ देखैत रहैत अछि। ओकरा बुझाइत छैक जे गाड़ी ठमकि गेल छैक। ओ सभ स्टेसन दिस लपकत अछि। सत्यनारायणकेँ होइत छैक जे जँ साँचे जाइत होयतक तँ दौड़ियो क' पकड़ि लेब। मुदा, ओ गाड़ी शंटिगमे छैक। सत्यनारायणक उत्तेजना शिथिल पड़ि जाइत छैक।

स्टेशनक उत्तर आ ब्रांच लाइनक प्लेटफार्मपर बेस भीड़ छक। लोक जत'-तत' पड़ल वा बैसल अछि। किछु लोक एम्हर-ओम्हर क' रहल अछि।

शंटिग बला मालगाड़ी घूरि क' स्टेशन आबि गेल छैक। ओ ड्राइवरसँ पूछैत अछि, गाड़ी जयतैक कि नहि? ड्राइवर बहुत तेजीसँ नकारि दैत छैक।

खाइत-खाइत साढ़े नओ बाजि जाइत छैक। महादेव बिल बनबैत छैक। 'तीस पाइये पराठा ?'—सत्यनारायणक मुह आश्चर्यसँ खुजल रहि जाइत छैक।

गाड़ीक सम्बन्धमे पूर्ण अनिश्चय छैक। ड्राइवर खाइ ले डेरा चल गेल छैक। ओ घुरत, तखने गाड़ी जयतैक।

गाड़ीक डिब्बा सभमे लोक अपन-अपन सीट हथिया लेने छैक। आब गाड़ी जखन खुजौक। सत्यनारायणकेँ अपन संगी भेटि जाइत छैक।

सत्यनारायणक चल गेलापर ओ दू-तीन टा डिब्बाक निरीक्षण करैत अछि। एकटा मनोनुकूल बर्थपर लुंगी बिछबैत अछि। बेगक सिरमा बना लैत अछि आ जूतापर पयर राखि पड़ि रहैत अछि।

डिब्बामे स्टेशनबला मरकरीक हल्लुक इजोत आबि रहल छैक। लोक खाली बर्थपर आबि-आबि पड़ि रहैत छैक। ओ कखनो आँखि मुनैत अछि, कखनो खोलि दैत अछि। बड़ी काल धरि निन्न नहि अबैत छैक। बर्थ लेया-ऊँचा छैक। सूत'मे असुविधा होइत छैक।

डिब्बामे किछु जनीजाति पैसि गेल छैक। ओ सभ अपनामे बिचारैत छैक जे ककरो उठ' कही। ओ ओकरा सभकेँ देखैत अछि। ओकरा सोझाँ एकटा लड़की ठाढ़ि छैक।

'दोसर डिब्बामे जो ने तोरा सभ'—ओ बिगड़ैत छैक। महिलाक आकृति भयाक्रान्त भ' जाइत छैक। ओ पाछाँ हट' लगैत अछि।

'ई गाड़ी कखन जयतैक सहरसा ?'—नीचासँ कोनो माउग पुछैत छैक। 'अरे, एखन थोड़े जयतैक। भोरमे।' ओ क्षुब्ध भ' क' कहैत छैक।

ओ सभ कतहु चल जाइत छैक।

महिलाक भयाक्रान्त आकृति ओकर दिमागमे नचैत रहैत छैक। फेर आँखि लागि जाइत छैक। राति भरि केओ ने केओ डिब्बामे चढ़ैत-उतरैत रहैत छैक। ओकर निन्न उचटि जाइत छैक। अकचका क' टाङसँ जूता टेबैत अछि। जूता छैहे। ओना सभ बेर उठैत ओकरा होइत छैक जे जूता नापता भ' गेल छैक। अगल-बगलबला बर्थपर सूतल लोककेँ एक नजरि देखि ओ फेर सूति रहैत अछि।

छओ बजे निन्न टूटैत छैक। हड़बड़ा क' बाहर देखैत अछि। ई तँ मानसीये थिकैक। हड़बड़ी खतम भ' जाइत छैक। बाहर पानि झिसिया रहल छैक। लोक सभ बेरा-बेरी शौचालयक उपयोग क' रहल अछि। किछु गोटे गाड़ीसँ उतरि स्टेशन दिस जा रहल छैक। राति कखनो डिब्बा सभकेँ स्टेशनसँ दूर ठेलि देने छलैक।

ओ बड़ी काल धरि सिकरेट पीबैत, पानिक झीसी देखैत रहैत अछि। फेर उतरि प्लेटफार्मपर चल अबैत अछि।

किछु लोक इंजिनपर चढ़ि गेल छैक आ ड्राइवरकेँ चल' लेल बाध्य क' रहल छैक। स्टेशन मास्टरो भीड़सँ घेरायल छैक। गाड़ी पठयबाक लेल फेर ट्रंक क' रहल लैक।

नओ बजे धरि पनपियाइ क' क' ओ तैयार भ' जाइत अछि। बेग गाड़ीमे राखि प्लेटफार्मपर टहल' लगैत अछि। भीड़ ड्राइवर आ गार्डक पाछू-पाछू भेल घुरैत छैक। किछु आदमी बेसी उत्तेजित लगैत छैक, ओ सभ विचार प्रकट करैत छैक जे ड्राइवरकेँ पीट। बिना पिटने नहि जयतौक।

फेर ओ देखैत अछि जे ड्राइवर आ गार्ड कैंटीन दिस आबि रहल छैक। स्टेशन मास्टर जलखै ले पाँच टाका देने छैक। जलखै ल' क' ड्राइवर इंजिन दिस चल जाइत छैक। किछुए लोक प्लेटफार्मपर टहलैत रहि जाइत अछि। बाँकी सभ डिब्बामे बैसि गेल छैक।

प्लेटफार्म परक लोक कखनो इंजिन आ कखनो गार्डक डिब्बा दिस देखैत अछि। अतिकाल भ' जाइत छैक। लोकक उत्साह चिन्तामे बदलल जाइत छैक।

रेलवे-अधिकारी सिपाही सभसँ गप्प करैत छैक। दूटा बन्दूकधारी सिपाही इंजिनक दुनू बगल चढ़ि जाइत छैक। बाँकी सिपाही डिब्बेमे रहि गेल छैक।

गार्ड बड़ी कालधरि झंडी देखबैत रहैत छैक। लोककेँ होइत छैक आब.... आब गाड़ी खुजलैक। पता नहि ड्राइवर संकेत देखि रहल छैक कि नहि।

अन्ततः गाड़ी ससर' लगैत छैक। आउटर सिग्नल लग रुकि जाइत छैक। रुकल रहैत छैक। 'की भेलैक ?'—पुछैत लोक एकाएकी उतर लगैत' अछि। रौद कड़ा छैक। डिब्बामे बैसल लोक घमा गेल अछि। लोक चिन्तित अछि। आबो खुजतै कि नहि..... ?

(१९७३)

कल्पित मृत्यु

ई सोचि कनेक खुशी भेल जे हम ससुरक बक्सा खोलि सकैत छी।

'आन केओ एना खोलि सकितैक!'– ई कहैत हमरा फेर ओहने खुशी भेल अछि।

हमर पत्नी मुस्की दैत छथि।

हम बक्साक गट्टा पकड़ने पत्नी दिस ताकि रहल छी। हुनकर उत्सुकता देखि बक्सा खोलि दैत छिऐक। हम दूनू गोटे सभ सामानकें एके बेर देखि लेबाक व्यग्रतासँ ग्रस्त भ' जाइत छी।

हमर हाथ पुरान 'एम्पुल'क डिब्बापर पड़ैत अछि। ओहिमे टुटलहा आ बीझ लागल कुंजी सभ छैक। सभसँ नीचा तीन-चारि टा पनामा ब्लेड। पत्नीक हाथक टिनही डिब्बा झनझनाइत छैक। दूनू पयरसँ दाबि हमर पत्नी ओकरा खोलबाक प्रयास करैत छथि। हमर नजरि टाका गनैत पत्नीक आङुरपर जमि जाइत अछि। ओ मद्धिम स्वरें टाका गनैत छथि तें गिनती पुछबाक आवश्यकता नहि होइत अछि। डिब्बाकें हाथमे ल'क' हम अठन्नी चौअन्नी देख' लगैत छिऐक। ओ अन्तिम संख्या धरि पहुँचि हमरा दिस गर्वसँ देखैत छथि।

बाहर ससुर भारी आवाजमे कनिको टाका लेबा ले हाक पाड़ैत छथिन। पत्नी पड़ा जाइत छथि। हम शीघ्रतासँ सभ चीजकें व्यवस्थित करैत ताला लगा दैत छिऐक।

टाका देबाक काल ससुर एकटा निश्चित अवधिपर टाका घुरा देबाक निर्देश

करैत छथिन। ससुर फेर कतहु चल जाइत छथि। ससुरक निर्देशपर हमरा एकाएक दुःख भ' जाइत अछि।

दोसर कोठलीमे हमर पत्नी ठाढ़ि छथि जेना हमरे प्रतीक्षामे होथि।

'एखन अहाँ अपन बाबूक निर्देश सुनलिअनि?'—हम बहुत खिन्न भ' कहैत छिअनि।

पत्नीक चेहरापर किछु नहि बुझबाक भाव उगैत छैक।

'हमरापर जे खर्च होइत छैक से के घुरओतनि?'– प्रश्नकें दोहरबैत हम उदासभ' जाइत छी।

'घुरा देबनि' – पत्नी हँसीमे कहैत छथि। ओ नीक जकाँ जनैत छथि जे हम कहियो टाका घुरयबामे समर्थ नहि भ' सकब। मुदा ओ ई बात किएक जनैत छथि? हमरा तामस उठि जाइत अछि।

बड़ी कालक चुप्पीक बाद ओ कहैत छथि—'सैह, हमरे सम्बन्धक कारण ने बाबू अहाँपर एतेक खरच करैत छथि? केओ आन रहितैक तखन?'

ई एकदम साधारण बात थिकैक। हमहूँ जनैत छी। एहन प्रश्नकें कोनो उत्तरो नहि चाही। हम कनेक हँसिक' चुप्प भ' जाइत छी।

'सत्ते, जँ हम एखने मरि जाइ तँ अहाँसँ बाबूकें कोनो सम्बन्ध रहतैक?'— पुछैत छथि।

हमहूँ एखन एहनें गप्प सोचि रहल छलहुँ।

'हमरा तुरन्ते मोटा-चोटा बान्हि घसक' पड़त।'—हमरा एक तरहक प्रसन्नताक अनुभव होइत अछि।

'हम मरि जायब तँ बाबू अहाँकें टोकबो नहि करताह। जँ देखताह जे ओत' आबि रहल छी तँ रस्ता काटि लेताह।'

'से तँ नहि। तखन हूँ, देखताह तँ कुशल-क्षेम पूछि बिदा भ' जयताह।'

हमर एहि जबाबक खण्डन करबा लेल ओ एकटा अर्थहीन उदाहरण दैत

छथि—'हमारासँ बियाहक ठीकठाक भेलापर बाबू राघोपुरबलाकेँ कतेक मानैत रहथिन ! कपड़ा-लत्ता, टाका-पैसा—आब कोनो सम्बन्ध छनि ?'

फेर चुप्प रहलाक बाद अकस्मात् प्रसंग बदलिक' पुछैत छथि—'केहन छैक राघोपुरबला, अहाँ देखने छिऐक ?'

'हँ, देखने छिऐक। गोर तहतह। खूब सुन्दर। डेढ़-दू सय बीघा जमीन छैक। एक सालसँ प्रोफेसरी क' रहल छैक।'—कहैत नीक लागल। हम ओकरा कहियो नहि देखने छलिऐक।

'बियाह तँ जरूरे भ' गेल होयतैक'—ओ पुछैत छथि।

--'नहि भेल छैक।'

—'ठीके ?'

--'तँ की हम झूठ बाजि रहल छी ?'

—'नहि, से हम कहाँ कहैत छी ?'—ओ उत्साहहीन भ' जाइत छथि। चेहरा मलीन भ' जाइत छनि।

—'अहाँक बियाह राघोपुरबलासँ होइत तँ नीक रहैत। हमरासँ बेकारे भ' गेल।'

ओ चुप्प आ उदास भ' गेलीह अछि।

हम फेर पुछैत छिअनि—'की, नीक होइत ने ?'

—'नीक तँ अबस्से होइतैक। सभ चीज ले जे किचकिच होइत छैक, से तँ नहि होइतैक। बापकेँ ओहि समय चारि पाँच हजार खरच करैत मोह लगलनि। नीक घर-वर नहि ताकल भेलनि। तेहने आब बुझथु।'

—'आबो करब ?'

--'आब थोड़े होयतैक ?

पत्नीक बेडौल बदसूरत चेहरा हमरा आँखिमे गड़' लगैत अछि। बुझाइत अछि, हमर पत्नीक कारीस्याह रातिबाला चेहरा ओहिना तमतमा रहल

होइक—'हमरा अहाँपर बड़ तामस उठैत अछि। जरूरतिपर भागि जायब आ कुकूर जकाँ हकम' लागब।'

--'की हमरा दूनू गोटेकेँ सम्बन्ध नहि तोड़ि लेबाक चाही ?'

'आब जे छैक, से ठीके छैक'—ओ कहैत अछि।

—'अच्छा, हम जँ अहाँकेँ छोड़ि दी तँ की होयतैक ?'

—'होयतैक की, किछु नहि।'

—'किएक ? अहाँ चुमाओन क' लेब ?'

—'हमरा सभमे चुमाओन नहि होइत छैक।'

—'से किएक ?'

—'समाजक लोक नहि कर' दैत छैक।'

—'तखन हमरा दुनू गोटेक छुटैक कोनो उपाय नहि छैक ?'

—'एकटा उपाय छैक, जँ हम मरि जाइ।'

—'अहाँ मरि जयबैक, तँ भ' सकैछ, अहाँक बाबू फेर बियाह कर' कहथिन।'

—'की अहाँ हमरा बहीनसँ क' लेबैक बियाह ?'

ओ फेर अपने समाधान प्रस्तुत करैत छथि--'मनक कोन बिसबास ? क्षण-क्षण बदलैत रहैत छैक। मुदा माय नहि तैयार होयतीह। सोचतीह, एक बेटीक हाल तँ एहन भेल, फेर दोसरो।'

—'वास्तवमे की होइत छैक, एक बेर मरि क' देखियौक ने।'

—'जँ मरिये जयबैक तँ देख ले कोना अयबैक ?'

—'से तँ ठीके। मुदा नहियेँ अयबैक तँ की होयतैक ?'

(१९७०)

काठक बनल लोक

आइ रामीकें ब्लौक जयबाक छलै। घरखसीक पचास टाका भेटति-ए। ब्लौक एक कोसपर छलै। भोरे उठि क' बेलोबाली अल्हुआ उसीनि देलकै। गरम अल्हुआ रामीकें नीक लगलै। किछु बेसिये खा लेलकै। आन दिन ठरल रहलापर गरा लागि जाइत छलैक। खयलाक बाद रामी सिबननके संग कयलकै। ओकरो टाका भेट' बला छलै।

थोड़े कालमे बुचनियो जारनि बीछय चल गेलैक। फेकनि आ बदरिया सभसँ पहिने खा लेने छलैक। बेलोबाली ओहि दुनूकें माँटि लाब' कहलकै। ओसारा ढहि गेल छलै। ओ दुनू तीन-चारि छिट्टा माँटि लाबि क' खेलाइ ले' कोम्हरो बहटि गेलैक। बेलोबाली दुपहर धरि ओसारा लेबैमे रहलै। फेर नहयलै। खायले बैसलै तँ नोन नहि छलै, टिनही छिपलीकें ठामहि दौरिसँ झाँपि पिपरा-वालीसँ नोन पैंच लाब' गेलै। ओ बैसाक' बड़ी काल धरि बलवाबालीक गप्प लाधि देलकै। भूखसँ पेटमे धाह दिय' लगलै तँ बेलोबालीसँ नहि रहल गेलै — 'थारीपरसँ ऊठिक' आयल छलिऐक। नोन सठि गेल छै। थोड़े दिय', काल्हि द' देब।'

पिपराबाली मौनीमे एक तम्मा नोन आ बाटीमे सजमनिक तीमन देलकै। आङन अबैत काल बेलोबाली बदरियाकें चारि-पाँच हाक देलकै। छौड़ा निपत्ता भ' गेल छलै। बेलोबालीक मोनमे ठेहकलै जे कतहु आइ फेर ने बौकू ओत' पहुँचि गेल होइ। छौड़ा खराब टेवा पकड़ि लेने छलै। जखन कखनो बौकू खाइ बैसय, बदरिया पहुँचिये जाइ। मोखा लग ठाढ़ भेल एक परतार थारी दिस तकैत रहै। बौकूक आङनबालीक कतबो दमसौलापर मोखा नहि छोड़ैक। सात-आठ

दिन धरि बौकू अलग बासनमे ओकरा भात-दालि दैत रहलै। बौकूकें अचरज लगैक जे छौड़ा कोना बूझि जाइत छै आब ओ खाइ ले बैसत। बौकूक पीढ़ीपर बैसिते छौंड़ा पहुँचि जाइ। ओहिसँ पहिने कतहु देखाइयो नहि पड़ैक।

बादमे बदरियाकें देखिते बौकूक आङनबाली केबाड़ बन्न क' दैत छलैक। केबाड़ बन्न क' लेलापर कहियो तँ ओ चल जाइत छलैक, कहियो ठाढ़े रहि जाइक।

"इह, केहन ठेक्कर छै!" बौकूक आङनवाली कहै।

बदरिया कहुना नहि टरैक। ओहिना ठाढ़ भेल बिना पल मारने ओकरा दिस तकैत रहैक।

एक दिन बौकूक आङनबाली कोम्हरो चल गेल छलैक। दुआरोपर केओ नहि छलैक। केबाड़ खाली भिड़ायल छलैक। बदरिया ठेलिक' भीतर पैसि गेलैक। केबाड़कें फेर ओहिना भिड़ा देलकै। डेकची-लोहिया नीचेमे चुल्हि लग राखल छलैक। बदरिया ढक्कन हटा-हटा सभकें देखलकै। तीमने टा बचल छलैक। ओ लोहियेमे खायब शुरू क' देलकै। दू कर तीमन रहल होयतैक, तखने बौकूक आङनबाली आबि गेलै। ओकरा संगे आयलि स्त्री ओसारेपर ठाढ़ि छलै कि ओ चिचिअयलै — "गे माय, अइ छोड़ाकें देखिऔ। चोर जकां घर ढूकि क' तीमन खयने जाइत छैक।"

बदरियाक हाथ ठमकि गेलैक। मुदा, ओ बैसले रहलैक आ ओकरा दिस टकटकी लगओने रहलैक।

'हे रौ, नीक लोकक इएह लच्छन छिऐ? माय-बाप इएह सिखौलकौ-ऐ? खाय ले नहि दैत छौक रे?'—दोसर स्त्री कहैत रहलै।

बदरिया निर्द्वन्द्व भावें घरसँ निकलि गेलै। ओहि दिन माय ओकरा मारनौ छलै, मुदा ओकरा आँखिसँ एको ठोप नोर नहि खसलै। ओकर आश्चर्यजनक साहस आ गंभीरता देखिक' बेलोबालीकें होइ जे लोक साँचे कहैत छैक—छौड़ा काठक बनल छै। बदरियाक देहमे कोनो दम नहि छलैक। आँखि धँसि गेल छलैक आ छातीक सभटा हाड़ जागि गेल छलैक। छौड़ा कोनो ठाम बैसबो करैक तँ लगैक जेना कतेक ने सुस्ती दाबि देने होइक। उलहन सुनिक' बेलोबाली

बदरियाकें मारैत-मारैत ओध-बाध तँ उठा दैक मुदा लगले ओकर कोंढ़ फाट' लगैक—छौड़ाकें कतहु किछु भ' ने जाइक !

बदरिया साइते-संजोग हँसैत होयतैक। जतनसँ खेलाइतो नहि छलैक। अपनो तूरक धीयापूतासँ कम्मे बजैक आ अलगेसँ ओहि सभक क्रिया-कलापकें देखैत रहैक। कोनो चीजकें तेना भ' क' देखैक जेना किछु मोन पाड़ैत हो।

बेर झुकि गेल छलै। बुचनी आङनमे जारनि पटकि ओसारापर बैसि गेलै। माथ अगिया गेल छलै। ओसाराक लेबलाहा भाग दिस तकैत ओ सुस्ताइत रहलै। ओकर उसट्ठ देह नेहारैत बेलोबाली बजलै—'बगय केहन लागै छै। केशके जट्टा बना लेने छै ! कैक बेर कहलिऐ जे चिक्कनि माँटिसँ माथ मीड़ि ले; के सुनै छै।"

'तेलक नामे तँ बज्जर खसल हौ।' मायक बात बुचनीकें बरदास्त नहि भेलै।

—'गेलौ-ए बाप टाका लाब'। भोरे आनि देतौ। गोर-हाथ धोक' कने खा ले।'

बुचनीक तामस मिझा गेलैक आ मोन पड़लै जे ओकरा बड़ी कालसँ भूख लागल छैक। ओ पाँच-छओ टा अल्हुआ खा क' गोर दसेक फेकनी आ बदरिया लेल छोड़ि देलकै। माथमे ढील कटैत छलैक। मायकें हेरि देबा ले कहलकै। बेलो-बाली जटाकें सोझराबैत ढील हेरैत रहलै।

गोसाँइ डूमि गेलैक। बेलोबाली बुचनीकें साँझ देब' कहलकै। रामी नहि आयल छलै। बेलोबाली सोचलकै जे टाका नहि भेट' बाला रहितै तँ एखन धरि चल आयल रहितैक। बेलोबाली भरोसे छलै जे टाका भेटतै तँ ओम्हरेसँ सिदहा बेसाहने औतै।

थोड़बे कालमे बुचनी, फेकनी आ बदरिया तीनू सूति गेलैक पटियाक एक कोनपर बैसलि बेलोबाली रामीक आस-पेरा देखैत रहलै।। डिबिया मकमकायल जाइत छलै। पहिने ओकरा भेलैक जे तेल सठि गेल होयतै, मुदा बतिहरमे खेंठी बैसि गेल छलै।

पिपरा बाली हाक पाड़ि क' पुछलकै जे रामी अयलै कि नहि। ओहो सिबननक खातिर जागले छलै। बुझाइत छलै जेना गाममे सभ सूति गेल होइ। आङन अन्हार कुप्प छलै। केबाड़क बाटे घरमे ठरल कनकन हवा अबैत छलैक। ओ खुजलाहा पट्टा सटा देलकै।

एके बेर जोरसँ कुकूर लगलैक आ घोपि देलापर चुप भ' गेलैक। सिबननन आ रामी आबि गेल छलैक।

'बाप रे, एतेक राति क' टाका भेटलै ! धीयापूता भूखले सूति रहलै'—रामीक अबिते बेलोबाली बजलै।

—'धुत्त तोरी के, ककरोसँ पैंचो लाबि क' नै किछु कर' अबैत रहै ?'

—'हम कियाने गेलिये, एतेक राति क' एतै ! किछु लाबिलकै-ए कि नहि ?'

—'हम बजार देने एलिऐ-अय जे किछु लाबितियै।'

—'तँ आब हम सुतली रातिकें की करिऐ ?'

—"देखौ गय, सिबनथाक दोकान खूजल हेतै। हमरा बड जोर जाड़ भेलए।'

चूल्हि लग धधरा क' क' बेलोबाली दोकान दिस चल गेलै। सिबनथा दोकानेमे सूतैत छलै। ओ बिचारिते रहय जे आब ढड़्ढ़ी बन्न करत ता बेलोबाली पहुँचि गेलै। ओकरा घुरबा धरि रामी गरमा गेल छलै आ देह थिर भ' गेल छलै। बेलोबाली अदहन चढ़ा देलकै। अल्हू काटिक' मसाला पीस' लगलै। बदरिया उठिक' बैसि रहलै आ आँखि मीड़ैत रामीसँ पुछलकै 'अँय हौ बाबू, कखन एलहक ?"

—'बाउ हौ, ऊठि गेलहक। आब' आब' आगि लग आबह। हम तँ अखनियेँ एलियै बेटा।'

'साँझे किएक नहि एलहक ?'—ओकर एहि प्रश्नपर बेलोबाली आ रामीकें लगलैक जेना सभटा दुख-संताप मेटा गेल हो। ओ दूनू दिन भरिमे पहिल बेर मुक्त भ' क' हँसलैक।

(१९७६)

कोनो पतापर

'बौआ, एगो चिट्ठी लिखि दिय। 'बौआ, लिखि दियौ जे अगहन, पूस, माघ तीन मास भ गेलै आ तैसे टा टाका देने गेल छलै। ओतने टाकामे कोना लोक चारि टा धीया-पूता ल' क' खेपतै? समय-साल ततेक खराप छै जे कोइ ककरो चिन्ह'-देख'बला नहि। सभ चीजक दाममे आगि लागल छै। अइठिनक लोक केहन छै से तँ जनिते छिऐ। ककरो कोइ दू पैसा समहारैबला नहि, ने कोइ दू सेर पैचँ-पालट कर'बला। कहू जे हम अइठिन ई चारि टा पेट ल',क' केना रहबै? देह बिमरियाह भेल। बोनियो दुःख क' क' जे दू पैसा लाबबै, सेहो अइठिन भेट'बला नहि। अइ छौँड़ीकेँ तं देखिते छिऐ। छौँड़ा आ एकरामे उठम-बजरी होइते रहैत छै। छौँड़ा अगमलालक अइठिन साँझ-बिहान सिलेठ-पेंसिल ल' क' जाइ छै। सेहो कते खोसामद केलियै जे एकर बाप आबै छै तँ पान-सुपारी खाय ले दू टाका द' देब, तावे देखा-सुना दियौ। ऊ छौड़ाँ पढ़िक' आबै छै तँ कहै छै माय, हम अल्हुआ नहि खेबौ। हमरा भात दे। सोचै छिऐ, छौँड़ाकेँ कहियो-कहियो भात नहि देबै तँ छौड़ाँक दिमाग कमजोर भ' जेतै। पढ़'मे मोन नहि लागतै। कहियो जँ दू-चारि आना बचाक' चाउर-ताउर किनबो केलहुँ तँ चारू टा ओइपर लुधकि जाइ छै।

'लिखि दियौ जे हमरा बुते आब एक्को टाकेँ पोसब पार नहि लागतै। तुरत कोनो उपाय लगाबय, ने तँ सभ टाकेँ ल' जाय। हमरा नहि हेतै तँ कतहु भागि पड़ाक' अपन गुजर काटि लेब। आबो जँ नहि किछु करत तं हम फसरी लगाक' मरि जायब। ई चारि टा बचतै से अपना भागे। हम की करबै, बिलटौ चाहे रहौ। आब हम अकच्छ भ' गेल ही। हमर प्राण अवग्रहमे अछि।'

'बौआ, एकरा भोरे खसा देबै, बिसरबै नहि। कै दिनमे पहुँचतै?'

'बौआ, खसा देलिऐ?'

'बौआ, आइ तँ चल गेल हेतै ने!'

(१९७४)

गजखोर आ मजमुङर

आइ ओकरा सोम-सोम आठ दिन भेल छलैक। बुचनी ओहि सोमकेँ आयलि छलि। बिदागरी कालमे माय ठोह पाड़िक' कनैत छलैक आ कहने रहैक—'बेटी, नीक जकाँ रहिहह, कनिहह नहि। सभकेँ एक दिन एहिना होइत छैक'। तखन ओ बोम पाड़िक' कान' लागलि छलि।

ओकरा अपन सखी-बहिनपा कहने रहैक—'गय बेचनी, तोहर दुल्हा बड्ड अबारा छौक, ओकरा सुधारिहेँ' आ किछु आनो माउगसभ भिन्न-भिन्न प्रकारक भ्रान्त धारणासँ ओकर कान भरि देने रहैक। बाटमे ओ खूब काननि छलि ई सोचि जे ओकर दिन बड़ भारी छैक आ फेर आइयो आँखिसँ दहो-बहो नोर बहैत छलैक।

विचार-क्रमक संग-संग अपन सोहाग-सिनूरक चित्र ओकरा आँखिक सोझाँ उभरैत छलैक 'हमर पति अबारा अछि? नहि-नहि, ई बात झूठ छैक। ओ सच्चरित्र छथि, निर्दोष छथि। काल्हिए खन ओ कोन तरहेँ कहने छलाह—'हमरा तँ अहाँ अब'रे बुझैत होयब, परंच की करू? कोना अहाँकेँ बिसबास देआयब? हमर तँ कप्पारे तेहने अछि। किछुओ करैत छी, लोक नीक नहि कहैत अछि। हमरा केओ नहि बूझि सकल, हमर दुखकेँ देखिक' ककरो हृदय नहि पघिललैक! अहाँक सोझेमे हमरा चोर बना देल गेल। हम तँ टाका नहि बहार कयने रहिऐक, तैयो हमरे ऊपर थोपल गेल। अहूँ सोचैत होयब जे हमहीं टाका बहार कयलिऐक।' बुचनीकेँ फुराइत नहि रहैक जे ओ की कहौक।

बुचनीक ध्यान टुटलैक। ओ खाली एतबे सुनलकैक—'हय एना जे बैसल छहक, से केओ तोहर बापक खबासिनी छहु जे तोरा टाड़मे तेल लगा देतह?' —बुचनीपर जेना बज्रपात भेलैक आ आँखिमे फेर नोर आबि गेलैक। ओकरा तँ सासुरमे कोनो बेसी दिन नहि भेल छलैक आ तैयो अपन जेठ गोतनीक एहन कठोर बचन!

बुचनी निरन्तर आध पहर राति धरि काज करैत रहलि। केओ पुछबो नहि कयलकैक जे खयलह कि नहि ? बिछाओनपर आबिक' धम्म द' खसि पड़लि आ हुचक' लागलि। आँखिसँ निन्न पड़ा गेल छलैक। कोठीपर डिबिया जरैत छलैक।

'हय, केबाड़ खोलह तँ ?'—जेठकी गोतनी रहैक ओ केबाड़ खोलबा हेतु उठलि, परंच केबाड़ खुजलाक संगहि एक टा बिहाड़ि अयलैक जे असहाय बुचनीकें आसमानमे उड़ाक' नीचाँ खसा देलकैक।

'डिबिया किएक जरबैत छहक, ककर मुँह देखैत छहक ? तोरा एके दिनमे एक सेर तेल चाही ? आरे बाप रौ ! जेना बुझैत छैक जे बापे कमाक' भेजैत छैक'-जेठकी गोतनीक स्वर छलैक। बुचनी अविचल, स्तब्ध ठाढ़ि छलि।

बुचनीकें एक-एक क्षण काटब मुस्किल भ' गेल छलैक। जत' एको रत्ती प्रेम आ स्नेहक नाम नहि छैक तत' लोक कोना जीबि सकत ? उपेक्षित, अपमानित आ उलझनपूर्ण जीवनमे लोक कतेक क्षण धरि जीबि सकैत अछि ?

परात भेने बुचनी कतेक प्रकारक आसीरबाद सुनलक आ आनो गोतनी सभक मोन बदलल देखलकैक। जलखै बेरमे सोनकवाली अयलैक आ पुछलकै—'हय, एना दिनोदिन देह किएक बैसल जाइत छह ?'

'सब कहैत छैक जे हम मोटा गेलिऐक आ अहाँ कहैत छिऐक जे देह किएक बैसल जाइत छह ?'—बुचनीक उत्तरमे खौँझ आ व्यंग्य छलैक।

'हम बुझइत छिऐक जे तोरा खाय-पीबमे तकलीफ होइत छह। ओ सभ नीक-निकूत खाइत अछि आ तोरा मड़ुओ रोटी भरि पेट नहि दैत छह। की करबहक, कोनहुना ई समयकें काटह, फेर नीक दिन घुरतैक। एके माथे जाड़ नहि जाइत छैक।'

सोनकबाली बोल-भरोस दैत कहलकैक।

'आ एक टा बात हमरा आर पता लागल। तोहर सभ गोतनी कहैत छह जे एकर चालि-चलन सेहो खराब छैक।'

बुचनी स्तब्ध रहि गेलैक। ओकरा इहो नहि बुझयलैक जे सोनकबाली कखन

चल गेलैक। बुचनीकें सभ जेना अनचिन्हार बुझाइत छलैक। ओ जकरा दिस ताकय, तकरा दिस तकिते रहैक।

तावत जेठकी गोतनीक स्वर फुटलैक—'हय, एना किएक गजखोर जकाँ कयने छहक ?' दोसर गोतनी टिपलकै—'साँइयो छैक मजमुङरे।'

बुचनी चुपचाप बैसलि रहलि। हतवाक्। अवरुद्ध। उफनैत।

(१९६८)

घरदेखिया

झलफल भ' गेल रहै। उपेन सड़केपरसँ हियासलकै' जे कमेटी हौलबला बरन्डापर के सभ थिकै। पहिने ओकरा भेलै जे मुखिया-तुखिया होयतै। लग अयलै तँ ओ सभ नहि रहै। पाँच टा अनठीया छलै। ओकरा सभक लेल पटिया आ उपेनक जाजिम देल गेल रहै। पानि कयल लोटा कातमे पड़ल छलै। बिमलाक घरदेखिया तँ ने थिकै ? ओ सोचलकै। दिन पछिले रबिक ठेकल रहै' मुदा, फेर समाद अयलै जे छुतका भ' गेलै। समाद आयल छलै तँ ओकरा शंको भेल छलै जे कतौ टारै-तारैबला बात त' नहि छै ? मुदा ई विचार ओकरा अपने अनसोहाँत लगलै। कका एसकरे लड़िका देखि आयल छलै। घर-बर पसिन क' क' दिन ठेकि देलकै। लड़िका कलकत्तामे डरेबरी करै' छै। आ छोट माय दोकान करै' छै। डेढ़ बिगहा खेत छै। पित्ती सामिले छै। लड़िका एन-मेन बौके बेटा-सन छै। समता रंग, ओहने बान्ह-काठ आ ओहने बाढ़ि। ई सभ कका घुरल छलै तँ कहने रहै। ओकरो बेजाय नहि बुझयलै। दू सालसँ कथा पक्का नहि भ' रहल छलै। कको मटिऔने-सन छलै। घरो छूछ रहै।

ओ रघुनीकेँ एक कात बजाक' पुछलकै—''के सभ छिऐ ?''

—''ओएह सभ छिऐ। बिमलापर आयल छै।''—रघुनी कहलकै।

—''कखन एलै ?''

—''कनी काल होइ छै।''

—''तूँ अपने बथनापर किएक ने बिछना देलहक ?''

—''एह, हमहूँ तँ बजारसँ अबिते छी। अङ्नो नै गेलिऐ।''

अङ्ना एके छैक मुदा दुआरपरक घर ने ककेक छै' ने उपेनेक। घरदेखिया कमेटी घरमे रहय, ई उपेनकेँ नीक नहि बुझयलै। ककाकेँ पुछलकै—''रघुनियेँ दरबजापर बैसकी किऐक नहि देलहक ?''

—''हँ हँ, ओही ठिन देबै बैसकी। हे इएह कने पाहुनो सभ डोलडाल जाइ छथिन, त''—कका कहलकै।

उपेन लालटेम लेस' चल गेलै। लालटेम लेसि क' कमेटीपर अयलै। घर-देखिया सभ लोटा ल' क' बिदा भ' गेल छलै। झपसू बिछान समटैत रहै। ओ पुछलकै—''मर, झपसू भाइ कोन'सँ एलै ?''

—''आयल तँ छलिऐ मेझमाने सबहक संगे। कनी चलि गेलिऐ ममाक भेँट कर'।''—झपसू उतारा देलकै।

''झपसू भाइ, खूब तीमन दूरि करबौलहक।''

—''की करबै बौआ, अपन सक छै ? छुतका भ' गेलै त'...।''

ओ सभ चीज ल' क' रघुनीक दुआरिपर अयलै। भुइयाँमे खूब मोटगर क' लार गदिया देलकै। ताहि परसँ पटिया आ जाजिम बिछा देलकै। लालटेम ओलती-वला बत्तीमे टाङि देलकै।

''हे रौ झपसू बौआ, कनी ओइ अंडी गाछ लगसँ दूटा गोरहन्नी ल' आन। हम ताबे एक डोल पानि आनि क' राखि दै छिऐ।''—कका कहलकै।

उपेन खढ़-पात बीछि क' कात करैत रहलै।

रघुनियो दलानक बत्ती आ बन्हन सभ सड़ि गेल छलै। टाटकेँ माटि खा गेल छलै। तीनियेँ दिससँ टाट छलै। मोखीबाला टाट नहि छलै। टाट निच्चेँ धँसल जाइत रहै से सौंसे घर निफाह-सन बुझाइत रहै। खढ़ कहियासँ ने पड़ल छलै। बाँसक झंझट नहि रहितै तँ रघुनी अपनेसँ छाड़ि लेने रहितै। चैतसँ पहिने कोनो तरहेँ छाड़' पड़तै। नहि तँ बरखा आ बिहाड़िमे घरमे रहल नहि जयतै।

रघुनी अङ्नासँ निकललै। उपेन सिरहौनी द' कहलकै। तीन टा छलैक। आर दूटाक बेगरता छलै।

"सिरहौनी तँ छै एकटा मुदा चिक्कट मैल छै।"—रघुनी बजैत अङ्ना चल गेलै। "एँह बापरे ! ई तँ ठीके तते मैल छह जे दै बला नहि छ"—उपेन अलगेसँ कहलकै।

—"की हेतै, नहि छै' तँ की करबहक। जाजिम तरमे राखि दहक।"

"चाह-ताह के इंतजाम नहि हेतह ?"—रघुनी पुछलकै।

—"दिन खन लाबलकै रहय एक पौवा दूध। आब हेतै तब ने। ओना हेबो करतै तँ एके कप जोकरक।"

—"ओहीमे भ' जेतै। देखहक गय।"

उपेन चाहक सरंजाम ओरिऔलकै। चूल्हिपर किछु चढ़ल छलै। बिमला बैसलि आँच दैत रहै।

"की चढ़ौने छिही ?"—उपेन पुछलकै।

'दालि छिऐ।"—बिमला बजलै।

—"हेँट केने खरापो हेतौ ?"

—"की बनेबहक से ? चाह ? बना ने ल' होइ छ'।"

बिमला दालि उतारि उतरबरिया घर चल गेलै।

बिमलाकेँ एहि साल सतरहम लागि गेलै। देखलासँ तेहन कहाँ लगै छै ? मुँह-कान सुखायल छै। एहि अगहनीमे धनकटनी करैत रहलै। दू कोस बान्हक ओहि पारसँ नित्तह मथ-बोझाइ। कहियो लार, कहियो खढ़, कहियो चिलमिली। ओकरा मोन नहि छै बिमलाकेँ कहियो हँसैत देखने छलै। बाजितो कम्मे छै। कोनो काज पड़ल तखने वा टोकलेपर।

चाह भ' गेल छलै। उपेन बिमलाकेँ हाक देलकै। ओ चुपचाप चौकठि लग आबिक' ठाढ़ भ' गेलै।

"दालि चढ़ा दही।"—कहि उपेन दुआरपर चल अयलै।

घरदेखिया सभ घुरल नहि छलै। रघुनी, झपसू आ कका घूरमे आगि द' क' बैसल छलै। उपेन केटलीकेँ घूरसँ सटाक' राखि देलकै जाहिसँ चाह ठँढ़यतै नहि।

डोलमे पानि छलै। घरदेखिया सभ अयलै तँ हाथ-गोर धोलकै। तीन गोटे घूर लग अयलै। उपेन चाह ढारि पहिने ओकरे सभकेँ देलकै। एकटा गिलास उपरसँ अदहा फूटल छलै। उपेनकेँ ओहिमे चाह दैत कने संकोच भेलै। दूध एक्के रती छलै। चाह अलगसँ कारी बुझाइत रहै।

"कथी लै हरान भेलौँ। हम सभ चाह पिबैत छी थोड़े। बजारमे जे रहै-ए से पीबै-ए।"—लड़िकाक पित्ती बजलै।

"हमहूँ सभ पिबै छी थोड़े ! रघुनीये आउर बजार गेल तँ एक टेमकेँ पी लेलक।"—कका कहलकै।

चाहक बाद उपेन तीनूकेँ बीड़ी लगा क' देलकै। बिछौनपर बैसल दूनू जुअनका घरदेखिया दिस बीड़ी बढ़ौलकै तँ ओकरा सभक हाथमे सिकरेट देखलकै।

"आइ कखनी चलल छलिऐ ?"—उपेन पुछलकै।

—"गामसँ तँ चललिऐ काल्हिए। राति झपसू ओत' रहलिऐ। आइ दू बाँस दिन उठल रहै तँ चललिऐ। दू-दू टा धार पार होब' पड़ैत छै !"

—"ओइ दिन तँ हम सभ एहिना खाय-पिबै बेर धरि बैसल रहलिऐ जे अहाँ सभ आब एबै तब एबै। हमरा सभकेँ भेल रहय जे मेला-तेलापर अटकि गेल हेबै। फेर बिहान भेने समाद एलै।"

तकर बाद लड़िकापर गप्प चल' लगलै। लड़िका एखन कलकत्तेमे छै। पढ़ल नहि छै। कोनो टरकपर खलासीक काज करै छै। सैह उपेनोकेँ आतरज लागल रहै जे छबे मासमे लड़िका कोना डरेबरी कर' लगलै ! मुदा, ओ सभ कहलकै जे लड़िका कमाइ धरि खूब छै। उपरियो आमदनी भ' जाइ छै। खा-पी क' एक सय टका बचा लैत छै।

फेर समय-सालपर गप्प होब' लगल। महगी, रौदी आ जाड़। रामचन

अयलै तँ केतारीपर गप्प भेलै जे बड़ उपरदह होइ छै। के हृदि घड़ी ओगरबाहि करैत रहय !

कका उठि क' अङना चल गेलै। कनी कालमे उपेनकेँ हाक देलकै। भानस भ' गेल रहै। कका थारी-लोटाक जुटान क' लेने छलै। चौका देल भ' गेलै तँ उपेन बैठकी देलकै। लोटामे पानि ल' क' बजाब' दुआरपर अयलै। ओ सभ कुर्रा कयलकै। जकरा जुत्ता छलै, डेढ़िएपर खोलि देलकै। जाधरि थारी अयलै, ताधरि ओ सभ घरक चीज-बौसकेँ नेहारैत रहलै। कका, रघुनी आ उपेन आग्रह क' क' परसैत रहलै। खा-पीक' ओ सभ कनी काल हाथ सेदलकै। उपेन सुपारी परसलकै। फेर बीड़ी लगाक' देलकै। ओकरा सभकेँ ओढ़ना नहि छलै। उपेन अङनासँ सीरक आनि क' देलकै तँ एक गोटे बजलै—'कथी ले अनलिऐ। अहाँ सभ की ओढ़बै हम सभ तँ चट्टैरेमे खेपि लितिऐ।"

'छै ओढ़ना। अहाँ सभ लिय' ने।—उपेन कहलकै।

"अइ सीरकसँ काज चलत ने ?"—रघुनी पुछलकै।

—हँ-हँ, उपरसँ कनियो टा किछो रहलासँ भ' गेलै की !"

—"सैह, कियैक तँ ऐ घरमे बड़ सिप्पा मारैत छै।"

—"नहि, से तरमे लारो छै ! नहि हेतै जाड़।"

ओसभ बिछौनपर पड़ि रहलै। झपसू माथ तर एगो पिढ़िया ल' लेलकै। सीरक नमतीमे छबो गोटेकेँ झाँपि लेलकै मुदा टाङ दिससँ घोकड़ी लगब' पड़लै। रघुनी आ उपेन चुपचाप बीड़ी पीबैत रहलै। बाहर ठार खसैत रहै।

"बहुत राति भेलै। आब जाह, तोँहूँ सभ खाह-पिय' ग'।"—झपसू कहलकै।

इजोरिया रहै। उपेन लालटेम उतारि अङना चल अयलै। आङनसँ हरू दैत रहै। चुल्हीक आगि पजहायल नहि छलै। उपेन आगि ताप' लगलै। बुझयलै जेना निसबदा राति भ' गेलै।

काकी तरुआ आ थोड़े दही लेने अयलै। ओकरा बैसल देखि पुछलकै—"खेलियै ?"

"आब खाइ छिऐ।"—ओ कहलकै। फेर पुछलकै—"दही तँ झपसूए लेने आयल छलह ने ?"

"तँ अपना कत' हैतिऐ।"—काकी बजलै। कनीकाल ठाढ़ि रहलै। फेर चल गेलै।

सभ किछु सेरा क' पानि भ' गेल छलै। उपेनकेँ खाइत नीक नहि लगलै। खयलाक बाद दलदली आबि गेलै।

भोरमे कका उपेनकेँ बजाक' तीन-चारि सेर चाउर मङलकै। उपेन कनीकाल धरि चुप रहलै। पहिनो कका कैक बेर ने टका आ जिनिस लेने छलै।

"नहि देबै तँ आर तँ नहि किछु, बेभरम हैब।"—कका बजलै।

"लिह'।"—उपेन कहलकै। फेर पुछलकै—"जलखैमे की देबहक ?"

"हमरा सकरता अछि ओते। एक्के बेर खिया-पियाकेँ बिदा क' देबै।"—कका कहलकै।

उपेन दूधक भाँजमे गेलै मुदा नहि भेटलै। घुरलै तँ घरदेखिया सभ नहि रहै। मेला पर चल गेल रहै। उपेन आ रघुनी सोचने रहै जे चाह-ताह पियाक' लड़िकी देखा देबै। ओ दुनू ककापर कने खौँझयबो कयलै जे मेलापर किएक जाय देलहक। कका झपसूपर खेपि गेलै।

घरदेखिया सभ अयलै तँ ओ सभ झपसूकेँ बजाक' बिचारलकै जे लड़िकी देखा दिऐ। कने उकठाह जरूर लगलै। बिमलाकेँ पिन्हबै-ओढ़बैमे बेसी काल नहि लगलै। अङनेमे एकटा पटिया द' क' ओहि सभकेँ मङौलकै। बीड़ी-सुपारी देलकै। उपेन घरसँ बिमलाकेँ अनलकै। ओकरा पिन्हनामे भौजीक टेरीकोटनक साड़ी छलै। तेल लगौलासँ देह-हाथ चिक्कन लगैत रहै। बिमला हाथ महक बीड़ी-सुपारीबला तस्तरी घरदेखिया सभक आगाँ राखि ठाढ़ि भ' गेलै।

"की नाम छी ?"—एकटा घरदेखिया पुछलकै।

—"बिमला कुमारी।"

—"बाबूक नाम ?"

—"सीरी महतो ।"

—"आइ कोन दिन छिऐ ?"

—"सोम ।"

—"अहाँ कोन मुँहें ठाढ़ि छी ?"

—"दछिन मुँहें ।"

"ठीक छै, जाउ ।"

सभ दुआरपर आबि गेलै ।

"उपेन, मेझमान सभकें नहाब'। देरी नहि कर'।"—कका कहलकै ।

उपेन पानि भरि-भरि देलकै । धोती ओ सभ अपने सँ फलहारलकै खाइत-पिबैत दुपहर भ' गेलै ओहि । सभकें लड़िकी पसिन छलै । कहलकै—"लड़िका कलकत्तासँ हालेमे गाम आयल छलै । एखन तुरते समाद पठाक' मङौनाइ खर्चाक घर भ' जेतै । फेर एक्के मासक बाद बियाहोमे आब' पड़तै । तें लगनसँ दस दिन पहिने बजाक' समाद पठा देब, जिनका देख'के हैत, देखि लेब ।"

ओकरो सभके इएह ठीक बुझयलै । रघुनी जोर देलकै जे लड़िकाक अयला पर एक-दू गोटे देखि औतै ।

"बेस कोनो हरज ने।"—लड़काक पित्ती रघुनीकें कहलकै ।

ओ सभ कपड़ा लत्ता समेटि बिदा हेबा ले' ठाढ़ भेलै तँ उपेन बीड़ी-सुपारी परसलकै । सड़क धरि अरियातने अयलै । कको छलै ।

"अपने सभक विचार हेतै तँ एबै फेर देखै ले।"—लड़िकाक पित्ती ठाढ़ होइत कहलकै ।

"सुनू समधि, बीस बेर एनाइ-गेनाइमे किएक पैसा दूरि करब । एक्के बेर दिन ठेकिक' पठा देबै । लड़िकाक जे शोभा-सुन्दर होइ छै से हमसभ करब ।"—कका कहलकै ।

ओ सभ पच्छिम माथे बिदा भ' गेलै । कका आ उपेन घुरि अयलै । रघुनी अङना चल गेल छलै । दु आरपर केओ नहि छलै । उपेन बैसल रहलै । ककाकें बैसल नहि गेलै तँ पड़ि रहलै । उपेन कनी काल लतमिरदन कयल जाजिम देखैत रहलै । फेर बीड़ी पिबैत सोचैत रहलै जे कका कोन-कोन भाँजे टकाक जोगाड़ करतै । ककाकें भरिसक आँखि लागि गेल छलै ।

(१९७४)

चेहरापर जमैत कुहेस

ओ बेसी काल मुस्किया देल करैत छलि। हम कहियो निश्चित नहि भ' पओलहुँ जे ओकर मुस्कुरयबाक कारण लाज होइत छलैक वा आर किछु। ओकर वस्त्र अस्तव्यस्त रहैक तखनो, आ नहि रहैक तखनो ओकर मुस्कुरायब चालू रहैक। कोनो काजसँ ओ दरबज्जापर आबय आ नजरि नीचाँ कयने घुरि जाइक। मुदा एहि बीच जखन कखनो ओकर चेहरा कोनाह होइक, ओकर मुस्कुरायब देखल जा सकैत छल। ओकर मुस्कुराहटि हमर निर्णयक बाहर होइत छल।

शुरूमे बहुत दिन धरि हम ओकर नाम नहि जानि सकलहुँ। हम ककरोसँ सोझ प्रश्न क' ओकर नाम नहि पूछि सकैत छलहुँ। लोक एकर कँक टा अर्थ लगा सकैत छल। हम एहन समय सतर्क रहैत छलहुँ जखन केओ ओकर नाम ध' क' हाक पाड़बला होइक। मुदा इहो एक टा संयोगे छलैक जे हम कैक दिन धरि ओकर नाम नहि जानि सकलहुँ। नहि तँ देहातमे साधारण परिचय तँ किछुए मिनटमे भ' जाइत छैक।

ओहि दिनमे धनकटनी खूब चलैत छलैक। लोक साँझ धरि खेतसँ घूरय। आठ-नओ बजे राति धरि घूर लग बैसल रहय आ हमर पछिला जिनगीक मादे कँक तरहक प्रश्न करय। कँक दिन धरि नामे-पता कहैत-कहैत हम थाकि गेल छलहुँ। बादमे सभ केओ सुविधाक लेल हमर काजक अनुसार हमरा मास्टर कह' लागल छल।

भोर साँझ धीया-पूताकेँ पढ़यबाक अतिरिक्त हमरा कोनो काज नहि रहैत छल। दिन भरि कि तँ बीड़ी धुकैत रही कि खाली-खाली सन सामने देखैत रही। बादमे सामने देखबो बन्न भ' गेलैक। धानक बोझ जमा भ'क' ऊँच भ' गेल छलैक।

कहियो-कहियो कोनो किताब भेटि जाय तँ उनटबैत-पुनटबैत रही। बाँकी समय ओहि कन्यापर सोचैत रही। मिनटे भरिमे अपनाकेँ ओकरासँ जोड़ि बहुत किछु गढ़ि लैत रही। पन्द्रह वर्षक वयससँ ल' क' ओकर नाक-नक्शा, चालि-ढालि आ......। फेर आस्ते-आस्ते सभक विश्लेषण करैत रही।

ओहि बालिकामे हमर दिलचस्पी हदसँ बेसी बढ़' लागल छल। हमरा प्रत्येक पल ओकर अयबाक प्रतीक्षा रहय। ओ कोनो समय अकस्मात् आबि जाइत छलि। पड़ले-पड़ल हम तकैत रही। आब ओ अबिते-अबिते एक नजरि फेकय आ मुस्की देब' लागय। ओकर आपस होयबाक ढंग विचित्र सन छलैक। हमरा घुमिक' देखिते किछु दूर धरि मुस्की दैत पड़ाय लागय। ओकर पड़ायब हमरा आतंकित क' दैत छल। ओहि दिन दुआरिपर केओ नहि छलैक। ओ आयलि तँ हम पुछलिऐक—'सुनह, तोहर नाम की थिकहु ?'

'भक् !' आ ओ खिसिआइत सरपट दोड़ैत आङन चल गेलि। केओ देखि लितैक तँ हमरा मादे किछु सोचि सकैत छल।

ओकर व्यवहारकेँ कोनो एक दिशामे लेब हमरा लेल कठिन छल। दोसर दिन ओ एतेक सहज ढंगसँ नाम कहि देलक जे ओकर स्वरपर विश्वासे नहि भेल।

जखन हम कलौ खाइत रहैत छलहुँ तखन ओ पीठकेँ देबालमे सटाक' केश बन्हैत रहैत छलि। कातमे केओ बैसलि भेटि जाइक तँ स्थिर स्वरमे हमरा बहुत बीड़ी पीबाक उपहास करैत छलि। कहियो-कहियो हम सुनियो लैत छलहुँ। नहि सुनि पयबाक स्थितिमे ओकर फुसकीसँ गमि जाइत छलहुँ जे ओ फेर शिकाइत क' रहलि अछि।

हमर अंगा प्रायः टाङल रहैत छल। बड़ कम पहिरैत छलहुँ। एक दिन साँझकेँ बहुत दूर घूम' निकलि गेलहुँ। घूमिक' अयलहुँ तँ अकस्मात् जेबीपर नजरि गेल। उपरका जेबी भरल लगैत छलैक। देखलहुँ तँ अनगिनती अधकट्टी बीड़ी छलैक। पहिने तामस उठल। फेर बूझ' लगलहुँ।

साँझकेँ ओ खरिहानमे साँझ देबा ले अबैत रहैक। हवाक तेज झोंकसँ दीया मिझा जाइक तँ ओ हमरासँ कहय—'अहाँ डाइन छी। दीया मिझा गेलैक।' आ हँसैत रहैत छलि।

कहियो-कहियो कात-करोट देखि ककरो नहि रहलापर हमर देहपर पानि छिटैत छलि।

एक दिन सभ पुरुष आ धीया-पूता पड़ोसिया गाममे भोज खयबा ले गेल छलैक। हम लालटेमक इजोतमे किताब उनटाय रहल छलहुँ। ओ कखन आबि हमरा पाँछा ठाढ़ि भ' गेलि, पता नहि चलल। ओ जोरसँ एक मुट्ठी धान हमर पीठपर फेकलक। हम गरदनि घुमौलहुँ तँ ओ हँस' लागलि।

बहुत जिद्द कयलापर ओ बिछाओनपर बैसि गेलि।

तोँ बदमाशी किएक कयलह ?'

ओकर गालपर हल्लुक थापर लगबैत हम कहलिऐक।

'ओह! चोट लगैत छैक!'

ओकरा बैसाक' रखबालेल कोनो गप्प करब जरूरी छलैक।

'पढ़' अबैत छह ?'—हम पुछलिऐक।

'ऊँ हूँ!'—ओ मुस्की दैत नकारलक।

'सिखबह ?'

'हूँ।'

'देखू, ई 'प' थिकैक। कहियौक 'प'।'

ओ हँस' लागलि।

कहक 'प'। कहलक 'हम ई जनैत छी।'

'तखन पहिने किएक ने बजलहुँ ?'

ओ हँस' लागलि।

'अच्छा, पढ़िक' देखाउ तँ ?'

ओ एक वाक्य पढ़ि क' उठि गेलि।

हम ओकर हाथ पकड़ि लेलहुँ।

'आब की थिकैक ?'

'किछु नहि।' ओकर तमसायल चेहरा देखि हम मौलाय लगलहुँ।

'केओ देखि लेतैक।' ओ हाथ छोड़यबाक प्रयास क' रहलि छलि।

'सुनू, रातिमे अहाँ कत' सुतैत छी ?'

'किएक ? घरमे।'

'आर केओ सुतैत अछि ?'

'हूँ।'--ओ मुस्की देब' लागलि।

'झूठे!'—हम कहलिऐक।

ओ मुस्की दैत रहलि।

'देखू, राति केबाड़ खुलले राखब।'

'हाथ छोड़ू ने ?'

'राखब ने ? बाजू।'

ओ हाथ छोड़ा भागि गेलि।

कुहेस बहुत घनगर भेल जाइत छलैक। चेहरापर सर्द हवाक झोंक बेर-बेर कँपा दैक। मुँह झाँपि लेबाक कैक बेर इच्छा भेल, मुदा निन्न भ' जयबाक डरेँ एहन नहि क' सकलहुँ। चारू भर एक टा डेराओन शून्यता पसरल छलैक। हमर कातमे सुतल लोकसभ एखनो कछमछ क' रहल छलाह। हम कनेक-कनेक कालपर मूड़ी उठाक' देखैत रहैत छलहुँ। लगैत छल, केओ-ने-केओ जागल छैक। सर्द हवाक झोंक फेर अनुभव होब' लागल।

आँखि लाग'-लाग' पर होअय कि एक टा अदृश्य सावधानतावश चौंकि जाइत छलहुँ आ घनगर कुहेसक ओहिपार देखबाक प्रयास करैत रही। मने-मन ओहि कोठलीक अन्हारकेँ नपैत रही जाहिमे ओ सूतलि होयत। ओही कोठलीक अन्हार हमरा लेल खुलल होयत, ई हम आसानीसँ सोचि लेने छलहुँ।

उठि क' कनेक दूर आयल रही कि पाछाँसँ आबाज आयल—'के ?' हम भयभीत भ' गेलहुँ। लगही कयलाक बाद बिछाओनपर घुरि अयलहुँ। कखनो-

कखनो सोची जे ओएह चल आओत। फेर सोची जे ई दूरी ओकरो लेल अलंघ्य भ' सकैत छैक।

हम ओहि अन्हार कोठलीक मादे जतेक सोचैत गेलहुँ, हमर देहमे कँपकँपी होइत गेल। लगैत छल, कुहेस बर्फक सिल्ली जकाँ चेहरापर जमल जा रहल अछि। कँपकँपी आर तेज होयत गेल। मुँह झाँपि लेलहुँ। भोर निन्न टूटल, तावत कुहेस छटि गेल छलैक।

हम नहाइत छलहुँ। ओ पानि भर' आयलि।

'केबाड़ खुलल छलैक, कुकूर ढुकि जइतैक तखन?' बिना कोनो भाव प्रकट कयने ओ कहि गेलि।

'खुलले छलैक!' हमरा जेना विश्वासे नहि भ' रहल छल।

अगिले दिन ओ बिमार पड़ि गेलि। खाइ ले जाइ तँ देखी जे ओ सिरमापर मूड़ी राखि बाहर देखि रहलि अछि। ओकर केश खूजल रहैत छलैक। चेहरा बिमार नहि लागि उदास लगैत छलैक। हम जखन धरि खाइत रही, ओ हमरा दिस देखैत रहय। जखन हम देख' लागी, ओ मूड़ी खसा लैत छलि।

ओकर बोखार हमरा ज्ञात होइत रहैत छल। ओकर माय बोखार देख' ले थर्मामीटर पठा दैत छलि। बेसी काल बोखार सयसँ उपरे रहैत छलैक। बहुत दिन धरि बोखार चढ़ैत-उतरैत रहलैक। ओ बड़ कमजोर भ' गेलि छलि। तथापि, ओकर चेहरा हमरा ताजा बुझाइत छल। ज्ञात भेल जे चारि-पाँच दिनसँ ओ खयबा ले हल्ला मचओने अछि। आब ओ खाइत काल पूरा समय धरि हमरा नहि देखि पबत छलि। प्रत्येक पल एक्के दशामे रहब ओकरा लेल कठिन छलैक।

एक-दू दिन पछाति जखन हम खाइत रहैत छलहुँ, ओ हमरा दिस देखि खयबा ले चिचिआइत रहैत छलि। हम जखन ताक' लगैत छलहुँ, तँ ओ चुप भ' जाइत छलि।

सभ कह' लगलैक जे ओ चिड़चिड़ाहि भेलि जा रहलि अछि। ओकर चिड़-चिड़ाहटिसँ सभ तंग भ' गेल छल। ओकर माय ओकरा धिक्कार' लगलैक। कहियो-कहियो ओ दबाइयो पीबासँ नकारि दैत छलि।

ओकर माय कोनो काजमे व्यस्त छलि। ओ हमरासँ बोखार देखि लेबाले कहल। हम कोठलीमे गेलहु तँ ओ चित्त भेलि छत दिस देखि रहलि छलि। ओ ओहिना चुप आ स्थिर पड़लि रहलि। हम ओकर कातमे बैसि गेलहुँ।

थरमामीटर लगाक' ओ आँखि मूनि लेलक। साँस लेबाक कारणेँ ओकर छाती उठि खसि रहल छलैक। पूरा शरीरकेँ देखलासँ लगैत छलैक जे ओ निन्नमे निर्भर अछि। हमर हाथमे कँपकँपी होब' लागल। कतेको बेर हमर आङुर ओकर खुजलाहा केश धरि पहुँचि रुकि गेल। आ, एक बेर हमर तरहथी निःशक्त भ' ओकर माथपर खसि पड़लैक। हमर आङुर ओकर केशमे फँसल कँपैत रहल।

ओ आँखि खोलि देलि। हम थर्मामीटर निकालि देख' लगहुँ। ओ हमरा एना देखि रहलि छलि जेना पारा पकड़बाक प्रयास क' रहलि हो।

(१९७२)

चौबटिया

ओहि दिन जखन एहि चौबटियापर कनेक कालक लेल ठाढ़ भेल छलहुँ, तँ एतेक तरहक आन-आन बात जे एखन सोचि रहल छी, से नहि सोचैत छलहुँ ।

ओहि दिन ठाढ़ भेल छलहुँ केवल ई देखबा लेल जे केओ अपन आदमी आबि रहल अछि कि नहि ? यद्यपि ककरो अयबाक संभावना नहि छलैक । खाली मोन भ' गेल छुल जे देखिऐक ! एहिना ट्रेनसँ उतरिक' प्लेटफार्मक चारू कात बड़ी काल धरि तकने छलिऐक । मुदा ककरा तकैत छलिऐक, से एखनो धरि निश्चय नहि क' सकल छी ।

एहिना मोनक अनिश्चयात्मक स्थितिमे कतेक सन्दर्भहीन बातसभ मोन पड़ि गेल छल । थर्ड क्लासक वेटिंग रूम····बाबूजीक बीमारी·······पटना······पाइ, आ अन्तमे गाम घुरि अयबाक दुखद गाथा ।

तकर बाद हम बढ़ि गेल छलहुँ पछबरिया चौबटिया दिस । निश्चित रूपसँ तखन हमरा समक्ष प्रश्न छल कतहु अँटकबाक, आ अँटकबासँ सम्बन्ध छल खयबाक । परंच, तखन हम ई स्वीकार करबा लेल तैयार नहि छलहुँ । ओ हमर स्वाभिमान छल अथवा हम अपनाकेँ ठकैत छलहुँ, सेहो निर्णय नहि क' सकल छी ।

पछबरियो चौबट्टीपर केओ नहि भेटल छल । हम मोन पाड़ने छलहुँ जे आइ कोन दिन थिकैक । ओहि दिन हटिया नहि छलैक । हटिया दिन प्रायः अपन गामक केओ भेटिये जाइत छैक । तैयो हम बड़ी काल धरि ठाढ़ रहलहुँ । डाँड़ ऐँठने जा रहल छल । बुझाइत छल जे माथ सुन्न भ' गेल अछि । टाङ आ हाँथक वेग काँप' लागल छल । हम अनुभव कयने छलहुँ जे आब हमरा तुरन्त बैसि जयबाक चाही ।

आ, आब हम होटलमे बैसल छी । हमरा ई पता नहि अछि जे कतेक समय

बीति गेल छैक । किछु दूरपर घड़ी पहिरने एक गोट संभ्रान्त व्यक्ति बैसल छथि । हम एक बेर हुनका दिस देखि क' माथ टेबुलपर झुका दैत छिऐक । हुनकासँ 'टाइम' पुछबामे हम अपनाकेँ असमर्थ बूझ' लगैत छी । केवल ई अनुमान क' लैत छी जे बड्ड अबेर भ' गेल छैक ।

टेबुलक तर हमर दुनू टाङ काँपि रहल अछि, से हम देख' लगैत छी । टाङक काँपबसँ टेबुलमे किछु गति उत्पन्न भ' रहल छैक । हम मूड़ी उपर उठा लैत छी आ ई देख' चाहैत छी जे हमर ओहि अनचाहल क्रियाकेँ केओ देखि तँ ने रहल अछि ! होटलक मालिक हमरे दिस ताकि रहल अछि । स्यात् हमरा ओ असभ्य बूझि रहल अछि । हम अपन टाङक काँपब बन्द करबाक लेल अथक प्रयास करैत छी, परंच हमर ई दुनू टाङ काँपिए रहल अछि ।

भूखसँ माथ ध' लेने अछि । हम दुनू हाथेँ कपार दबैत छी, परंच हाथमे शक्तिहीनता अनुभव होइत अछि । हाथकेँ एके स्थितिमे रखने-रखने ओहिमे झुनझुनी भरि गेल छैक । हमरा अपन कमजोरीपर बड़ तामस उठि जाइत अछि । हम नोकरबाकेँ संकेतसँ बजबैत छिऐक आ एक गिलास पानि ल' आब' कहैत छिऐक । पानि अनबाक निर्देश देबाक काल हमरा स्पष्टतः बुझाइत अछि जे हमर गराँ बाझि गेल अछि । आधा गिलाससँ बेसी पानि नहि पीयल जाइत अछि । जेबीक पन्द्रह पाइक भरोसपर एक कप चाहक आर्डर द' दैत छिऐक । चाह धुआइन लगैत अछि । नोकरबा पर बड़ बेसी तामस उठि जाइत अछि । मोन होइत अछि जे गरमे गिलास ओकरा कपारपर फोड़ि दिऐक अथवा कुर्सी उठाक' पटकि दी । परंच, ई दुनू अकार्य करबामे हम असफल भ' जाइत छी आ तखन ई सोच' लगैत छी जे जाइत काल चाहक दाम नहि देबैक, खाहे जे किछु भ' जाइक । गिलासक चाह अनिच्छापूर्वक जबर्दस्ती खतम करैत छी । मोन कोनादन कर' लगैत अछि ।

प्रचण्ड रौद । सड़कपर अलकतरा बरकि गेल छैक । अलकतराक धाह । हमरा देहसँ घाम छूट' लगैत अछि । एक कोसक बाद खाली बालु । हमर कंठ जेना सूखि जाइत अछि । तैयो हम अपनाकेँ गाम जयबा लेल तैयार क' उठि जाइत छी । झंझटि बढ़ि जयबाक कारणेँ चाहक पाइ द' दैत छिऐक । नोकरबासभ हमर स्थितिपर हँस' लगैत अछि । ओकरासभक कंठ मोकि देबा ले हमर मुट्ठी कसा जाइत अछि । हम देखैत छी अपन आङुर । आङुर नहि, खाली हड्डीसभ जाहिमे कोनो टा शक्ति नहि शेष छैक । हमर सभ टा तामस बिला जाइत अछि ।

हम अपनाके एकदम निरीह जीव बूझ' लगैत छी। एक टा कीड़ा वा कोनो नान्हि टा चुट्टी।

गामपर जाइते चौकीपर पड़ि रहैत छी। काका चौकीपर बैसल छथि। हुनका कोनो टा औपचारिकताक जरूरति नहि बुझाइत छनि। हमहूँ चुप्पे रहि जाइत छी। काकाक जेठका बेटा बुट्टा पहिरने अबैत छैक। ओकर सौँसे देहक हड्डी जागल छैक। ओ छौड़ा काकाकेँ खाय देया पुछैत छनि। काकाकेँ असहमति प्रकट करैत देखि हम कारण पुछैत छियनि। ओ अपन हाथ आगू बढ़ाक' कहैत छथि जे हमरा धाह अछि। फेर हम ओहि छौँड़ाक सम्बन्धमे पुछैत छियनि जे एकरा की होइत छलैक।

'तीन माससँ खाली रोटिये खाइत अछि। भातक आँखि नहि देखलक अछि।' काका फेर चुप भ' जाइत छथि। ओ छौँड़ा घूरिक' आङन चल जाइत अछि।

हमरा ककोपर तामस उठि जाइत अछि। एतेक जनमाक' ढेरी क' देने छथि आ आबो संयम नहि कर' अबैत छनि।

तावत ओ हमरासँ पुछैत छथि—'ओत'सँ कहिया अयलाह ?'

हम जनैत छी जे ई केवल रुपैया मङबाक भूमिका थिकनि आ हम जावत ई सोचैत छी, ताबत ओ कहिये दैत छथि—'ओहि बेर रुपैया मङने छलियहु से की भेलहु ? आइ जे हम मरि जाइ तँ हमर धीया-पुताकेँ तोँ नहि देखबहक ?'

—'से तोँ कोना बुझैत छहक ?'

—'एखन देबे नहि करैत छह तँ हम की बूझी !'

हम एकर किछु उत्तर नहि दैत छियनि। हमरा मोन अछि जे रुपैया रहितो काका कैक दिन हमरा नहि देने छलाह। जखन हमर माय-बाप मरि गेल छल तखन ओ हमरा लेल की कयने छलाह जे आइ हमरापर भरोस करय चाहैत छथि ? काकाक स्वार्थपर फेर हमरा तामस उठि जाइत अछि।

हमरा गुम्म देखि ओ वचनबद्ध होइत छथि—'पटुआ बटाइ कयने छिऐक। पटुआ बेचिक' तोरे द' देबौक। हमरा एखन दसो टाका दे। देहपर एको टा वस्त्र नहि अछि। गंजी से फाटि गेल अछि।'

काकाकेँ बुझाइत छनि जे ई छौड़ा अनत' रहि क' खूब पाइ कमाइत अछि, परंच हम काकाकेँ कोना बिसबास देअबियनि जे पाइक अभावमे हम दू-दू साँझ भूखल रहि जाइत छी।

एखन हमरा बुझा रहल अछि जे हम हारि रहल छी। काकाक स्वार्थमय व्यक्तित्व आ हुनक नाटकीयता हमर संवेदनशीलतापर सबार भ' जाइत अछि। हम अपनापर एक तरहक भारी बोझक अनुभव कर' लगैत छी।

सभक दयनीय चेहराकेँ छोड़ि हम पड़ा जयबाक सोचैत छी। काका एक बेर रहि जायबा ले कहैत छथि। 'काल्हिखन आयब'—कहि हम बिदा भ' जाइत छी। एहि झूठपर हमरा कनियोँ टा ग्लानिक अनुभव नहि होइत अछि। हम सोचैत छी जे काका आब मरि जयताह। एहन सोचबपर अपने बड़ दुख होइत अछि। फेर काकाक जीवाक कामना करैत छी। आ पछताइत छी जे गंजी बहार क' द' दितियनि।

बजार अयलाक पछाति गामसँ अनेरे बिनु खयने घूरि अयबापर पश्चात्ताप होब' लगैत अछि। एक टा विचित्र तरहक छटपटाहटिसँ आक्रान्त हम पाइ पैंच लेबा ले कोनो संगीकेँ ताकय लगैत छी।

दया भेटैत अछि। दू-तीन वर्ष धरि संग-संग पढ़ने छलहुँ। एकरासँ हम कैक दिन पाइ लेने छिऐक। द' दैत छल, कोनो तरहक आनाकानी नहि। तुरन्त पाइ माङब ठीक नहि बूझि हम अनुकूल अवसरक प्रतीक्षा कर' लगैत छी। डेढ़-दू घंटा बीति जाइत छैक मुदा हमरा ओ अनुकूल अवसर नहि भेटैत अछि। आब कनेको विलम्ब हमरा असह्य बुझना जाइछ। हम पाइ माङि बैसैत छिऐक। हमर अपन स्थिति निश्चत रूपेँ उपहासप्रद आ दयनीय लगैत अछि। दया आइये टा हमरा दुर्गम पहाड़ बुझाइत अछि, जखन ओ पाइ रहितो कहैत अछि जे पाइ नहि अछि। हम चारि आनापर उतरि जाइत छी, मुदा ओ एको टा पाइ देबा ले तैयार नहि होइत अछि। एतेक निम्न स्तर धरि हम कोना पहुँचि गेलहुँ, आश्चर्य होइत अछि। दया बिना एको शब्द बजने चलि देलक अछि आ हमर रुग्ण, उदास मोन सोचैत अछि जे आब ककरोसँ बिना कोनो भूमिका देने पाइ माङि लेब।

यदुनन्दन। मने, हमर एक टा दोसर संगी। मोन अछि, एक टाका दू वर्ष धरि नहि द' सकल छलिऐक। ओ काते द' चलि जा रहल अछि।

हमर तेसर संगी कालीचरण। पन्द्रह मिनट""आधा घंटा" एक घंटा। हम उचित वातावरण बना रहल छी, अर्थात् वैयक्तिक प्रशंसा। मुदा सभ टा व्यर्थ।

—'अरे, चाहो तँ पियाबह !'

—'कहाँ अछि पाइ ! रहैत तँ दितियहु नहि !'

आब कालीचरणक संग नीक नहि लागि रहल अछि।

होटल लग अबैत-अबैत सोचैत छी जे होटलबाला बहुत दिन पहिलुका पाइ बिसरि गेल होयत। आइ जाक' चाह पीबि ली, द' देत उधार। मुदा काउन्टरपर कोनो दोसर छौँड़ा बैसल छैक।

आ' तकर बाद हम एहिना एहि ठाम आबिक' ठाढ़ भ' गेल छलहुँ। जहिना एखन सोचि नहि पबैत छी जे कत' जयबाक अछि तहिना ओहू दिन भेल छल। किछु दूरक बाद घुप्प अन्हार छैक। ओहि अभेद्य अन्हारक बाद की होयतैक ? एतेक टा दुनियाँ एहि घुप्प अन्हारमे हमरा लगपासक इजोतमे समटि अयल अछि। कतेक छोट ""आ हम स्वयं कतेक छोट छी !

लोकसभ जा रहल अछि। ओकरा सभकेँ गन्तव्यक दिशा बूझल छैक। मुदा हमर गन्तव्य ? होटलक चाह, गामक रोटी, दया, यदुनन्दन आ कालीचरणक टाका—की अछि ?

हमर साँसे देह काँपि जाइत अछि। हम ओहि ठाम खसि पड़' चाहैत छी। कतेक आरामदेह चौबटिया अछि ! कतेक !

(१९६९)

जासूस कुकूर आ चोर

बहुत दिनसँ गाम चुप छल। पिरथीक घरमे चोरि की भेलैक, गामक बसात गरमी पकड़' लगलैक। वियतनामक खबरि एत' एगारहो बरखमे नहि पहुँचय तँ कोनो आश्चर्य नहि, मुदा चोरिक खबरि अपोलो यान जकाँ चलैत छैक। आखिर ई हुनक आन्तरिक मामिला जे भेलनि। ओना ई आन बात थिकैक जे एहन मामिलामे अन्तर्यामीणो दखल देनाइ अशुभ नहि मानल जाइत छैक।

जखन हम सरजमीन पर पहुँचलहुँ तँ लोकसभ कैक ठाम ने घोदिआयल छल। घरबालाक आकृति परक पालिश उड़ल छलैक। तैयो ओ सभ जन-सम्पर्क विभाग जकाँ प्रश्नकर्त्ताकेँ फोकट सेवा अर्पित करबा ले बाध्य छलाह। कतेको घोदासँ सटला पर जखन पूरा विवरण नहि भेटल तँ एक रत्ती उदास भ' गेलहुँ। जकरासँ पुछिऐक सैह टारि दैत छल। आखिर तथ्यक अकाल पड़य लगलैक तँ लोक ओहिना निपत्ता होब' लागल जेना बजट पेशीसँ पूर्व सिकरेट।

घरबाला थाकि गेल छलाह, सुस्ताय लगलाह। मुहूर्त्त एहन नहि बुझायल जे जाक किछु पूछल जाय। हुनक थकनीसँ ककरो सहानुभूति भ' सकैत छलैक। हम लग्गी कर' बैसि गेलहुँ। सरपंचक संगे तीन-चारि गोटाकेँ टुघरल अबैत देखलिऐक तँ हमहुँ टघरिक' पिरथीक दुआर पर आबि गेलहुँ। पिरथी जे किछु कहलकैक मेहनति कयला पर ओकर संक्षेपण एना भ' सकैत अछि। केबाड़क पट्टा ईंटासँ सटायल छलैक। भीतर एक आदमी सूतल रहैक। सिरमा लग पेटी। पेटीमे दू बेटीक दुरागमनक लेल कीनल बीस भरि सोना, दस भरि चानी आ कपड़ा-लत्ता छलैक। सुतलाहा लोककेँ चोरिक पता पसरक बेरमे लग्घी कर' उठल तँ चललैक। पेटी महंथक पोखरि पर टूटल पड़ल भेटलैक। संगहि, एकटा बसुला, जे छुत-

हरू कमारक थिकैक, भेटलैक। छुतहरू कमरा कहैत छैक जे बसुला चारि दिन पहिने चिचबा माङि क' ल' गेल रहैक।

हमरा लागल जे आब सरपंच कनेक द्रवित होयतैक। मुदा,ओ निर्विकार छल। ई पता लगला पर जे थानाकें खबरि नहि भेल छैक, ओकरा प्रसन्नता भेलैक जे एकटा महत्वपूर्ण काजक श्रेय ओकरा प्राप्त भ' जयतैक। महंथक घरमे गामक असकरुआ टेलीफोन पर जखन ओ आयल, ताधरि एहि क्रियाकें देखबा ले अनेक व्यक्ति जमा भ' गेलाह। ओ सभ कखनो सरपंचक मुह आ कखनो चोंगा पर टकटकी लगओने छलाह जेना टेलीफोन कयनाइ कोनो अजगुत वस्तु हो। दोसर दिससँ किछु पुछला पर सरपंच घिघिआय लागल। परंच, चोंगा रखिते ओकर भयमिश्रित उत्तेजना शांत भ' गेलैक आ ओ गर्वसँ कह' लागल जे पुलिस एक घंटामे आबि रहल छैक।

जकर नाम पुलिसक करिया बहीमे दर्ज छलैक, तकर कान ठाढ़ भ' गेलैक। बेचारा टुनटुन जे छौंड़ी सभपर बगुलबा ध्यान लगओने टसकैत नहि छल, दौड़-धूप करैत-करैत नहि जानि कत' पड़ा गेल।

दू घंटा बीति गेलैक। नेता सभक आदर्शके पुलिस एक डेग आर बढओलक तँ लोक चिन्तित होब' लागल। एक गोटाकें साइकलसँ दौड़ाओल गेल। ओ थाना पर पहुँचल तँ दरोगा तैयार होबय लगलैक। तैयार भ'क' सिपाहीकें बजओलकैक। ओकरा कहलकैक जे ओ दुनू सिपाहीकें चाह-पानक लेल किछु द' दौक। ओ एक टाका द' देलकैक। सिपाही चल गेलैक। दरोगा जमादारकें संग कयलक आ चलि देलक। चौकपर आबि ओ सोचलक जे चाहक लेल प्रस्ताव करय। मुदा, ओ सभ अन्तर्यामी छलाह। किछु बड़बड़ाइत होटल पैसि गेलाह। सिघारा धरि सभ किछु ठीक छलैक। ओ सोचलक जे सिपाही सभकें चाह, तँ दरोगाकें सिंघारा चाहबे करी। परंच, जखन ओ सभ छ'-छ' टा काला जामुन आ रसमलाइक सीढ़ी टपि गेलाह तँ ओकर धैर्यक बान्ह टूटि गेलैक। ओ एना छटपटाय लागल जेना रेलक डिब्बामे वा स्टेशनक बेंचपर बैसल ओकरा उड़ीस कटैत होइक।

होटलसँ निकलल तँ दस बजैत रहैक। दरोगा पान थुकरैत कहलकैक—'आब लेट नहि करू। खाली एक डिब्बा पनामा टा ल' लिय'। ओत' नहि भेटत।'

'चलल जाय हुजूर, ओतहि भेटि जायतैक।'—ओ चाहलक जे टारि दी।

मुदा दरोगा एहि इलाकाक लेल नव नहि छलैक जे सिकरेटक बिना जेबीकरण कयने ओ छोड़ि दितय।

जखन ओ सभ सरजमीन पहुँचलाह तँ सभ केओ आदरसँ उठिक' ठाढ़ भ' गेलैक। आगाँक किछु प्रमुख लोक हाथ जोड़ि एक स्वरसँ प्रणाम कयलकैक। पाछाँक हँसुआ फरौंश चूपे रहल। सिपाही आबि सूचना देलकैक– 'हुजूर, असामी सभ फिरार छैक।'

दरोगा 'हूँ' कहि गंभीर होइत तहकीकात कर' लगलैक। चाह-पान चलैत रहलैक। दरोगा शिकायत कयलकैक जे पछिला अनेक चोरिक रिपोट थानाकें नहि देल गेलैक। तें चोरक मन बढ़ि गेलैक। केओ कहि देलकैक जे चोरि होयबा सँ एक राति पहिने एहिठाम 'चोर' नाटक खेलायल गेलैक तँ दरोगाकें ठक-बिदोर लागि गेलैक। ओ आयोजककें बजौलक आ तमसाइत पुछलकैक—'की हो? तोरा दोसर नाटक नहि भेटल छलह? नाटक खेला-खेला क' चोरी करबैत छहक?' आयोजकक देहमे तेहन ने थरथरी पैसि गेलैक जे ओकर बकार बन्द। लोक सभ 'छोड़ि दियौ-छोड़ि दियौ' क दोहाइ लगओलक तखन जा क' दरोगा पिघलाल।

तकर बाद निश्चय कयल गलैक जे घर सर्च कयल जाय। तलाशी शुरू भेलैक तँ बुझयलैक जेना गाममे भूकम्प आबि गेल हो। ओ सभ जेम्हरे जाय तेम्हरे लोक ढनमनायल। सभसँ अन्तमे टुनटुनक घर सर्च कयल गेल। कतहु किछु नहि भेटलैक। टुनटुनक बाप लोक सभक पाछाँ दुबकि गेल छल। ओकरा ज्ञात भ' गेल छलैक जे एखने कमराकें दस पेनाठी लगलैक अछि।

दरोगा ओकरा बजाक' पुछलकैक—'तोहर बेटा कत' गेल छौक?'

ओ हाथ जोड़ि कहलकैक–'हुजूर, नोता पूरय गेल छैक।'

'नोता! आइ-कालिह तँ लगन नहि छैक।'

'हुजूर, तुलसी-उद्यापन।'

'हमरे सिखबैत छें?' फेर डंटा मारैत 'करैत छें चन्नन-टीका आ बजैत छें फूसि?, पदारथ सिंह, ले चलो साले को, बुखार छुड़ाते हैं।'

पिरथीक दुआरिपर पहुँचैत दरोगा थाकिक' बैसि गेल। टुनटुन बापके ँ ठाढ़ देखलकैक तँ आगि भ' गेल —' मुँह देखैत छह सार, की बैसबह !' ओ बैसि गेल। एकटा सिपाही ओकरा डंटासँ हुराठैत पुछलकैक—'कही ने, कत' भगा देलही बेटा कें ँ।'

'हुजूर, ह'म....।'

दरोगा ओकर लुल्हुआपर दू-तीन डंटा देहकैक – 'सार, खाली हुजूर-हुजूर करैत अछि।' दरोगा कुर्सीपर माथ टिकाक' एम्हर-ओम्हर ताक' लागल। ओकर नजरि चौकीदारपर पड़लैक तँ स्थिरसँ बजओलकैक। ललका पगड़ी ओकर कनहापर छलैक।

'साले, पगड़ी को लगोटी बूझ रक्खा है?' चौकीदार पगड़ी सम्हारैत पड़ायल।

खेनाइ बनि गेल छलैक। ओ सभ चल गेल तँ हल्ला होब' लगलैक। टुनटुनक बाप बैसले रहल। ओकरा प्रति लोकक दू मत छलैक। एक ई जे ओ आब चल जाय। इएह मौका छैक। दोसर जे चल गेलापर ओ फेर पिटा सकैत अछि। ओ चुप्पे रहल। ओकरा खैनीक तलक लागि गेल छलैक। ओ चाहैत रहय जे चटपट ककरोसँ एक जूम माङि दरोगाक अधबासँ पूर्वे थुकड़ि ली। खैनी भेटलैक तँ उठिक' लग्घी कयलक आ फेर बैसि गेल।

खाइत काल प्रमुख लोक सभ अङनामे घौदिआयल माँसु आ दहीक आग्रह बेर-बेर करैत रहलैक। खयलाक बाद दरोगा ततेक प्रशंसा कयलकैक जेना भोजनक इतिहासपे ई एकटा अभूतपूर्व घटना हो।

आराम कयलाक बाद दरोगा कहलैकक जे फिरार आसामी सभकेँ अबितहिँ थानापर पठाओल जाय। जँ रेँ-टेँ करय तँ कसिक' मरम्मति क' देल जाय। आ ई जे बिना जासूस कुकूर मङओने काज नहि चलतैक। एहिमे पाँच-सात सय खर्च जरूर बैसि जयतैक, मुदा एके बेरमे चोर चुरुएत।

महंथ, पिरथी आ अन्य प्रमुख व्यक्तियोक इएह सम्मति भेलैक जे, जे हो, कुकुर अयबे टा करय।

गाड़ीपर मोट क' पुआर देल गेलैक।

तोसक, जाजिम, गेड़आ गाड़ीपर लगा देल गेलैक। पनिगर बरद जोतल गेल। थाना साइकिल पहुँचाब' लेल इ गोटाकेँ तैयार कराओल गेल। पचास-साठि व्यक्ति किछु दूर धरि गाड़ोक पाछू-पाछू चलल। पिरथी सहित पाँच गोटा पाभरि जमीन गेल। ओसभ विचारैत रहल जे कतेक देल जाय। सिपाही कहि गेल छलैक पाँच सय। ओ सभ तीन सय देलकैक। बाँकी दू सयक लेल माफी माङि लेलक जे आब बादेमे भ' सकतैक।

टाका लैत दरोगा कहलकैक—'अपने सभ घुरि जाउ। बहुत कष्ट भेल।'

'प्रणाम' क विनिमय भेलैक आ ओ सभ प्रसन्न भेल घुरि गेल।

एक मास बीति गेलैक। मोन पड़ल तँ खलीफासँ पुछलिऐक 'कुकूरक की भेलैक ?'

'केओ बैसल थोड़े रहैत छैक ? कुकूर सात सयमे रुकि गेलैक। कोन फेरमे छह ? अपन धंधा करह।'

(१९७३)

झालि

दिन लुकझुक करैत छैक। रामा धान काटिक' सबेरे आबि गेलैक। ओना बोझ खरिहान लगबैत-लगबैत राति भ' जाइत छैक। आइ ओ हरेरामके खेतमे छोड़ि देलकैक। धापपर खूब मोटगर क पुआर बिछयलक। बरहका भैया सरजुग कहलकैक त' घूरमे करसी सेहो द' देलकैक। रामाके आइ नहा नहि भेलैक तँइ एतेक अगते जरौन लागय लगलक। धाप आ पुआर जबदाह छैक। पिन्हनामे डोरिया पैंट रहलासँ तरबा लोह भ' गेलैक आ जाँघ-हाथक रोआँ भुटकल छैक। चद्दरि नहि छैक। भानस हेबा धरि घूर तापैत अछि। राति क' हरेराम, गंगबा, बरहका भैया आ ओकरा लेल एकटा मोटिया छैक। सब एक पतियानीसँ ओंघरा जाइत अछि त' माय एकटा पटिया उपरोसँ द' दैत छैक।

बिन्दुआ आ सुनरा कतहुसँ आबि पुआरपर बैसत छैक। सरजुग कहैत छैक–'कोने, कोनेसँ रे'

'एह, अहिना घुरिते-फिरते की।'—बिन्दुआ कहैत छैक।

'घूरमे आगि दही ने रामा रे।'—सुनरा आग्रहक स्वरमे कहैत छैक।

रामा कोनो उत्तर नहि दैत छैक आ पुआर खड़रैत रहैत छैक।

'हइ यैह गंगबाकेँ कहक ने।'–देबलरयना अबैत-अबैत कहैत छैक।

'ला बिने दही गंगबा रे।' रामा हाथ बारि गंगबापर तमसाइत छैक।

'ला बिने दही तूँही। हमहीं टा देखल रहै छियौ, नइँ? गंगबा खूब जोरसँ चिकरैत अछि।

'भने अइ सालाके खेनाइ कालिह बन्न क' देने छलैक। किछु कहलक तँ काने-बात नइँ देलक।'—रामा फेर दमसाबैत छैक।

'माल छै की?'–देवलरयना सरजुगसँ पूछैत छैक।

सरजुग बुझैत अछि जे माल ककरा कहैत छैक—'डेढ़ टाकाके लेलियै रहै। सबटा सठि गेलै। आब जेबी झाड़ैत छियौ। निकलि जाउक तँ निकलि जाउ।'

'वैह त' छहु एकटा जट्टा।'—बिन्दुआके भरोस होइत छैक। गंगबा आगि लाबि घूरमे दैत छैक। देबलरयना फूकिक' सुनगाबय लगैत अछि।

'सरजुग एकदम भकुआयल अछि।'–बिन्दुआक एहि बातपर सभ सरयुगके देखैत अछि आ हो-होक' हँसि दैत अछि।

रामा हाथ-गोर धोइकै अबैत छैक। 'हे रे हँट।'—रामा गंगबाके घुसकाबैत घूर पँजेठि लेब' चाहैत अछि। ओकर टाँग आ हाथसँ भाफ उड़ैत रहैत छैक।

'हमरा की केलकै, वीरपुरमे अड़तालीस टाकाके पटुआ खरीद आ छिआलीसेमे बेचि लेलकै आ अइठिन छै बाबन।'—देबलरयना गुल पजारैत कहैत छैक।

'रौ तोरी, से किएक?'–सुनराके परौसरामक बेकूफीपर छगुनता होइत छैक।

'से नँइ बुझलहक? हम घोड़ा ल'क' चलि एलियैक आ अइठिन हमरा अरजुन पकड़ि लेलकै बियाहमे। चारि दिन बरदा गेलियै। आ जा-जा ओत' गेलियै ता तक बेचि देने रहैक। हम कहि देलियै हम हिस्सा-तिस्सा नहि देबौक।'

'बेसी खैनी नइँ दहक। कड़ा भ' जाइत छैक।'–बिन्दुआ सरजुगके बरजैत छैक।

'गाजा कड़े ठीक है छै।'–सरजुग लटबैत कहैत छैक।

'बाप रे, पिरथी जे कड़ा पीबैत छैक! पीलहक ए ओकर लटायल?'—सुनरा अतीतमे भटकि जाइत अछि।

'भाइजी, दुसधटोलीमे जे एक दिन लरमाहा पिलिअ' रहय! मरदे, कचहरीसँ चोटायल घुरलियै रहय, चारि चिलम फूकि देलियै। से कहै छियह तुरन्ते ल' क' उड़ि गेलै। सनजोगसँ ओइ दिन संगमे एकटा पचटकिया रह'। सोचलियै साला उड़ि जो। लगले-लागल चारि कप चाह ढारि देलियै। से कहै छियह घुमरा

कात अबैत-अबैत लागय जे चित्त भ' जायब। आबिक' सूति रहलियैक। भाय उठबय एलैक जे टिशन पढ़ब' नइँ जेबही कहलिऐ, आइ नैं जेबै, । बड़ थाकि गेल छियौ।"—बिन्दुआ कहैत रहैत छैक आ सभ सुनैत रहैत अछि।

'एह उ दुसधाटोलियो कमाल छै'—सुनरा कहैत छैक तँ सभ हँसि दैत छैक।

'दुसधटोली! दूसधटोली के की बिजनेस छै से सुनलहक? मौगी-छौड़ी सभ दिन आ भिनसुरकोक' कोइला बिछैत छै। मरदसभ दिनमे गाजा बेचैमे रहत' आ छौड़ीसभ रातिक' ।'

सभ एके बेर भभालक' हँसि दैत छैक। बिन्दुआ हँसीमे जोग देलाक बाद कहैत छैक 'एकदिन दुसधटोलियेमे रहिअ भायजी आकि ओनयसँ छिनरो भाय दरोगा पहुँचि गेलह। सबकेँ सर्च करय लागलै। हमरा पुछलक तँ हम कहलियै जे हमरा रुपैया बाँकी है, सोही मांगने आये हैं। तब पुछलक जे कैसा रुपैया। कहलियै सरबेमे काम किया था। तब हमरा नैं किछु कहलक। दुसधाकेँ कनियेंटा पकड़लकै से छिनरो भाय पचास टाका चट सिन ल' लेलकै।'

'ओइमे एकेटा छौड़ी नीक छै, की हो बिन्दु?'—सुनरा एक सोंट मारैत कहैत छैक।

'हँ, उ गोरकी छौड़ी। उ सैनियाक सारि छियै।'

चिलम तीन-चारि रौन चलैत छैक।

'जट्टा बाला गाजामे निशाँ बड़ जल्दी चढ़ैत छैक।'

बिन्दुआ चिलम दैत कहैत छै, हे लैह' तँ देबलरयना कहैत छैक 'ई तँ कुबेरक खजाना भ' गेलह।'

'तह'—सरजुग पुष्टि करैत छैक। कनेकाल सभ दार्शनिक जकाँ भ' जाइत अछि।

'आइ-कालिह घूरे लोककेँ जान बचबै छै।'

'त, घूर नइँ रहय तँ लोक कठुआक' मरि जाय।'

'ठार खसब अखनेसँ शुरू भ' गेल छैक। सगरे धुइयाँ जकाँ पसरल छै।'

कुहेसक पछारी नुकायल चिन्ता कुहेस फाड़िक' निकलैत छै—'केना चलतै आँय बिन्दुआ?'—सरजुग टूटल स्वरमे पूछैत छैक।

'बिन्दुआकेँ की छै? केहन टीशन पढ़बैत-ए।'

'नइँ हौ, आइ-कालिह बड़ा मुमकिल छै। बाबू ओतयसँ लिखलकै जेना-तेना परिवार चला। पढ़ौनीबला एक डेढ़ मोन धान तसिललियै। लोक सभ देबे ने करैत छैक हौ।'—बिन्दुआ कहैत छैक।

'आइ पढ़बय जेबही की?'—सरजुग पुछैत छैक।

'हँ, हँ।'—बिन्दुआ तेजीमे कहैत छैक।

'रबियोकेँ बन्दी नइँ?'

'रबि-तबि बूझैत छै ओ सभ?'

ता ओनयसँ छेदी चौधरी अबैत छै। ओकर अगिला दू-तीन टा दाँत टूटल छै। दाढ़ीक नमह -नमहर खुट्टी सभ कोना दनि लगैत छैक। घूर लग बैसिते ओ देबलरयनासँ पूछैत छैक—'अच्छा बोल, बेचबिही घोड़ा तूँ?'

'हाय रौ बा, बेचबै नइँ? बेगरता छै तँ।'

'अच्छा एक्के बेर निस्तुकी दाम बोल।'

'हमहुँ एक्के बेर निट्ठाह दाम कहि दैत छियह, पचपन टाका।'

'बहुत कहै छिही। सुन! घोड़ाकेँ भरि पीठ घा छौ आ चलै छौ त लापट लगै छौ। लोगो देखत तँ हँसत। कहतैक छोड़ा झालि बजबैत छैक।'

गंगबाकेँ सभसँ पहिने हँसी लागि जाइत छै। ओकरे संगे सभ ठहाका लगबैत अछि।

'हम लगा देलियौ पैंतीस टाका। हँटा। भ' गेलौ।'—छेदी दाम पटयबामे तेज छैक।

'ओतेमे नहि हेतह।'

'सुन, हमरा उ घोड़ा न बिकत। कोय लँ ले जल्दी तैयारे ने हेतै। पैंतीस वाजिब कहलियौ-ए। सरजुग, घोड़ाकें भरि पीट घा छै।'

'है, घोड़ाकें घा कत'सँ एलै। कनियें टा पपड़ी ओदरल छै। उ जे कहबहक कोनो तरका घा छियै से नइँ छै।'

'अच्छा घा चोखेलै-ए की ओतबे छै ?'

'एह, आब कहाँ छै। एक्के रत्ती रहि गेलै-ए।'

'घोड़ा अलगसँ देखैमे नीक लगै छै मगर चीज नहि छै। हमरा तूँ द' देबें ने आ नहिओ बिकत तँ बुझबै दुआरेपर छै।'

'खूब बढ़िया चीज छैक। हम तँ कहै छियह दू-अढ़ाइ मन धरि लादि दै छियै।'

'अच्छा, दामक-दाममे द' दही। कतेमे लेने रही ? पैंतालीसमे ? छेदी ! पैंतालीस द' दहक आ ल' लैह।'—सरजुग तसफिया क' दैत छैक।

'अच्छा, जे ई सभ कहि देलकौ से भ' गेलौ। हमरा भोरेमे घोड़ा द' दे। जिनिस लादिक' ल' जेबौ आ बेचिक' टाका द' देबौ।'

'नइँ, से नइँ हेतह। टाका भोरे द' दहक। हमरा ओतय जायके नइँ रहितियैं त हम घोड़ा बेचितियै कथी ले।'—देवलरयनाकें शंका होइत छैक जे ओ जल्दी टाका नइँ देत।

'त तब कोना हेतै ?'

'सुनह, तूँ हमरा पहिने कहने रहित' ने तँ हम टाका पनरहो दिन छोड़ि देतिअ'। तूँ हमरा हटिया करय दैह आ ताबै टाकाक कोनो बनोबस करह।'

'अच्छा तूँ कालिह हटिया अबै छए ने ?'

'हँ-हँ, कालिह हटिया नै करबै तँ काम चलतै।''

'अच्छा तूँ आ हटिये परा।'—छेदी कहैत चलि जाइत छैक।

बात फरिछैलै नइँ से बिन्दुआ, सुनरा आ सरजुगकें बोझ-सन बुझाइत रहलैक। धूर पजहायल जाइत छैक। करसीमे खाली माटिये छैक। तरका गोइठामे एखन नहि धेलकै-ए।

'भूख लागि गेलँ। कने मुरही-तुरही रहितियै, ने हौ भाय जी ?'—बिन्दुआ कहैत छैक।

'गाँजा पीने छहक तइँ बुझाइ छह। आन दिन बेरहट नइँ खाइत रहक तइयो बुझाइत रह' भूख ?'

'हँ, से ठीके कहै छहक।'

बिन्दुआ उठि जाइत छैक। सरजुग पूछैत छैक—'चलि देलें। बन्दी नइँ ?'

'जाह, खरहूसूँ लग तोहूँ झालि बजबिहह।'—गंगबा चौल करैत छैक।

(१९७३)

टिप

ओहि इलाकामे ओएहटा होटल छलैक। हलुआइ सभक दू तीन टा दोकान छलैक मुदा ओहिमे खेनाइ नहि भेटैत छलैक। पहिल दिन खयलापर ओकरा होटलक बारेमे नीक इम्प्रेशन बनल छलैक। आन छोट होटल सभसँ ओहिमे बीस-पच्चीस पाइ बेसी लगैत छलैक। होटलक सफाइ आ सामान सभक क्वालिटी देखिक' बेसी पाइ लगनाइ अखरैत नहि छलैक। होटलक लम्बाइ-चौड़ाइ बहुत पैघ नहि छलैक मुदा सर्विस ततेक क्विक छलैक जे साइते संजोग सीट लेल ठाढ़ होब' पड़ैत छलैक।

पाँच-छओटा बेयरा छलैक, जकरा सभकेँ किचेनमे नहि जाय पड़ैत छलैक। पोर्टर सभ इच्छित वस्तु आनि क' एक स्थानपर राखि दैत छलैक जत'सँ उठाक' ओ सभ 'सर्भ' करैत छलैक। काउंटरक एक भाग बिल-मैनेजर छलैक आ दोसर भाग मालिक देख-रेख करैत रहैत छलैक।

ओहि होटलमे टिप देबाक रेवाज छलैक। शुरूमे चारि-पाँच दिन ओ टिप नहि देलकैक। आस्ते-आस्ते बेयरा सभकेँ चिन्हबाक मौका देलकैक। ओकरा ई विश्वास छलैक जे बिन चिन्हने जँ टिप देतैक तँ से व्यर्थ चल जयतैक, किएक तँ शुरूमे पाइ देलोपर बेयराकेँ ओकर चेहरा मोन नहि रहतै तँ बेयरा नीक जकाँ सर्भ नहि करतै।

जखन ओकरा बिश्वास भ' गेलैक जे आब प्रत्येक बेयराक मस्तिष्कपर ओकर चेहराक अस्पष्टो छाप पड़ि गेल होयतैक, तखन ओ पाँच पाइ देब शुरू क' देलकैक। ओ जोड़लकैक जे दिनमे दू बेर पाँछ-पाँच पाइ देलासँ मासमे तीन टाका पड़तैक। तीन टका कोनो तेहन बेसी नहि बुझयलैक जे ओ नहि द' सकय। बेयरा सभ कोनो

अतिरिक्त भाव व्यक्त कयने पाइ रखैत रहलैक। चारि-पाँच दिन धरि ओ वाच करैत रहलैक। ओकरा बुझयलैक जे टिप देलोपर सर्भिसिंगमे कोनो अन्तर नहि आयल छैक। ओकरा निराशा भेलैक। बेयरा सभकेँ देखिक' ओकरा असंतोष आ क्षोभ होब' लगलैक। ओकरा लगलैक जे जे बेसी टिप दैत छैक तकरा बेयरा सभ जल्दी सर्भ करैत छैक आ ओकरा त पानिओ लेल प्रतीक्षा कर' पड़ैत छैक।

ओ टिप देनाइ बन्न क' देलकैक। एक-दू साँझ धरि टिप देनाइ आ नहि देनाइ एक्के रग बुझयलैक। तेसर साँझसँ ओकरा सन्देह होब' लगलैक जे बेयरा सभ ओकर उपेक्षा करैत छैक। एक्के टा वस्तुक लेल कैक बैर ने चिचिआय पड़ैत छैक।

ओ शुरूसँ देखैत आबि रहल छलैक जे बिल चुकता करैत काल बेयरा खुदरामे पाइ घुरबैत छैक जेना चौअन्नी, दसपैसाही आ पँच-पैसाही आ जा धरि गाहकि पाइ उठा लैत छै ता धरि ओ ठाढ़ भेल देखैत रहैत छैक जे टिप-लेल पाइ छोड़ल गेल छैक कि नहि। टिप नहि देलापर ओ क्षुब्ध भ' क' तेजीसँ सौंफबाला प्लेट उठा लैत छैक।

ओकरा सर्दीक शिकायत रहैत छलैक। वाश-बेसिन लग जखन ओ हाथ-मुँह धोइत नाक साफ करैत रहैत छलैक आ तखने जँ कोनो बेयरा हाथ धोबा लेल आबि जाइत छलैक तँ ओ तुरन्त अपन क्रिया बन्न क' दैत छलैक। ओकरा होइत छलैक जे बेयराक चेहरापर एकटा स्पष्ट आ जबरदस्त घृणा आबि गेल होइक।

कखनो प्रतीक्षा करैत खिड़कीसँ बाहर देखनाइ ओकरा नीको लगैक। ओ सोचैत छल, जैह पाइ बचैत छैक से नीक। एहन क्षणमे एकटा मित्रक वाक्य फ्लैश क' जाइत छलैक—'हमरा जखन पाइ नहि रहैत अछि तँ सभटा टिप देल पाइ मोन पड़ैत अछि।'

ओ देखैत आयल छलैक जे धुरझार अंग्रेजी बजैत जेबेरियन सभक ग्रुपकेँ बेयरा सभ अतिरिक्त सतर्कतासँ सर्भ करैत छलैक। ओ सभ टिपो भरिगर दैत छलैक। कहियो काल देहातसँ अनाड़ी-धुनाड़ी अबिते बेयरासँ दर-तर पूछ' लगैत छैक। एहन लोककेँ बेयरा सभ नहि गुदानैत छैक। एहि अन्तरकेँ स्वाभाविक बूझि तटस्थ रहितो ओकरा अनाड़ीक प्रति सहानुभूति होइत छैक।

बादमे ओ एकटा खास बेयराकेँ टेबि लेलकैक जे बेसी छओ-पाँच नहि जनैत

छलैक। ओ जाहि टेबुलके सर्भ करैत रहैत छलैक ओ ताहीपर चल जाइत छल। जखन ओकर टेबुल खाली नहि रहैत छलैक, तखन ओ असुविधाजनक स्थितिमे पड़ि जाइत छल। एक राति ओकर टेबुल बाझल छलैक ओ दोसर टेबुल पर गेल। ओहि टेबुलक बेयरा दोसरसँ कोनो बुढ़बाक प्रशंसा क' रहल छलैक जे लस्सी पीलाक बाद आठ आना टिप देने गेल छलैक। बेयराक बाजब आ हाव-भावमे अजीब तृप्ति आ उल्लास छलैक। ओ सोचलक जे आइ जँ ओ ओहि बेयराकेँ चारि आना टिप द' दैतै तँ ओकर प्रसन्नतामे भयकर हलचल आबि जइतैक। मुदा, बेयराक सभिसक ढंग टिप देबा लेल ओकरा अनुत्साहिते कयलकैक।

थोड़बे दिनमे टिप नहि देनिहारक रूपमे ओ देखार भ' गेल। दिन-दिन ओ आर उपेक्षित होइत गेल। प्रत्येक बेर ओकरा होइक जे केओ ओकर तत्काल नोटिस नहि लैत छैक। आर्डरकेँ दोहराब' तेहराब' पड़ैक। बिलो चुकता करबा ले' अनावश्यक प्रतीक्षा कर' पड़ैक। बेयरा सौंफबाला प्लेटो नहि अनैक। फराकेसँ कहि दैक 'एक साठि' आ दोसर काजमे लागि जाइक।

एक राति ओ जाहि टेबुलपर बैसल ताहिपर कने काल पहिने दोसर व्यक्ति सभ बैसल छलैक। मुदा कोनो कारणेँ ओ सभ टेबुल बदलि लेलकैक। ओकरा सभकेँ टेबुल बदलैत देखिएक' ओ बैसल छल। बेयरा अयलै तँ दोसर टेबुल पर चल जाय कहलकैक। ओ जनैत छल जे बेयरा ओहि सभकेँ टेबुल बदलैत देखि लेने छलैक। ओकरा विश्वास नहि छलैक जे बेयरा एना अपमानित करबाक साहस क' सकतैक। ओकरा जबरदस्त आघात लगलैक। मुदा, ओ बेयरासँ बिना बहस कयने दोसर टेबुलपर चल गेल। उठि गेलासँ बेयरा अथवा लगपासक आन केओ ई सोच' लेल बाध्य भ' सकैत छलैक जे बेयराक सामान्य कथन 'टेबुल खाली नहि छैक' पर विश्वास क' ओ उठि गेल अछि। एहन विचार अयलासँ ओकरामे अपमानक तीव्रता कमि गेलैक। खाइत काल ओ ओहिना सामान्य रहबाक प्रयास करैत रहल जेना कोनो आन दिन भ' सकैत छल। बीचमे ओहि बेयरापर जँ नजरि पड़ि जाइत छलैक तँ तामसक एकटा प्रचण्ड आवेग सौंसे देहकेँ झनझना जाइत छलैक।

खयनाइ समाप्त होयबासँ पूर्वे ओ बेयरा कोम्हरो चल गेल छलैक। बेयराक नहि रहलासँ ओकरा शान्तिक अनुभव भेलैक। ओ टिपमे एकटा चौअन्नी छोड़ि देलकैक। बेयराकेँ आश्चर्य भेलैक। ओ होटलक मालिक लग आबिक' ठाढ़ भ' गेलैक। जखन मालिक ओकरा प्रति पूर्ण सजग भ' गेलैक तँ ओ ओहि बेयराक शिकाइत कयलक। 'आइ डोंट नो ह्वाइ ही टोल्ड लाइक दैट'—प्रभाव उत्पन्न

करबाक लेल अन्तिम वाक्य ओ अंग्रेजीमे बाजल। मुदा एहि वाक्यपर अबैत-अबैत ओकर आवाज कनमनू सन भ' गेलैक। होटल छोड़ैत काल ओकरा बुझयलैक जे मालिक ओकर शिकाइतकेँ गम्भीरताक संग लेलकैक।

बिहान भेने उठिते ओकरा रातिबाला घटना मोन पड़ि गेलैक। होटलबाला की एक्शन लेलकैक से जनबाक उत्सुकता ओकरा आक्रान्त कयने रहलैक। दुपहरिया धरि ओ अनेको बेर सोचलक जे ओ ओही होटलमे जाक' खायत आ राति होटल छोड़लाक बादक घटना सभक जनतब प्राप्त करत। मुदा, अन्तत ओ एहि निर्णयपर टिकल नहि रहि सकल। यद्यपि एक माइल बेसी चल' पड़लैक तैयो ओ दोसरे ठाम खयलक।

रातिमे ओ अपनाकेँ नहि रोकि सकल। होटल आयल तँ सभ किछु सामान्य बुझयलैक। ओ बेयरा नहि छलैक। ओकर अनुपस्थिति ओकरा नीक लगलैक। बेसी राति भ' गेल छलैक तेँ होटलमे बहुत कम लोक छलैक। ओ जाहि टेबुलपर बैसल तकर बेयरा संयोगसँ ओएह छलैक जकरा ओ रातिखन चौअन्नी टिप देने छलैक। ओ अबिते बहुत विनीत भावसँ रतुका घटना द' पुछलकैक। बेयराक व्यवहारसँ ओकरा प्रसन्नता भेलैक। ओ घटनाक यथावत् वर्णन क' देलकैक।

—"हुजूर, हमरे कहितहुँ तँ हमहीँ ओकरा कहितिऐ।"—बेयराक एहि वाक्यसँ ओकरा बुझयलैक जे कोनो कठोर एक्शन लेल गेल छैक।

—"किएक, की भेलै से ?" ओ अपन उत्सुकताकेँ रोकि नहि सकलैक।

बेयरा कहलकैक जे ओकरा कड़ा चेतौनी देल गेलैक जे आब ओ कहियो एना नहि करय, तँ ओकरा ई सुनि निराशा भेलैक। एहन एक्शन ओकरा बड़ हल्लुक बुझयलैक। मुदा, थोड़ेक कालक बाद ओकरा बुझयलैक जे इएह एक्शन संभव छलैक। ओकरा चौअन्नी टिप देलकैक। बेयरा सलाम कयलकैक। एहिसँ पहिने कहियो बेयरा सलाम नहि कयने छलैक मुदा ओकर मुद्रा व्यंग्यात्मक नहि रहलासँ ओकरा ई सभ स्वाभाविक बुझयलैक।

ओ सोचलक जे आन बेयरा सभकेँ ओ चौअन्नी टिप देल करतैक जे प्रकारान्तरसँ ओहि बेयराक लेल कष्टकर होयतैक।

अगिला बेर ओ होटल गेल तँ ओहि बेयरापर नजरि पड़लैक। बेयराक चेहरा

पर गर्व आ कठोरता छलैक। ओ दोसर दिस देख' लागल। खयलाक बाद बीस पाइ देलकैक आ निकलि गेल। थोड़े काल पाँच पाइ कम टिप देनाइ ओकर ध्यान बँटलकैक। बेयरा बीसे पाइ घुरयने छलैक जे ओ छोड़ि देलकैक। जेबीमे खुदरा पाइ छलैक मुदा टिप लेल निकालबाक विचार ओकरा पसिन्न नहि भेलैक।

रातिमे ओ एककातबाला टेबुलपर बैसल। ओ बेयरा ओकरा दिस तकलकैक। थोड़े कालमे ओ बेयराकेँ दोसरसँ पप्प करैत देखलकैक। ओकरा भेलैक जे बेयरा ओहि रातिबाला घटना द' कहि रहल छैक। एक बेर ओकरा दिस संकेतो कयलकैक। संकेतक बाद दोसर बेयरा ओकरेपर नजरि टिका देलकैक। दोसर बेयराक मोटाइ आ ताकब ओकरा अनसोहाँत लगलैक। ओहि दुनूकेँ गप्प करैत देखि मैनेजरो सहटि अयलैक। थोड़बे गप्प सुनलाक बाद मैनेजर ओकरा विचित्र ढँगसँ देख' लगलैक। कतहु ओ सभ पिटबाक प्लान तँ नहि क' रहल छैक ? ओ भयभीत भ' गेल। तेजीसँ खयलक। बीच-बीचमे ओहि सभक गतिविधिकेँ देखैत रहल। मने-मन जोड़लक। एक चालीस बिल होयतैक। ओ डेढ़ टाका प्लेटमे छोड़ि बेयराक प्रतीक्षा कयने बिना निकलि गेल। गेटक बाहर एकटा बेयराकेँ ठाढ़ भेल देखि ओकर जी सन्न द' रहि गेलैक। ओकरा डर भेलैक जे कतहु बेयरा ओकरा पकड़ि नहि लैक। ओ अत्यन्त शीघ्रतासँ रिक्शा कयलक। रिक्शा कने दूर चल अयलैक तखन ओ थिर भेल।

बादमे पिटा जयबाक डर दूर भ' गेलैक। मुदा, एक दिन ओहि बेयराकेँ दू-तीन बेर किचेनमे जाइत देखि ओकरा मनमे एकटा भयंकर सन्देह पैसि गेलैक। ओकरा भेलैक जे भनसीयासँ मिलिक' बेयरा ओकरा खयनाइमे जहर-तहर मिलबा सकैत छैक। आगाँमे आयल सभ आइटमकेँ ओ ध्यानसँ देखब शुरू क' देलक। स्वाद आ रंग स्वाभाविक छैक कि नहि, से विचार कर' लागल। एक-दू साँझ धरि नहि किछु भेलैक तँ डर कमि गेलैक, मुदा सन्देह बनले रहलैक। ओ होटल गेनाइ कम क' देलक। बीससँ पचीस पाइ धरि टिप दैत रहल। मुदा, कहियो काल खयलापर एतेक टिप देनाइ अखरैत रहलैक। एतेक दिन बादो ओहि बेयराकेँ देखिते ओ असहज भ' जाइत छल। ओकरा होइक जे बेयराक सभ क्रिया-कलाप ओकर उपहास करैत छैक। किछु दिनक बाद होटलकेँ ओ साफ छोड़ि देलक।

(१९७४)

डर

होइत ई अछि जे हमरा आठो पहर डर लगैत अछि। देखू, एखन लिखि रहल छी ने, हमर हाथ काँप' लागल आ किछु कालमे कँपकँपी ततेक ने बढ़ि जायत जे हम डरसँ सर्द भ' जायब। लिखनाइ बन्द कर' पड़त।

बजार जयबा ले' बिदा होयब। गंगाक कातेकात चल' पड़त। जा धरि हम सड़क नहि पकड़ि लेब, ता धरि ई डर रहत जे केओ ओम्हरसँ धड़फड़ायल आओत, हमरा ठेलि देत आ हम गंगामे डूबि जायब।

सड़क पार कर'मे डर लगैत अछि। रिक्शा, मोटर कार आ बस एको क्षण सड़ककेँ खाली नहि छोड़ैत छैक। रिक्शासँ कैक दिन टाङ आ जाँघमे खोंच लागि गेल अछि आ शोणित बहरयलापर अस्पताल जाक' पट्टी बन्हब' पड़ल अछि। एक दिन एक टा फटफटिया पाछुएसँ टाङपर चढ़ि गेल छल। एक बेर सड़कक मोड़पर बूझायल जे एक टा कार थकुचिए देत आ कि चिकरि उठलहुँ।

साइकिलोपर चढ़'मे डर लगैत अछि। चिड़ैयाटाँड़ पुल लग एक टा स्कूटर-बाला साइकिलक पछिला पहिलाकेँ थौआ-थौआ क' देने छलैक आ बाजल छलिऐक तँ झट द' गरदनि पकड़ि लेने छल। तखन पड़यलहुँ। मुदा बाकरगंजमे आबिक' एक टा शराबीसँ पल्ला पड़ि गेल। गलत साइड चलैत छल ओ आ उनटे हमरेपर आँखि लाल-पीयर कर' लागल। तामसपर हमहूँ किछु कहलिऐक आ कि तड़ाक-तड़ाक मारिते गेल। जावत सिपाही अबैक, तावत ओ पड़ा गेल छल। सिपाही हमरा पकड़ि क' थाना ल' गेल आ कह' लागल—'सार, गुंडाशाही करै छेँ ? टाका निकाल, नहि तँ जहलमे ठूसि देबौक।'

आब सिपाहीसँ डर होइत अछि। पहिनहुँ एक दिन सिपाही मारने छल। भेल छलैक ई जे हम बस-स्टैण्ड लग ससरैत रिक्शा दिस भाड़ा पुछबा लेल बढ़ल छलहुँ आ कि अनचोकेमे सिपाही रिक्शाबालाकेँ एक बेँत मारलकैक। हम ओकर

प्रतिकार कयलिऐक से सिपाहीके रहल नहि भेलैक। जहल दिस घिसिऔने चल जाइत छल तँ पयर पकड़ि लेलिऐक। कहू जे ओ रिक्शाबाला तँ रिक्शा ठाढ़ नहि कयने छल जे मारितैक।

फुटपाथपर चलैत रहब। लोक धकिऔने आगू बढ़ि जायत आ हम डरें सभक पाछू-पाछू। कोनो होटलमे चाह पीबा ले जायब तँ नोकरबासभ हमर वस्त्र देखिक' चीनी मडबैक तँ जोरसँ बाजत। अथवा एहि बीच सूट-बूटमे केओ पहुँचि जयताह तँ हमरा सीट छोड़िक' दोसर ठाम बैसबा लेल कहत। हम डरसँ उठिक' दोसर ठाम चल जायब, नहि तँ ओ हमर डेन ध' लेत।

डाक्टर हमरा प्राण-रक्षक नहि, प्राण-भक्षक बुझाइत अछि। कोनो छोट-छीन बिमारियोकें नहि चिन्हत आ किछु भयंकर रोगक नाम कहि देत। आब डाक्टरो लग नहि जाइत छी। दबाइ सेहो नहि किनैत छी। सुनैत छिऐक जे दबाइमे चून-तून मिला दैत छैक। लोक मरि जाइछ।

कोनो आफिसक बहरियेमे ठाढ़ भ' क' किरानीबाबूसभक खोसामद करत रहैत छिऐक। मुदा केओ सुनबाहि नहि करैत अछि। हाकिमक कोठली जाइत डर होइत अछि। ओकर चपरासीसभ कैक दिन गरदनियाँ देने अछि।

भरि दिन बौआइत रातिकें घर अबैत काल रस्तामे डरें देहसँ घाम छुटैत रहत जे कोनो साँप नहि काटि लेअय आ कि कोनो भूत-प्रेत ने उठा क' पटकि देअय।

घरपर केओ कोनो काज अढ़ा देत तँ कर' पड़त, नहि तँ ओ छड़ी ल' क' तैयार भ' जायत।

जा धरि निन्द नहि पड़ब, चोरक डर होइत रहत, आ ई नहि तँ ई सोचैत रहब जे कखनो कोनो अपन लोकक मृत्यु-सूचना भेटि सकैछ। ई सोचिते पियास लागि जायत। भूख-पियाससँ कंठ सूखि जायत, मुदा उठबाक साहस नहि होयत।

सपनोमे डर होइत अछि। सपनोमे देखैत छिऐक जे ई होइत अछि, ओ होइत अछि, लिखबा काल हाथ काँपि रहल अछि। मुदा आब हम नहि डरब। हाथ काँपत तँ हाथ ठेहुनमे खूब कसिक' दबने रहब, नहि काँप' देबैक।

(१९६९)

तीर्थ

आसिन मासक इजोरिया छटछट करैत छैक। दिन भरिक थाकल-ठेहिआयल, बेमेल, एक-दोसराक सन्दर्भसँ टूटल गप्प सभकें समेटने राति मौन भ' गेल अछि।

मुदा रातिक मौनकें तोड़ि रहल छैक, मथि रहल छैक, चीरि रहल छैक कोसीक धार। धारक हहाइत प्रचण्ड वेग आ वसना। आ एकरो आक्रान्त करैत एक टा मिलल-जुलल स्वर हवाक डेन पकड़ने हमरा धरि पहुँचि रहल अछि। हमरा बाद ओहि स्वरक कोनो अर्थ नहि रहि जाइत छैक, मात्र ध्वनि गूँजि रहल छैक बहुत दूर धरि शून्य वनप्रान्तरमे।

बड्ड नीक लगैत अछि एहिना आदिम प्रकृतिक बीच बैसल रहबामे। समस्त भिन्न एकसरमे लोक कतेक पूर्ण होइत अछि !

'ककरा आङनमे हल्ला भ' रहल छैक ?—अकस्मात् एहि पूर्णताकें तोड़ैत हमर पत्नी बजैत छथि।

भानस करैत हमर पत्नी ई प्रश्न हमरेसँ पूछि रहलीह अछि, से हम नीक जकाँ बूझि रहल छिऐक। उत्तर कतेक सोझ छैक—बलबाबाली। परंच एकर पाछू कतेक अर्थ, कतेक की सभ नुकायल छैक ! आ हमर मोन ओहि अथाह अर्थमे डूबल औना रहल अछि। बलबाबाली ··· मतलब दूबर-पातर बिमरियाह देह, फाटल मैल साड़ी मात्र, आँखिमे समायल समस्त वेदना आ लोकक लेल चारि टा धीया-पुताबाली बताहि माउग।

बताहि ओ कहियासँ भ' गेलि आ किएक, से कहब हमरा लेल बड्ड कठिन अछि। कोनो डाक्टर ओकरा बताहि नहि कहतैक, ई हमहीं टा नहि, गामक सभ केओ जनैत छैक। मुदा ओ बताहि अछि।

जखन ओकर दुरागमन भेल छलैक तखन हम नेना छलहुँ, अबोध नेना। अबिते ओकरा भूत लाग' लगलैक। आङनमे मेला लागि जाइत छलैक। मरिचाइक धुकारी आ गोसाँइ-घरक छड़ी। ओ आङनमे ओंघरनियाँ दैत रहलि, कहिया धरि, से मोन नहि अछि। फेर नैहर भाग' लागलि। गामक सिमान लगक कुम्हरटोली लगसँ हमसभ भरि-भरि पाँज क' पकड़ि घुरबैत रहलिऐक। किएक भगैत छलि ?

बियाहसँ पहिने घड़ी-घंटामे पाँच-पाँच बोझ घास काटि लैत छलि। ओकरा एकसरे उगैहत छलि। दुआर-बथान, गोबर-करसी, कुट्टी-सानीसँ ल'क' माल-जाल आ भानस-भात धरि देखिते-देखिते सभ टा क' लैत छलि। माय-बाप नहि छलैक। मुदा ओकर पितियौत भाइ सभ दिन मना करैक—'गय दाइ, एतेक काज किएक करैत छें? तैयो ओकरा काज करबाक सूर चढ़ले रहलैक। लोकके आश्चर्य होइक। सौंसे गामक बुढ़ियासभ अपन-अपन बेटी-पुतहुके कहैक—'देखैत छिही कुसमाके। ओकर परतर कहियो हेबही तोरासभ ?'

से ओ कुसुमा आइ बलबाबाली भ' गेलि। ओकर ससुर इएह सभ सूनि बेटा बियाहने छल। ई खिस्सा कैक दिन, कैक गोटेसँ हम सुनने छी। ओ अपनो कहने छलि।

फेर कैक वर्ष धरि गामसँ हमर सम्पर्क टूटल रहल। हम गाम-घरसँ उदासीन पढ़ैत रहलहुँ। एहि बीच ओकरा मादे किछु नहि बूझल। कोना एतेक दिवस ओ खेपलक। केहन ज्वालामुखीसँ ओकर मादे जरैत रहलैक। आँखिक कोन दोगमे एतेक वेदना ठुसने गेलि आ कोना चारि टा धीया-पूता गरदनिमे लटका लेलक।

तीन टा बेटाक पछाति एक टा बेटी। बेटियेक लेल ओ भगवानसँ हाथ जोड़ैत रहलि। पेटमे अमट घोरबाक अन्तहीन प्रक्रिया चलैत रहलैक—जा धरि बेटी नहि होइक। आइ ओ सन्तुष्ट अछि—'सन्तान तँ भगवानक देल छिऐक। ओहो की अपना हाथक बात छिऐक !'

आ ओकरा तामस नहि बरतैक। जावत स्वामी छैक, ओ निरपेक्ष रूपे गरदनिमे लटकन ल कौने जायत। एहि सम्बन्धमे ओकर तर्क केओ नहि काटि सकैछ।

मुदा सोइरी-घरमे सभ बेर मड़ुआक रोटी आ साग भेटैत रहलैक, से ओ

कहियो नहि बिसरति। नड्ड़ा देयरके सभ दिन गारि दैत रहतैक। घरक मालिक ओएह छिऐक।

सभ साल कातिकमे नैहरासँ चाउर-धान आनि परिवार भरिके खोअबैत रहलैक तकर ओकरा गुमान नहि छैक। खाली देअरपर तामस छैक जे ओ अपन भाइक दबाइयो नहि कयलकैक आ ओ करजा ल'क' अपन स्त्रीधर्मक पालन करैत रहलि।

धीये-पूता ओकर सम्पत्ति छिऐक। सर्वेमे ओ अपन पितियौत भायसँ हिस्सा लेबा लेल बदरो नहि देलकैक। पाँच हाथक टुकड़ा आ एक दौरी सनेस, इएह अर्थ नैहराक ओ बुझैत आयलि अछि। देओर एहि लेल खिसिआयल छलैक, तखन ओ तनि गेलि छलि—'ककरो बाप कमाक' राखि गेल छलैक !' आ चोट्टे धड़फड़ायल एक टा सटका पीठपर। ओ सहि लेने छलि।

परसू सुपौलसँ घुरिक' आयल छलहुँ। खयबा लेल बैसबे कयलहुँ कि बलबाबाली धरधराइत घर आबि गेलि छलि—'बौआ, की करैत छिऐक दुनू परानी मिलिक' ?' आ तीन गोटेक कंठसँ मुक्त हँसी छिड़िआइत रहल छल।

फेर वातावरणके गम्भीर बनबैत ओ कहने छलि—'बौआ, मरब कि जीयब ! एहि बेर बड्ड लोक बैदनाथ जी जाइत छैक। माइयो (ओकर सासु) के सोचने छिऐक जे ल' जयबैक। पाकल आम छथिन, हुनकर कोन ठेकान ! एक बेर खाली बाबाक दर्शन टा ...'

'बाह ! बड्ड नीक विचार छनि। कहिया जायब ?'—हमर पत्नीक आँखि पहिने चमकि गेलैक।

बलबाबालीक चेहरापर एहि प्रशंसासँ कोनो चमक नहि उत्पन्न भेलैक। क्रोध आ घृणाक भाव ओकर चेहराक रंग बदलि देलकैक—'नड्ड़ा एको छदाम देबा ले तैयार नहि छैक। हे.., हमरा एको टा पाइ नहि दिय', मुदा माय जे जाइत छैक, तकरो लेल तँ पाइ दितिऐक। बेटाक इएह धरम छिऐक ?'

'की कहैत छैक ?'—हम पुछलिऐक।

'एक्के ठाम कहैत छैक जे पाइ नहि छैक। पाइ रहतैक कतसँ? ब'हु

ले करनफूल नहि ओतैक ! माय रिब-रिब, बहिन मिरचाइ आ कौने गेलें गय बौह मिठाइ ।' ओकर ठोर बिचकि गेल छैक—एकदम विकृत मुँह ।

'तखन ?'—हम निसाँस लैत पुछैत छिऐक ।

ओ तरेतर बरफ जकाँ ठरि जाइत अछि । फेर बजैत अछि—'ओ तँ जेहने ओकर माय तेहने हमरो । नहि दौक किछु, हम करजा काढ़ि क' ल' जयबैक ।'

हम चकित रहि जाइत छी ओकर धर्म सुनि । एतेक आदर्शवादी विचार !

'किछु टाका दिय' । ओम्हरसँ घुरिते जोगार क' द' देब'—आ एकरे संग कतोक गोटे जे ओकर टाका ल' क' नहि देलकैक, तकर आक्रोशपूर्ण विस्तृत विवेचन करैत अछि ।

एखन हमरा अपन स्थितिपर पश्चात्ताप होइत अछि । बड़ कठिनतासँ हाथक छूछ रहबाक गप्प कहि पबैत छिऐक । ओ निराश चल जाइत अछि । कोनटा धरि जाइत ओकरा देखैत रहि जाइत छी । ओकर विश्वास आ हमर परिस्थिति । पयरक निराश ठमकल चालि हमर आँखिमे नचैत रहैत अछि ।

झगड़ा बढ़ि गेल छैक, से हमर पत्नी सचेष्ट करैत अछि । हम उठिक' बलबाबालीक आङन दिस बिदा भ' जाइत छी ।

खाली ओकर नङड़ा देयर बड़बड़ा रहल छैक, आर सभ गोटेक आँखि फुटलाहा खापड़ि, ओंघरायल ऊखरि-समाठ आ छिड़िआयल चूड़ाक धानीपर जमि गेल छैक । कुसमा आगाँ बढ़ैत अछि । खापड़िक झुटका दिस एक क्षण देखैत अछि । झुकिक' भरि मुट्ठी झुटका उठबैत अछि । ओकरा खूब जोरसँ दबैत चिचिया उठैत अछि । फेर झुटकासभकेँ देयरक देहपर फेकि दैत अछि । देयर तामसेँ थरथर कँपैत ओकर झोंट पकड़ि लैत छैक । बलबाबाली नहि, कुसमा प्रतिकार करैत फेर जेना आकाशकेँ चीरि दैत अछि । सभ दौड़ैत छैक, मुदा ओकर स्वामी दुआरिपर निर्द्वन्द रूपेँ बैसले छैक । ओ भाङ्क तामस, गारि, फज्झति आ टिरबी सभकेँ फगुआक भाङ जकाँ पीबि गेल अछि । ओकरा निसाँ लागल छैक आ लगले रहतैक । बहु चिकरैत रहौक, भक नहि टुटतैक । संज्ञाहीन भेल भिनसरमे पराती गबैत रहत, साँझमे कीर्तन करैत रहत । अगिला साल चारि लोटा भाङ आर चढ़ा लेत आ फेर कहियो होशमे नहि आओत ।

दुपहर रातिमे बलबाबाली अबैत अछि । हम जगले छी । इजोरिया एखन धरि नहि डूबल छैक । ओकरा मुँह दिस हम देखैत छिऐक । एकदम नीपल-पोतल चेहरा । आँखिमे नोरक जगह एक टा विचित्र चमक छैक ।

—'बौआ, आब हम बैजनाथ जी जेबे टा करबैक । एक-दू सेर चूड़ाक दामे की होयतैक । कीनि लेब । एहि नेङड़ाकेँ देखा दैत छिऐक जे हम ओकरे भरोसे नहि जनमलि छी ।'

हम की जबाब दियौक ? मुदा मोन होइत अछि जे ओ हमरा लग बैसलि रहय आ हम ओकर मुँह निहारैत रहि जाइ ।

भोर खन आङनमे ओकरा ठाढ़ि देखि आश्चर्य होइत अछि । सुखायल आ उदास सन मुँह ।

'खटखट क' क' जायब नीक नहि बुझलिऐक'—पयरक आङुरसँ ओ माँटि उखाड़ि रहलि अछि । हमरा बुझाइत अछि जेना हम कोनो मेलामे हेरा गेल छी ।

(१९६९)

धुंधमे घटना

हमर कथाक पहिल स्थिति

कुर्सीपर बैसल छी बिन मतलब। समयक कोनो सीमा छैक वा नहि, से नहि कहि सकैत छी। एक टा अन्तहीन सड़कक क्रम कोनो दिशामे सोझ चल जाइत रहैत छैक। एत'सँ कात-कात पसरल बीस-पचीस पंक्तिबद्ध गुलमोहरक गाछ हम देखि सकैत छी। चारि-पाँच टा टिनहा मकान। घास। दूभि। भावकेँ छुवैत वा बिन छूने पुरबा-पछिबा।

दोसर आदमी आ हमर कथाक दोसर स्थिति

फेर अन्हार पसरय लगैत छैक।

एहि कोठलीमे कुर्सीक अतिरिक्त नमहरका रैकपर एक बोरा पुरान बिन मतलब कागत आ एक टा बक्सा छैक। बगड़ाक खोंता आ मकड़ाक जाल अन्हारमे नहि देखल जा सकैछ। बाहरमे शून्यताक जमाव। भरि दिन फाइल उघलाक बाद एहि कोठलीसँ एक आदमी बजार गेल छथि। एखन ओ की क' रहल होयताह, नहि कहि सकैत छी। औताह। कखनो कोनोमे रुचि राखब व्यर्थ बुझाइत अछि।

तेसरमे एक टा महिला आ हमर कथाक तेसर स्थिति

ई कथा शुरू होयबासँ पूर्व एकर कातबाला कोठलीमे ओ गेलीह अछि। कोनो तरहक आवाज नहि आयल। भ' सकैछ, हम ध्यान नहि देने होइ। जरूरी अथवा बाध्यता सेहो नहि बुझायल। भानस तैयार भ' गेलाक बाद हुनका किछु आदति छनि। सम्भवतः एखनो आबि क' कहथि—'की बेकार बैसल छी ?'

प्रतीक्षा असहनीय लगैत छनि। हम चुप्पीसँ एक टा दूरी बनायब। आ

चल जयतीह। आ हमरा टा व्यर्थता ग्रसि लेत। हुनकर रूटीन। भोजन-सूतब। सूतब-भोजन।

आङनक बीच ओ डरसँ काप' लगतीह। इजोरिया-अन्हरिया। दुनूमे हम अपन बाहि बढ़ा देबैक। ओ कसिक' पकड़ि लेतीह। हुनकर प्रायः खुजल रह'बला केश डेराओन लागत। ओ कोठली धरि पकड़ने जयतीह। हम ढील भ'क' खसि पड़ब। डेरायब व्यर्थ छल, सोचब।

दोसर आदमीक पुनः प्रवेश आ हमर कथा-संयोजकक दू टा समाद

एक—फाइलेरिया-ग्रस्त प्रकाश

दू—गर्भसँ एक टा मृत बच्चा

हमर कथाक अंतिम स्थितिः धुंध

बेश्या सड़कपर हमर पयर जाड़सँ सुन्न आ भारी भ' गेल अछि। सांत्वनाक लेल वाक्य सभ टुकड़ी बनि-बनि अबैत अछि—छुछ आ व्यर्थसन। सांत्वना ककरा ? हम एकदम विपरीत दिशामे भाग' चाहैत छी। हमरा चाही भीड़। इजोत। मुदा आब भागब बेकार। आधा दूर आबि गेल छी।

एक टा सुखायल धारक भित्तापर ठाढ़ होइत छी। चारू दिस घूमिक' देखैत छिऐक। खाली कुहेसक धुंध। गाम। घर। लोक। प्रकाश। किछु नहि। हम सोचैत छी, प्रत्येक दिशामे एहि ठामसँ थोड़े-थोड़ेक दूरपर सभ किछु छैक। घर। प्रकाश। लोक। मुदा एखन हमरा लेल सभ व्यर्थ। हमरासँ ककरो कोनो प्रयोजन नहि रहि गेल छैक। हम एसकरे धुंध आ शून्यमे डूबल जा रहल छी जेना लोक मरि जाइछ।

१९७०

धुक्कड़

आब बसक भीड़ देखि क' मोनमे कोनो प्रतिक्रियाक अनुभव नहि अछि। केहनो जान लेम'बाला भीड़मे एकदम सुस्त आ उदासीन भाव लेने ठाढ़ अथवा बैसल रहैत छी। भीडक ठेलामे कखनो कोनो दिस जबर्दस्ती झुकि जायब, खिड़की लग छी तँ कपारमे टेटर भ' जायब, ककरो टाङ पिचा जायब—ई सभ किछु संभव छैक। शुरू-शुरूमे समूहकेँ गारि दैत रहिऐक, आक्रोश प्रकट करैत रहिऐक। मुदा आब ओना करब अपने व्यर्थ बुझाइत अछि। कनबो चिचिअयलासँ ने भीड़ कम होइत छैक, ने हल्ला।

बस खुजबाक ठीक समय नहि बूझल छल। आध घंटा पहिने आबि गेल छलहुँ। तखन एतेक भीड नहि छलैक। लोक सभ गेट लगक 'महिला सीट' पर भीड़ लगओने छल। ओहि ठामसँ उतरबामे बड़ सुविधा होइत छलैक। मुदा ड्राइवर लग बहुत सीट खाली रहैक। एहि लत्तम-पिच्चमसँ बचबाक लेल आगुएक सीटपर आबि गेलहुँ। बसक बाहर बेस धुक्कड़ उठि गेल छलैक। मूड़ी खिड़कीसँ बाहर निकाललहुँ। पछबाक सायँ-सायँमे बालु आ छोटकी-छोटकी पाथर पीच रोडपर झन्न-झन्न उठैत छलैक। विवश भ'क' बसक भीतरे एम्हर-ओम्हर देख' लगलहुँ।

किछु जनी-जाति आबि गेल छलैक। 'सुरक्षित सीट' छोड़बा ले' केओ मर्द तैयार नहि छलैक। केओ सीट छोड़ि देबा लेल कहलकैक, मुदा तकर उपायमे सभ एक-दोसरा दिस देख' लगलैक। आगू एकर एके टा उपाय छैक जे कोनो एक टा समर्थि बालिका आगू आबि क' ठाढ़ि भ' जाउक—एहने गप्प सोचि हमरा सन कतेको लोकक ठोरपर मुस्की आबि गेल छलैक।

पछबा ओहिना सायँ-सायँ करैत छैक। आगाँ-पाछाँ सभतरि लोक घड़ी देखबाक उपक्रम बेर-बेर करैत छैक। किछु क्षणक बाद प्रतीक्षारत भीड़ एखन

धरि बस नहि खुजबापर क्षोभ प्रकट करैत छैक। लोकक क्षोभ, आक्रोश आ अगुताहटि भीषण हल्लाक रूप ल' रहल छैक। एहि प्रसंगसँ केओ अपनाकेँ काटि क' कात नहि क' सकैत अछि।

अकस्मात् हल्ला किछु कम भ' जाइत छैक। साधारण खद्दरक पायजामा आ अंगाधारी एक टा व्यक्ति बसमे चढ़लैक। कनहापरक छोटका चमरौआ बेग ओकर कण्डक्टर होयब सूचित करैत छलैक।

भीड़क बीचसँ एक टाँस स्वर उठैत छैक—'हे यैह हौ!'

कण्डक्टर थकमका जाइत छैक। ओकर नजरि कोनो एक व्यक्तिपर नहि थम्हि पबैत छैक। ओ निश्चय नहि क' पबैत अछि जे ओकरा पहिने की करबाक चाही। पछबा ओहिना चलैत छैक—सायँ-सायँ! बड़का धुक्कड़।

—'अय, कण्डक्टर! बस आइ दिन भरि एही ठाम रहतैक?'

—'बड्ड बेकुफ आदमी छैक।'

—'अरे, मुस्त जकाँ ठाढ़ किएक छह?'

—'के एकरा बहाल क' देलकैक, से नहि जानि'।

—'अरे, देखैत नहि छहक, पूरा गांधीवादी छैक!'

एहिना कतेको टिप्पैत जाइत छैक।

ओकरा बुझाइत छैक जेना बसमे बड़का धुक्कड़ उठि गेल छैक—सायँ-सायँ! बालु आ पाथरक छोटका ठुकड़ी सभ ओकर कनपट्टीपर चोट करैत छैक।

ओ आगू आबि जाइत अछि। टिकटक दाम मङैत छैके। समय पछबा जकाँ बढ़ल जाइत छैक—सायँ-सायँ। एखन धरि तीने टा टिकट 'बुक' भ' सकलैक। ओ जकरा-जकरासँ मङैत छैक, सभ दुइये उत्तर दैत छैक—'बुकिंग आफिससँ ल' अनने छिऐक वा पास छैक।' पाछाँक लोक हल्ला करैत छैक। कंडक्टरकेँ बुझाइत छैक जेना कोनो शक्ति ओकरा बाहर धकिया रहल छक। ओ खिड़कीसँ बाहर टाइमकीपरकेँ देखबाक प्रयास करैत अछि। टाइमकीपर ओकर आँखिक भाषा बूझि जाइत छैक। ओ संभवतः देखि लैत छैक जे कण्डक्टरक आँखिमे धूक्कड़क बालु आ पाथरक टुकड़ीसभ पैसि गेल छैक आ नोरा गेल छैक। ओकरा अबिते टिकट बुक भ' जाइत छैक। ककरो पुछलापर ओ कहैत छैक जे कण्डक्टरक बहाली काल्हिये भेल छैक।

घर्र-घर्र-घर्र ! बस खुजि जाइत छैक। किछु दूरक बाद क्यो रोकबा दैत छैक। फेर खुजैत छैक। फेर।

'बेचारा सोझ आदमी छैक, तें लोक बड़ बनबैत छैक !' – एक टा बुढ़बा बजैत छैक। क्यो ओकर समर्थन नहि करैत छैक। सभ चुप्प। ओ बुढ़बा बाहर देख' लगैत छैक—सायँ-सायँ !

अगिला बस-स्टैण्ड पर बहुत लोक उतरि जाइत छैक आ किछु कालक बाद फेर भरि जाइत छैक। हमरा एक स्टेज आर जयबाक अछि मुदा टिकट एही ठाम धरिक लेने छलिऐक।

एहि बेर कोनो टाइमकीपर ओकर मदति नहि करैत छैक। ओकरा फेर भेटैत छैक ओएह उत्तर, ओएह सायँ सायँ। बड़ कम टिकट 'बुक' होइत छैक। हमहूँ लाथ क' लैत छिऐक। ओ पास अथवा टिकट देखबाक जिद बेसी नहि क' पबैत छैक।

बीच-बीचमे बस रुकैत छैक, खुजैत छैक। हम उतरि जाइत छी। ई सोचि संतोषक अनुभव होइत अछि जे एतेक दूर फोकटमे आबि गेलहुँ।

मुदा ओहि दिनक बाद ई तेसर दिन थिकैक। हम सभ दिन एही बसमें जाइत छी। ओ कंडक्टर फेर नहि भेटल। पाइ बचयबाक उद्देश्यसँ ओकरा नहि तकैत छिऐक, मुदा सोचैत छी जे ओ बड़ सोझ आदमी छल। कालिहसँ सोचि रहल छी जे ड्राइवरसँ ओकरा विषयमे पुछबैक। भ' सकैछ जे ओ नोकरी छोड़ि देने होइक। मुदा एखन धरि नहि पूछि सकलिऐक। किएक ?

१९७०

परिचय

ओ अपने ओहिठाम चलबाक आग्रह कयलनि। खुशी होयबासँ बेसी हम अपनाकेँ महत्त्वपूर्ण बूझय लगलहुँ जे एतेक पैघ नेता (यद्यपि ओ चुनावमे हारि गेल छलाह) हमरा आमन्त्रित कयलनि अछि। खुदरा व्यस्तताक अतिरिक्त हुनका किछु गोटेसँ भेंट करबाक छलनि। ई निश्चय हमरा अधलाह लागल आ हुनक व्यस्तताक प्रति थोड़ेक सहानुभूति भेल। ओ आपस होयबा धरि हमरा यथास्थान रुकबा लेल कहलनि। हम अनुमान कयलहुँ जे ओ हमर परेशानीकेँ ध्यानमे रखैत एना कयलनि। किएक तँ हुनका घंटा-दू-घंटा लागि सकैत छलनि आ एकर खूब संभावना छलैक जे हम बोर होइतहुँ।

ओ बिदा होयबा ले भेलाह कि किछु टुटपुजिया नेता जयकार करबा जकाँ अभिवादन कयलकनि। प्रत्युत्तरमे ओ किछुसँ गरदनि मिलौलनि आ शेष लोकनिक लेल पहिने दुनू हाथ जोड़ि आसमान दिस उठौलनि। हुनकासभ दिस हम गर्वसँ ताकऽ लगलहुँ, जाहिसँ ओसभ ई बुझबाक प्रयास करथि जे नेताजी हमरेसँ गप्प करबा लेल बिलमल छलाह। मुदा हमर ओ गर्व आस्ते-आस्ते टण्ढायल गेल, किएक तँ ओहो समान भावसँ पीड़ित छलाह, जनिकासँ नेताजी गरदनि मिलौने छलथिन। दोसर पाँतीक लोक तन्मयतापूर्वक चुप छलाह। सोझाँक लोक खुशामदी आ दयनीय स्वरमे अपन-अपन सिफारिश क' रहल छलाह। नेताजी समर्थन पयबा ले जखन-जखन 'हमरा दिस तकैत छलाह, हम हुनकर खोँखी आ छीकोपर मूड़ी डोलाक' मुस्की दैत रहैत छलहुँ जखन कि गर्मी बेचैन क' देने छल। तामसो होइत छल जे ई क्रम खतम किएक नहि भ' रहल छैक।

'नेता जी एखन धरि नहि घुरलाह। पक्का एक घंटा भ' गेलैक !'—हमर संगी कहलनि।

'हुँ !'—कहि हम चुप्प भ' गेलहुँ। हमरा नेताजीपर तामस नहि भ' क' संगीपर भेल जे ओ बातकेँ बुझैत किएक ने छथि। पैघ लोक छथि, भेँट-घाँट करैत देरी भैए जाइत छैक। हमरा चुप देखि संगी निश्चिन्त भ' क' सुतबाक तैयारी शुरू क' देलनि। हमरा एहूपर तामस भेल जे नेताजी अओताह तँ हुनका ई कतेक अनसोहाँत लगतनि। ओना त', पुरबा हवाक कारणेँ हमरो झपकी अबैत छल।

आधे घंटामे घुरबाक गप्प छलैक। अढ़ाय घंटा भ' गेलैक तँ साँचे हम चिन्तित भ' गेलहुँ। निसाँमे आबि हम कलो सेहो बन्न करबा देने छलिऐक। जँ ठीके, ओ नहि अयलाह तखन ? हम हिनका सभक नजरिसँ निश्चय खसि जायब। कतेक बेर सड़कपर जाक' दूर धरि आँखि पसारि अयलहुँ। की आब ओ नहि अओताह ? ओम्हरे द' क' तँ नहि चल गेलाह ? ओहिठाम ठहरिक' बेसी प्रतीक्षा करब उचित नहि बुझायल। तय कयलहु जे हुनका डेरेपर गेल जाय। ओत' तँ अबेर-सबेर अयबे करताह। हुनकासभकेँ कहि देलियनि जे नेताजी आबथि तँ हुनका ई समाद कहि देबनि जे हम डेरेपर गेल छी।

हुनकर डेरा देखल नहि छल। परंच एकर पूरा विश्वास छल जे हुनकर डेरा सभकेयो जनैत होयताह। एक टा रिक्शबालासँ पुछलिऐक तँ ओ अफसोसक मुद्रामे मूड़ी हिलौलक। ओकर अनभिज्ञता पर हमरा दया भेल। हम सोचलहुँ, ओ हालेमे शहर आयल होयत।

'चुनावो तँ हारि गेल छथि !'—संगी रिक्शाबालाक समर्थनमे आवश्यक रिमार्क देलकनि।

फेर कोनो एहन-ओहन लोकसँ पुछबाक साहस हमरा नहि भेल। पुछबाक पहिने तौलि लैत छलहुँ जे ई व्यक्ति जरूर जनैत होयत। थोड़-बहुत हरानीक बाद डेरा भेटि गेल। मुदा ओतेक खुशी नहि भेल। हम जेहन डील-डौलबाला मकान सोचने छलहुँ, ओहन नहि छलैक। गेटक भीतर प्रवेश करैत काल हम अगल-बगल घूमिक' देखलहुँ। हम चाहैत छलहुँ—लोक हमरा प्रवेश करैत देखय। मुदा दूर धरि केयो नहि छलैक। हम सोचलहुँ—दुपहर भ' गेल छैक।

बरंडापर केयो नहि छलैक। सभ केबाड़ भीतरसँ बन्न लागि रहल छलैक। बैठकीक अंदाज क' हम बहुत आस्तेसँ केबाड़ खटखटौलहुँ। हमर आशाक विपरीत केबाड़ तुरन्त खुजि गेलैक। एक टा मोट आदमी सोझाँमे छल। हम नेताजीक मादे पुछलियनि तँ ओ कनिको हाक पाड़' लगलाह। ओ नेताजीक कुटुम्ब सन बुझयलाह। फेर पन्द्रह-सोड़ह वर्षक एक टा छओँड़ा आयल।

'नेताजी आबि गेलाह ?'—हम ओकरा अबिते पुछलिऐक।

'नहि।' झट द' कहि ओ हमर चेहरापर आँखि गड़ौने अगिला प्रश्नक प्रतीक्षा कर' लागल। ओकर ई व्यवहार हमरा अखरल। ओकर आँखि बड़ी काल धरि हमर चेहरापर टहलैत-बुलैत रहलैक। एकर स्पष्ट अर्थ छलैक जे हम कि तँ अगिला प्रश्न करिऐक वा दुआरि छोड़ि भागि जाइ।

'भेँट करबाक छल।'—हम हकमैत कहलिऐक।

'बैसब ?' ओ उदासीन होइत पुछलक आ सोझाँबाला कोठली दिस बढ़' लागल।

हमर उत्तर देब हमरा हल्लुक लोक बना दैत। आ आब किछु कहबोक लेल चिचिआय पड़ैत। हमर संगी ओकर अनुसरण कर' लागल छलाह। कोठलीमे एक टा नेता-टाइप आदमी बिछाओनपर आरामसँ पसरल छलाह आ कातमे टेबुल-फैन घर्र-घर्र चलि रहल छलैक। हमसभ कुर्सी पर बैसि गेलहुँ। ओ छओँड़ा आपस भ' गेल। नेता-टाइप आदमीक आँखि दू-तीन बेर आधा खुललनि आ फेर पूरा बन्द भ' गेलनि। हमसभ घामसँ डूबल छलहुँ आ टेबुल-फैनकेँ हुनका दिस घर्र-घर्र करैत देखि रहल छलहुँ। कमसँ कम ओ छओँड़ा मूभर ऑन क' दितिऐक।

कोठलीक खिड़की रौद दिस रहबाक कारणेँ बन्द छलैक। बाहरसँ हवा अयबाक कोनो अवकाश नहि छलैक। हमरा आश्चर्य होइत छल जे छओँड़ा एतेक गुमारमे पानियो लेल पूछय नहि आयल। हमर संगी आँखि मुनि कूर्सियेपर माथ ठेका चुकल छलाह। नेता-टाइप आदमी करओट फेरि हमरासँ नाम-पता पूछि फेर पसरि गेलाह। बिना हवाक घाम सुखा गेल छल, परंच पियास बड़ जोरसँ लागि गेल छल। प्रतीक्षा करबाक अतिरिक्त दोसर कोनो उपाय नहि छलैक।

आधा घंटाक बाद एक टा दस वर्षक छओँड़ी कोठलीमे प्रवेश कयलक। ओ नेता-टाइप आदमीसँ पुछलकैक—'दहीक तक्कर लेब ?'

जेँकि पंखा घर्र-घर्र क' रहल छलैक, ओ पहिल बेर प्रश्न बूझि नहि सकलाह। दोसर बेर पूछि स्वीकारमे मूड़ी हिला देलनि। हम पानि द', नहि कहलिऐक। ई बात बहुत असंभव नहि छलैक जे एहि गर्मीमे तक्कर हमरो लेल आबय। कन्या एके टा गिलास ल' क' आयलि। गिलासक कमी तँ नहि भ' सकैत छैक जे ओ ओहीमे फेरसँ आनति ? नेता-टाइप आदमी हमरा अनठाक' पूरा गिलास साफ

क' गेलाह। कन्या आपस होब' लागलि तँ हम कहलिऐक—'एक गिलास पानियो लेने आउ।'

तक्करक नाम हम चलाकीसँ बचा लेने छलहुँ। कन्याकेँ अयबामे देरी भ' रहल छलैक।

—'अहांकेँ नेताजीसँ भेँट करबाक अछि?'

हम गरदनि हिलौलहुँ।

—'ओ तँ आब रातिमे औताह।'—नेता टाइप आदमी निश्चिन्ततासँ पढ़ैत-पढ़ैत कहलनि।

हम तामससँ खदक' लगलहुँ। ई पहिने किएक नहि कहलनि? कन्या पानि ल'क' आबि गेलि। हमरा आब पानियोँ पीबामे कष्ट भ' रहल छल। मन नहि छलनि तँ डेरापर चलबा ले किएक कहलनि?

हम संगीकेँ उठौलहुँ। ओ कुर्सिये पर एक निन्न मारि चुकल छलाह। हमरा बिदा होयबा ले तैयार देखि ओ स्थिति जरूर बूझि गेल होयताह। ओ चुपचाप हमर संग ध' लेलनि। भोरबाला डेरापर फेर जयबामे बेइज्जती होइत। हम चाहैत छलहुँ, तुरन्त घरक लेल गाड़ी पकड़ि ली। मुदा संगी बाहरसँ आयल नाटक कंपनीक साँझबाला शो देखबा लेल रुकल छलाह। हमरा हिम्मति नहि छल जे हुनका तखने चलबा ले कहितियनि।

आठ बाजि गेल छलैक। आब शो शुरुहे होब'बाला छलैक। हम मौगीं सभक भीड़ देखि रहल छलहुँ। अकस्मात् संगी चिचिअयलाह—'नेताजी।' आब नेताजीकेँ देखबाक एकोरत्ती रुचि हमरा नहि छल। तैयो हम मूड़ी घुमौलहुँ। ओ किछु आगाँ जाक' बैसि गेलाह। पाछाँक लोकसँ गप्प करबामे नेताजीकेँ कखनोक' पाछाँ घुम' पड़ैत छलनि आ हमरा ओ नीक जकाँ कैक बेर देखि लेने छलाह। मुदा चेहरापर देखला सन कोनो चेन्ह नहि आन' चाहैत छलाह।

'आहांकेँ ओ देखलनि कि नहि?'—संगी एहि ध्येयसँ पुछलनि जे ओ एखन धरि आहांसँ गप्प किएक नहि कयलनि।

'गप्प करबाक लेल जगह आ समयो ने चाही।' हम खौँझाइत आ एहि अंदाजमे कहलिऐक जेना शो खतम होइते ओ हमरासँ गप्प करबा लेल दौड़ि जयताह। पता नहि, हमर एहि जवाबपर संगी ध्यान देलनि वा नहि, किएक तँ शो शुरू भ' गेल छलैक।

(१९७१)

पेट

'कलीऽऽम!'— हम जोरसँ हाक पाड़' चाहैत छी। हमर आवाज फँसि जाइत अछि। ओ भीड़मे हेरा जाइत छथि। हम हुनकासँ कमसँ कम चाहक आशा राखि सकैत छलहुँ। ठोँठ सुखा जाइत अछि। पानिसँ ई नहि मेटाइत छैक। सम्भव छैक, चाहक मधुरैसँ कण्ठमे लार उत्पन्न होइक।

दुपहरियेसँ आँखिमे कड़ुआहटि शुरू भ' गेल अछि। पीचपर टाङ रखला-पर लगैत अछि, हमर पयर ऊपर आकाश दिस उठल अछि आ केयो हथौड़ासँ एक-एक चोट क' रहल अछि। पेटक उपरका भाग कड़ा भ' गेल छैक जेना मोट चमड़ीबाला पेटकेँ अपना दिस खिचने होइत छैक। दुनू कनहामे एक तरहक जकड़न उत्पन्न भ' गेल अछि। जाँघक मांसपेशी फूलिक' कड़ा भ' गेल छैक। भोरखन आँखिक सोझाँ चिपटल आकारक स्फुलिंगक अनुभव भेल छल। ओ बनिक' खतम भ' जाइत छल।

आब चलल नहि जाइत अछि। पयरमे जेना पाथर बान्हल हो। निराश भ' क' होटलमे बैसि गेल छी। किछु काल धरि पैघ निसाँस लैत छी। टाङ टेबुलक तर बहुत दूर धरि पसरि गेल छैक। कुर्सीक पीठपर माथ ठेका देलासँ चेहरा छत दिस भ' गेल अछि। आँखि स्वतः मुना गेल अछि। हाथ ढील भ' क' कतहु लटकि रहल अछि। शुरूमे किछुएक घंटा जलन भेल छल पेटमे। आब एके दर्दसँ लगा-तार छटपटाहटि रहैत अछि। सोचैत छी, 'आर्डर' द' दिऐक। परिणाम खराब भ' सकैत छैक, ई जनितो आब सहाज नहि क' सकब। मुदा बेइज्जतिक भय हमर सभ साहस समेटि लैत अछि। कठिनतासँ 'पानि' कहि हमर आवाज शेष भ' जाइत अछि। अपने स्वर बड़ दयनीय बुझाइत अछि। जँ ओ दोसर बेर पुछैत तँ सत्ते हम

कान' लगितहुँ। ओ निश्चय 'किछु लेब' से—पुछ' आओत। सोचैत छी, हम कोनो जवाब नहि द' सकबैक आ हमर हाथ 'किछु नहि' मुद्रामे हिल' लागत। तीन घंटा पहिने जखन हम विनयकें हाक पाड़ने छलिऐक, हमर आवाज एहिना काँपि रहल छल। ओ ध्यान नहि देने छल। ओकर नापरबाहीपर हमरा दुख भेल जखन कि ओ जानि-बूझिक' एना नहि कयने छल। एक घंटाक बाद ओ पुछने छल—'अहाँ अस्वस्थ बुझाइत छी ?' हम हताश भ' गेल छलहुँ, आब ओ चल जायत। हमरा अपनापर आश्चर्य भेल छल। पहिने दू-दू बेर मङ्लापर कहियो संकोचक अनुभव नहि भेल छल आ आइ एतेक काल धरि हम सोचैत रहलहुँ आब ....बस आब . आ मोड़पर ठाढ़ भ' हम ओकर जायब देखैत रहल छलहुँ।

ताला खोलबाक लेल हाथ ऊपर उठबिते माथमे चक्कर आब' लागल अछि। हाथ अपने खसि पड़ैत अछि। चक्कर कम नहि भ' रहल अछि। दोसर हाथसँ माथ पकड़ि केबाड़सँ सटिक' ठेकि गेल छी। फेर एकसर कुंजीकें आङुरमे फँसाक' आस्ते आस्ते हाथ ऊपर उठा रहल छी। हाथकें एकाएक उठौलासँ तखन चक्कर आबि गेल छल। आङुरक कापब हम स्पष्टतः अनुभव क' रहल छी। चाभी तालाक छेदमे नहि ढुकि लग-पास घुसकि रहल छैक। हल्लुक अन्हार छैक। हमर आङुर आ हाथ थाकि गेल अछि। तामससँ कनपट्टी गर्म भ' गेल अछि। कनिए कालक बाद तामस केबाड़पर क्रियात्मक रूप ल' लैत अछि। फटाक्-फटाक् !

बत्ती नहि जरौने छी। तनाव-रहित होयबाक लेल पूरा शरीरकें ढील द' क' चित्त पड़ि गेल छी। मुदा पेटपर एखनो तनावक अनुभव भ' रहल अछि। आँखि खोलैत छी, बन्न करैत छी। कोन स्थिति सुखद होयतैक, पता नहि चलैत अछि।

दिनका अपेक्षा मोहल्ला शान्त छैक। एहि तरहक स्थितिमे बगड़ाक चीं-चीं धरिसँ क्रोध होइत छल। मुदा एखनो पूरा चैन नहि। कंठमे कोनो रुकाबटि उत्पन्न भ' गेल अछि। पेटमे दर्द सन अनुभव लगातार भ' रहल अछि। पानि पीबाक इच्छा बहुत पहिनेसँ बनल अछि। उठबाक इच्छा नहि होइत अछि। जहिना छी, बस ओहिना पड़ल रही। एकर अतिरिक्त किछु नहि।

देबालसँ सटल नलकें कियो खोलि देने छैक। पानि खसबाक आवाज आबि रहल छैक। आब कोनो तरहक हल्ला सहल नहि होइत अछि। मुदा जनैत छी, भोर एहूसँ बेसी हल्ला होयतैक।

(१९७१)

फँसरी

भेलबाबाली काकी झुल-झुल बूढ़ि भ' गेलि छलि। एको सय बरखसँ बेसी भ' गेल छलैक। केश सोनसन उज्जर, आ सौंसे देहक चमड़ी लटकि गेल छलैक। ओ खाली छाहे टा देखैत छलि। सभ दिन जे लगमे रहैक, तकरा तँ बोलिएसँ चीन्हि जाइक, मुदा आन गोटे जाबत अपन आ बापक नाम नहि कहैक, तावत धरि नहि चीन्हैक।

आँखि नहि तँ किछु नहि, तें भरिदिन एक टा धोकड़ी बनल खटियापर झुकलाहा डाँड़ ल'क' पड़लि रहैत छलि। एक टा पुरान लाठी जे समय-समयपर संग दैत छलैक, से सदिखन लगमे पड़ल रहैत छलैक। बिछाओनमे एक टा महकैत मोटिया जे उड़ीससँ भरल छलैक, आ एक टा काठसन सिरहौनी।

एक टा सिलबरिया बाटी आ पचकलहा सिलबरिया लोटा जे कहियो माजल

नहि जाइत छलैक आ मुँह तेना ने पचकि गेल छलैक जे कतबो पानि उझलैक तँ थोड़ेक पानि रहिये जाइत छलैक। भोरे केयो ओहि लोटामे पानि द' दैत छलैक जे गरमीमे आठसँ दस बजे धरि इनहोर भ' जाइत छलैक, आ बुढ़िया भरिदिन किलोल करैत रहि जाइक, केयो पानि नहि बदलि दैक।

तमाकुलक आदति बड्ड पहिनेसँ छलैक। पहिने तँ एक टा नमहरका जेबीमे खैनी रखैत छलि आ एक टा नमहरका चुनहा चुकड़ीमे चून, परंच आब छोटका लत्तामे खैनी आ एक टा कोनो मलहमक चुनौटीमे चून।

काकीक परिवार भरल-पूरल छलैक। बेटा, पोता, परपोता, नाति, नातिन, सभ छलैक। लोक कहैक—'बुढ़िया बड्ड भागमन्त छैक, एतेक टा बजार लागल छैक, केयो-केयो एहन देखने होयत।'

बहुत-बहुत दूरक कर-कुटुम्ब आ आनो चिन्ह-पहचिन्हक लोकसभ बरोबरि देख' अबैत छलैक, आ आसिरबाद प्राप्त क' अपनाकेँ धन्य बूझय बुढ़िया काकी कहैक— 'की देख' अबैत छह! हम तँ लोथ बनलि पड़लि छी। भगवान करहु, नीके- सुखे रहिहह।'

हम आइसँ चारि बरख पहिने पूब कमाय चल गेल छलहुँ। पहुकेँ खन जखन बसन्ता छौड़बा गेल छल तँ कहने छल—'हे हौ! बुढ़िया मरतैक आ कि बचतैक, एक बेर देखि अबहक। ओहि दिनमे पलखतिए नहि भेल जे अबितहुँ। दूरो बहुत छैक तेँ आसकतियो भ' जाइत छल। एबरी कोनहुना भैँसकेँ रोमाक' अयलहुँ। अबिते गोड़ लगलिऐक।

'आब आँखि अछि जे देखबहु'—काकी बाजलि छलि। हमरा बुझायल जेना काकी पहिले जकाँ कहि रहलि हो—'हमरा लेल एको बीत जगह नहि छैक, भगवान कत' हमर औरदा रखने छथि, से नहि जानि!'

जिनगीक अवसादक अनुभव करैत-करैत एक टा रेह लटकलहा चमड़ीमे स्पष्ट भ' गेलैक जे मृत्युक असमर्थताकेँ सम्बोधित करैत धिक्कारि रहलि छलैक आ मोन व्याकुल भ' गेलैक जेना केयो कहि देने होइक—'ई बुढ़िया मरबो नहि करैछ।'

'कखन अयलह?'—अचानक हमर ध्यान टूटल।

'एखन तुरन्ते आयल छी'।—हम अनुमान कयलहुँ जे काकी अपन विश्वासकेँ थाहि रहलि अछि जे कतहु हमहूँ नहि तँ ओकर उपेक्षा करैत छिऐक। अपन जे

केयो अबैत छलैक तँ प्रायः आन-आन गोटेसँ भेँट क' तखन बुढ़ियाक भेंट करैक। काकी हमरासँ एहि तरहक आशा नहि करैत रहय।

बूढ़ आ बच्चा एके रंग होइत छैक। कातिक मास, पैसाक ततेक टाँट छलैक जे दू पैसाक चिनियोकपाक काकीकेँ नहि द' सकलिऐक से बड्ड ग्लानि आ पश्चात्ताप भ' रहल छल।

'खयलह किछु की नहि?'—हमरा भेल जे हम केहन स्वार्थी छी आ हमर विचार कतेक संकुचित अछि जे एखन धरि पुछबो नहि कयलिऐक जे कोना रहैत छह, कोनो तरहक तकलीफ तँ नहि छहु। काकी हमर कतेक खियाल रखैत छलि।

'कहाँ खेलिऐक, आब जाइत छी।'

'जाह, पहिने खा आबह।'

'तोँ खेलही?' हम जाइत-जाइत पुछलिऐक।

'हमर कोन छैक, हाय रे समाँग दालि-भात! समाँग नहि अछि, केयो कखनो द' दैत अछि तँ खा लैत छी।'

हमरा भूख बड्ड जोरसँ लागि गेल छल। हम चल गेलहुँ। ओहि दिन फेर नहि जा सकलिऐक। एम्हर-ओम्हर लोकसभसँ गप्प-सप्प करैत-करैत बड्ड राति भ' गेलैक। बिहान भेने जलखै खाक' गेलहुँ आ ओसारापर ठाढ़ भ' गेलिऐक।

'ई के छी ठाढ़ भेल?'—काकी पुछलक।

'हम छी गय, काकी!'—आ, कनेक काल चुप रहैत पुछलिऐक—'चिन्हलिही हमरा?'

'हँ, चिन्हलियहु'—अपन विवशता प्रकट करैत बाजलि। हम लगमे जाक' बैसि गेलिऐक।

—'देखही जे ककरो हाक पाड़ैत छिऐक, से केयो नहि अबैत छैक। भोरेसँ चून खातिर किलोल करैत छिऐक। काल्हिएसँ खैनी नहि खयलहुँ अछि।'

'हे गय, कनेक चून दही ने, तोरा सब सुनबाइ किएक नहि करैत छिही?'—हम बिगड़िक' काकीक पोतीकेँ कहैत छिऐक।

'चून रहतैक तखन ने केयो देतैक। आइ दू-तीन दिनसँ खाली चूने-चून भुकै —छै।' ओ छौंड़ी बाजलि।

'चून नहि छौक'—हम काकीकेँ कहलिऐक। काकी खैनी खयबा ले औनाइत छलि तेँ हमरा कोनो तरहेँ चून ऊपर करबा लेल कहलक। हम कनेक चून माङिक' आनि देलिऐक आ खैनी सेहो चुना देलिऐक। स्नेह आ करुणासँ ओकर मोन भरि गेलैक।

काकी पुछलकैक—'हे रौ, बाउ, मालिक चल गेलैक?' मालिक काकीक बेटा छलैक। नाम तँ ओकर दोसर रहैक, मुदा सभ मालिके कहैक।

'कत' जयतैक?'—हम पुछलिऐक।

'सुपौल जायबाला रहैक।'

'कहाँ गेलैक, छेबे तँ करैक। की कहैत छिही?'

'कहबैक की! आइ कतेक दिनसँ लहबै खातिर अङनामे कहैत छिऐक तँ कहैत छैक जे बेटा दुआरिपर छैक, कहौक मङ' देतैक। ककरो कहबो कयलिऐक, से केयो नहि जाक' कहैत छैक। माथ सदिखन फुटैत रहैत अछि।'

काकीक पुतोहु सुनि गेलि छलैक। अपन बदनामी सुनि एकरा सहन नहि क' सकलि। ओतहिसँ बाजलि—'आ रे बाप! एहि बुढ़ियाकेँ हम की करबैक! हिनका चाही जुअनकी छौँड़ी जकाँ दू दिनपर तेल। सदिखन उरदाहिये कर'पर लागल रहैत अछि। एखन तँ लोक छैक, हम की कहबैक?'

बुढ़िया सूनि नहि सकलि। कान सेहो कमजोर भ' गेल छलैक। हम चुप्पे छलहुँ। ओकर पुतोहु फेर किछु मोन पाड़ैत बाजलि हमरा सम्बोधित करैत—'मरिचाइ माङैत रहत आ जहाँ मरिचाइ खयलक कि पेट झरब शुरू भ' जाइत छैक। कहू तँ लोक एकरा की करतैक?'

तावत काकी किछु कह' लागलि। हमर ध्यान ओम्हरे चल गेल—'कालिह खन लछुमन आयल छलैक। ओकरा कहलिऐक जे हमरा कामतेपर द' आ गय, हमरा ओतहि सभ नीक जकाँ देखैत अछि, तँ कहलक जे एखन बड्ड खरचहर छैक, अगहनमे जैहेँ।'

'करूक तेल लेबही?'—हम पुछैत छिऐक।

'कत'सँ अनबहक तोँ, तोरा पैसा छहु?'—हमर स्थितिक अनुमान लगबैत काकी बाजलि। अपना पर हमरा बड्ड तामस उठल। काकी कतेक तरहक हमरा लेल करैत छलि, मुदा आइ हम एको कनमा तेल नहि द' सकैत छिऐक।

'अङनेमे छै, हम देया दैत छियौक।'

'ईह, अङनाक लोक बड़ दैत छहु।'

'हम ने मङा' दैत छियौक'—आ देखलिऐक जे काकी एक टा पतरका डाबर अमलाबाला खलियाहा शीशी जे बहुत इन्तिजामसँ राखल छलैक, निकाललकैक।

'काकी! पहिने जे देखैत छलही, से आबो देखैत छिही?—हम पुछलिऐक।

'कथी हौ?'—ओ प्रश्नक स्पष्टता चाहैत छलि।

'ओएह जे धार हहाइत चल अबैत छैक तँ हाथी दौड़ल अबैत छैक। कनहा छौँड़ा मुँह दुसैत छैक।'—हम कहलिऐक।

'देखैत छिऐक तँ देखने की होयतैक! मरबो नहि तँ करैत छिऐक,'—मुँहपर एक टा विचित्र भाव आबि गेल छलैक।

एखन मरबिही तँ भोजो-भात कोना करतौक। देखैत नहि छिही जे बाइस टा झंझटि कपारपर छैक!'—हम कहलिऐक।

'तीन चारि दिन गरदनिमे फँसरी लगौने रहलिऐक, एक दिन माहुर सेहो खयने रहिऐक, मुदा तैयो नहि मुइलिऐक।'

हमरा दुःखावेगसँ एक टा विचित्र हँसी लागि गेल।

'फँसरी कोना लगौने छलही?'

'कसले नहि गेलैक तँ कतहु मरिऐक!'

'कोन चीजसँ फँसरी लगौने छलही?'—हम पुछलिऐक।

'इएह हौंकना जे छैक!'

आ हम देखलिऐक जे एक टा एक हाथक मारकिनक टुकड़ा छलैक जाहिसँ काकी माछी हौंकैत छलि, बियनि भारी लगैत छलैक।

(१९६६)

फुकना

सभ दिन जकाँ स्कूलसँ आबि अपन सहपाठी भातिजसभक संग बेरहट करबा आ कबड्डी खेलबबाक हमर इच्छाकेँ आइ फेर मामा 'दफन' क' देने छलाह। स्कूलसँ घुरिते हमर भातिजसभ अपन-अपन किताब-कापी जत'-तत' फेकि आङन ढुकि गेल, मुदा हमरा कठोर आदेश क्रेन जकाँ जकड़िक' अलग क' देने छल। मामाक शब्दसँ हमरा विचित्र तरहक डर होइत छल। हम कहियो हुनकर आज्ञाक उल्लंघन करबाक दुस्साहस नहि क' पबैत छलहुँ। एत' धरि जे कहियो नजरि सोझ क' देखि नहि सकलियनि।

हम आतंकित भ' दोआरि खरड़' लागल छलहुँ। जाधरि मामा दोआरिपर रहलाह, हम नीक जकाँ खरड़ैत रहलहुँ। हुनका खेत दिस जाइत देखि हमरा बुझायल जे हम आब खूनी पंजासँ मुक्त भ' गेल छी। दोआरि खरड़बामे हमर मन नहि लागि रहल छल। मुँहपर गरदा आ घामक मिश्रणसँ नोचनी बढ़ि गेल छल। भूख बड्ड जोर क' देने छल। इनारसँ एक डोल पानि भरि मुँह-हाथ धोक' आङन दिस पड़यलहुँ।

जेठकी भौजी जाँत तर घुरुकि रहलि छलीह। आर दू गोतनीक कतहु पता नहि छलैक।

'बेरहट दिय'— अधिकारपूर्वक हम कहलिऐक।

'रोटी पकबैत छिऐक तखन आयब।'

'किएक, आर केयो नहि खयने छैक ?'

'कहि तँ रहल छी, नहि छैक किच्छु। रोटी पकयबैक तँ खायब।'

'तोरा अपन बेटा लेल छलहु ?'--हमरा बड्ड तामस उठि गेल छल।

ओ तामसेँ छाउर भ' गेलीह—'बड़बड़ नहि करू। दिन भरि करैत-करैत जान चल जाइत अछि आ ऊपरसँ ई टिरबी.... —।' ओ अरंदरं बाज' लगलीह तँ हम गारि पढ़' लगलहुँ।

'हम छोटकी नहि छी जे सहि लेब। गारि देब बन्न करू, नहि तँ एके चाटमे मुँह लाल क' देब' --ओ ऊठिक' ठाढ़ि भ' गेलि छलीह।

हमर सत्तरि बरखक नानी दोसर घरमे खाटपर पड़लि रहैत छलीह। हुनकर आँखि खराप भ' गेल छलनि। ओ देखि सकितथि तँ हमर ई हाल नहि होइत, अथवा हम हुनके लग जाक' कनितहुँ, मुदा तेहन कोनो वस्तु नहि छलैक। जाइत तखन ओ किछु सुनितो नहि छलीह।

हम अपनाकेँ असहाय बूझ' लगलहुँ। आँखिसँ नोर खस' लागल। हम

पछुआड़मे आबि ठाढ़ भ' गेलहुँ आ भीतक माँटि खुरच' लगलहुँ। ओहि समय अपन छोट सन दिमागिसँ हम किछु नहि सोचि पबैत छलहुँ जे खाली हमरे संग एना किएक भ' जाइत छैक ? किएक मामा हमरे सभ टा काज अढ़ा दैत छथि आ काजो कयलापर हमरे पर तमसाइत छथि। हमरा किएक ने अपन भातिजसभ सन खयबा ले भेटैत अछि ? जखन-जखन हमरा मनमे ई प्रश्न सभ उठैत छल, हमरा खाली बाबू मोन पड़ैत छलाह आ हम कतहु नुकायल वा रातिकेँ अन्हारमे बड़ी काल धरि कनैत रहैत छलहुँ।

अपना दिस कोनो मउगीकेँ अबैत देखि हम दोआरिपर चल अयलहुँ। दोआरिपर केयो नहि छलैक। हम पानि पीबि कनेक काल इनारेपर ठाढ़ रहलहुँ। गोहालीमे मास्टर साहेबक साइकिल टाट लागल ठाढ़ छलैक। हमरा मनमे साइकिलक सभ पुरजाकेँ एकसरेमे छूबि क' देखबाक इच्छा जागल। ओहि ठाम जाक' सभसँ पहिने हम घंटी बजौलहुँ। साइकिलक टनटनी केओ सुनि ने लेअय, ताहि डरेँ हम घंटी बजौनाइ छोड़ि देलहुँ।

लोकसभकेँ कैक बेर ट्यूबमे हवा भरैत देखने छलिऐक, मुदा ई नहि जनैत छलिऐक जे हवा कोना निकाल-बहार कयल जाइत छैक। हमर उत्सुकता बढ़िते गेल। चक्काकेँ हम गहिकी नजरियेँ देखलिऐक। आ बॉलपिनक नटपर आङुर फेरब शुरू क' देलिऐक। एकाएक हमरा बुझायल जे नट खूजि रहल छैक। जहिना हम ओकरा थोड़े आर ढील कयलिऐक कि जोरसँ फुस्स सन आवाजक संग बॉलपिन कतहु उड़ि गेलैक। हमर होशे हेरा गेल।

हम बॉलपिन आ नट ताक' लगलहुँ। उचकि-उचकि क' एम्हर-ओम्हर देखिओ लैत छलिऐक जे कतहु केयो अबैत तँ नहि छैक। हमर घबराहटि बढ़ि गेल छल। जीह आ कण्ठ थूकक अभावमे सूखि गेल छल। लाख चेष्टाक बादो हम केवल बॉलपिन ताक'मे सफल भ' सकलहुँ। हमर बेचैनी आर बढ़ि गेल। आब ककरो आबि गेलापर पकड़ल जयबाक संभावना छलै। हमर भातिज सभ सड़कपर एखनो कबड्डी खेलाइत छल। ओकरासभक गुल-गुपाड़ा साफ सुनबामे आबि रहल छल। पयरद ाबि पछुआड़ देने हम चुपचाप सड़कपर आबि गेलहुँ।

कबड्डीक तेसर गुल चलि रहल छलैक। गुलक बीच ओसभ हमरा ढूक' नहि

देलक। हमहूँ बेसी विरोध नहि कयलिऐक। कोनो दोसर दिन रहितैक तँ हम मारि-पीटपर सहजेँ उतरि सकैत छलहुँ। वास्तवमे हमर मन कबड्डीमे नहि, कतहु अनत' छल।

जेबीमे ककरो हाथ द' देबाक डरेँ हम साँझक पढ़ाइ शुरू करबासँ पूर्व बॉलपिनकेँ नुकाक' राखि देलिऐक। अपना जनैत एतेक चतुरतासँ सभ रहस्यपर पर्दा द' देलाक बादो हमर मोन अशान्त छल। लगैत छल जे हमर चेहरापर केयो ओहि रहस्यसभकेँ पढ़ि लेत। पोल खुजि गेलापर लत्तम-जुत्तम आ भातिज सभक व्यंग्यक कल्पने मात्रसँ हमरा भीतर एक टा सहमल सन भाव प्रत्येक क्षण जनमैत छल।

पहिनहुँ कतेक बेर एहन भेल छल जे सही दोषीक पता नहि लगलापर हमरे ऊपर सभ टा दोष कोनो-ने-कोनो तरहेँ थोपि देल जाय। एहि लेल हमरा सभ तरहेँ तैयार रह' पड़ैत छल। लालटेमक शीशा फूटि गेलापर वा गाछसँ आम तोड़ि लेबापर सही दोषीकेँ नहि, खाली हमरे मारि लगैत छल।

एक दिन रबिन्दर अपन मायक बक्सासँ दू टा टाका चोरा लेने छलैक आ मामासँ हमरे नाम कहि खूब मारि खोऔने छल। किछु दिनक बाद ओ कहलक जे टाका ओ अपने चोरौने छल।

ओहि राति नओ बजे धरि हम खाली अक्षर पढ़ैत रहलहुँ। दिमागमे सदति काल साइकिल, बॉलपिन आ नट घुमरैत रहल। खायक खयलाक पछाति बिछाओन पर हमर प्रत्येक पल एक टा सन्तोषक पल छल। कमसँ कम राति भरिक लेल तँ आफत हटिये गेल छलैक।

प्रत्येक भोर सभक लेल दतमनि आनब हमर दैनिक कर्ममे स्थायी रूपसँ सम्मिलित भ' गेल छल। दतमनि आन'सँ पूर्व हम एक-दू बेर ओहि जगहक चक्कर काटि अयलहुँ जत' नट खसल छलैक। टाटक दोगमे भुरभुरी आ खाधि भ' गेल छलैक। हम एखनो सोचि रहल छलहुँ जे नट भेटि जाय तँ ओकरा ठीक जगहपर लगा देबैक, मुदा नट नहि भेटल।

मामा मास्टर साहेब आ मेहमान सभकेँ दुआरियेपर अपना खयबासँ पहिने

परसि-परसि क' खोअयबाक क्रम बड्ड पुरान छलैक। एहि काज सभसँ मुक्ति भेटबा धरि नहि तँ केओ साइकिलक हालति देखलकैक ने कोनो तरहक बबंडर उठलैक। हमर हृदयक कोन-कोनमे एखनो एक टा भय छल आ तेँ हम जल्दीसँ जल्दी स्कूल पड़ा जाय चाहैत छलहुँ।

हम एतेक समयक अन्तरो ई निर्णय नहि क' सकल छलहुँ जे ओहि एसकर बेकाजक बॉलपिनक की करब। हम एक टा संगीसँ ओहि बॉलपीनक सम्बन्धमे गप्प कयलहु। ओ दोकनदारक बेटा छल। तीन दर्जन फुकनाक बदलामे बॉलपिन द' देबा ले ओ कहलक। हम कोनो जबाब नहि देलिऐक। एहन कुत्सित काज कारबामे हमरा लाज होइत छल। स्कूलसँ घुरितो काल हम ओहीपर सोचि रहल छलहुँ। घर आबि एक बेर फेर ओहि बॉलपिनकेँ तकबाक प्रयास कयलहुँ जे हमर संतुलन बिगाड़ि देने छल।

ओहि नटसँ आब हम निराश भ' गेल छलहुँ। आब हमरा समक्ष कोनो तेसर विकल्प नहि छल जे हम खाहे तँ ओकरा फुकनाक बदलामे संगीकेँ द' दिऐक आ ओकरा अनेरे धयने रही।

साँझ खन जखन-जखन हमर भातिजसभ खेलयबा ले, चल गेल तँ हम ओहि बॉलपिनकेँ खूब सावधानीसँ जेबीमे नुका लेलहुँ। ओहि संगीसँ भेँट कललिऐक। ओ सप्पत खयलक जे एहि रहस्यकेँ ओ अपने धरि सीमित राखत आ तखन हम तीन दर्जन फूकना लेने ओकरा फुलबैत घुरि रहल छलहुँ।

अ'गिला भोर हमर निन्न टूटल तँ देखलिऐक जे रविन्दरकेँ बहुत रास फुकना छैक। हमरा कचकचयबा ले ओ फुकनामे जरूरतिसँ बेसी हवा भरिक' फोड़ि रहल छल। काल्हि साँझ खन हमहूँ एहिना कयने छलहुँ। हम अपन जेबी टोलहुँ तँ साते-आठ टा फुकना भेटल। जेबीमे एक टा भूर भ' गेल छलैक आ ओही देने सभ टा फुकना खसि पड़ल होयतैक, एहन अनुमान हम कयलहुँ।

'तोरा फुकना कत' भेटलौक ?'—हम पुछलिऐक।

'दोआरिपर।'

'हमर छी, द' दे।'

'नहि देबौक, की क' लेबेँ ?'

हम एहि 'चुनौती' केँ सहन नहि क' सकलहुँ।

ओकरासँ झगड़ा भ' गेल। खूब गारि-फज्झति। मुदा ओ फुकना नहि देलक। हम तामसेँ बताह भ' गेलहुँ। ओकरा मार' लगलिऐक। ओ पड़ाक' अपन माय लग चल गेल। हमहूँ ओकरा पिठियौने गेलिऐक। आङनमे हड़बिरड़ो मचि गेलैक। हम दुनू माय-पूतपर ढेपा फेंक' लगलिऐक। लोक हमरा पकड़ि लेलक। मुदा हम ओकर मायक हाथमे दाँत काटि लेलिऐक। ओकर माय हमरा कंठ मोक' लागलि। हमर साँस बन्न भ' गेल। लगैत छल जे आब दम बहरा जायत। हम एक बेर अपन सभ तागति समेटि हाथ चलौलिऐक। ओकरा दाढ़ीमे खूब-जोरसँ लगलैक आ हमर गरदनि मृत्युक भयसँ एक बेर मुक्त भ' गेल।

मुदा ओहो सुरमा छलि। ओ फेर हमर कंठ ध' लेलक आ ठेलि देलक। हम खसि पड़लहुँ आ किछु क्षणक लेल अचेत भ' गेलहुँ। जखन देहमे असहाज पीड़ाक अनुभव भेल तखन देखलहुँ जे केबाड़ बन्न छैक। हम घरेमे चिचिआइत रहलहुँ।

दुपहरमे केबाड़ खुजलैक तँ हमर देहक जेना सभ किछु छिड़िया गेल छल। दुनू आँखि फूलि गेल छल। प्रतिशोध लेबाक भावना आर प्रबल भ' गेल छल।

मुदा चारि घंटा धरि कोठलीक जहल हमरा लेल पराजय छल आ एहि तरहक पराजयकेँ लोकक तिरस्कारपूर्ण आँखिक बीच हम स्वीकार नहि क' सकैत छलहुँ।

एहि झगड़ाक फलसँ हम आतंकित भ' गेलहुँ। मामा हमरा माफ नहि करताह। हमर प्रत्येक उचित-अनुचित गतिविधिपर ओ हमरा मारैत छलाह। जबर्दस्ती घी, छाल्ही वा दूध ल' लेलापर भौंजी मामासँ चुगली करैत छलीह। हमरा अभागल आ भइखौका कहैत छलीह, जे हमरा लेल सय नरकक एक भोग छल।

मामाक घरसँ आध कोसपर हटिया लगैत छलैक। ओत' एक टा मिडिल स्कूल छलैक। मामाक जेठका पोता ओही स्कूलक होस्टलमे रहैत छलैक। हम ओतहि चल गेलहुँ। हमरा मोन अछि, ओकरा पुछलापर हम कोनो बहाना बना

देने छलिऐक। फेर ओ कताइ-बुनाइमे व्यस्त भ' गेल। बेकार बैसल-बैसल हमर मोन अगुता गेल। अपना सम्बन्धमे लोकक बेर-बेर पुछब नहि सोहाइत छल।

ओत'सँ हटियापर आबि गेलहुँ। हमरे बयसक कैक टा छौंड़ा फुकना फुला-फुला बेचि रहल छल। जेबीमे पड़ल हमर अपन सात आठ टा फुकना मोन पड़ल। हलुआइसभके देखि मधुर खयबाक इच्छा भेल मुदा पाइ नहि छल।

कनेक दूरपर एक टा बनियाँ खैनी आ किताब बेचि रहल छल। हमरा मोन पड़ल जे हमरा सुबोध अंकगणित नहि अछि जकरा लेल घरपर गारि-मारि भ' जाइत छल। हम ओहि किताबक दाम पुछलिऐक। ओकरा छूबिक' देखलिऐक। सुँघलिऐक—अपूर्व आ पियरगर गन्ध। हमरा बाबू मोन पड़लाह। पछिला गरमीमे ओ एही ठाम हमरा एक टा टायरक चट्टी कीनि देने छलाह। ओहि दिन केरा आ मधुर खयने छलहुँ।

हम फेर अपन बयसक फुकना बेचनिहार छौंड़ा लग गेलहुँ। ओकरासँ फुकना देबा कहलिऐक। ओ हमर फुकना कीनि लेलक।

हम फेर चर दिस घूरि रहल छलहुँ। जानि-बूझिक' अन्हार होब' देलिऐक। डरक कोनो गप्प नहि छल, ढेरी लोक भेटि जाइत छैक। घरपर इजोतमे ककरोस सामना करबाक साहस हमरामे नहि रहि गेल छल। सभसँ नुकाक' हम नानी लग चल गेलहुँ। मामा आ मास्टर साहेब बिगड़ैत छलथिन, से हमरा नानी कहलनि। नानी हमरा फटकारलनि। मुदा हमरा नानीक फटकारब बेजाय नहि लागल। हुनका लगमे चुपचाप पड़ि रहलहुँ। नानी बालामृतक एक टा बोतल हमरा देलनि। बाबू ककरो मारफत पठौने होयथिन। पहिनहुँ दू-चारि बेर पठौने छलथिन। हम नानीसँ पुछलिऐक—'बाबू कहिया औथिन? आब ओ औताह तँ हम चल जायब।'

नानी पुछलनि—'किएक?'

हम एकर कोनो उत्तर नहि देलिऐक। हम सोचि रहल छलहुँ जे बाबू कतेक नीक छथि।

(१९७०)

बाँझ

साओन मास छलैक। दुआरि-अङना सगरो थाल खीच। कतहु पयर धरबाक जगह नहि। दुखनीक मायके भरि दिन प्रपन्न नहि भेलैक जे ओ खायत। चाली सोहरैत छलैक। साँझे ओ दिनुका रोटी खा लेलक आ बैसलि छलि। घर अन्हारे रहैक। आइ भरि दिन चाली खातिर ओ बैसलि रहि गेलि आ मटियो तेल नहि आनि सकलि। रामपुरबाली देखलकैक तँ अपना आङनसँ तेल ल' आन' कहलकैक। ओ रामपुरवाली संग गेलि आ तेल ल' क' अबैत छलि, परंच रामपुरवाली बैसबाक हेतु कहलकैक आ पुछलकैक—'एहि बेर दुखनीक पहिल साओन छलैक आ तखनो ओकरा सासुरेमे छोड़ि देलिऐक? लोक की कहत!'

—'की कहैत छी हमरा, हम की करू? सभक पयर-गोर पकड़लिऐक, केओ कान-बात नहि देलकैक अपन दर-दियाद ककरो होइत छैक? ओ सभ तँ भगवानसँ मनबैत छैक जे कोनहुना एहि दुनू माय-बेटीक सत्यानाश होअय कि जेहो एक डेढ़ बीघा जमीन बचल छैक, से हँसोथी।'

'ई तँ सत्ते कहैत छी। आइ-काल्हि केओ ककरो नहि। सभ अपने बेगरतेँ बेहाल रहैत अछि।' रामपुरबाली बाजलि।

दुखनी माइक आँखिसँ लोर टपक' लगलैक ओ बेटीक दुखक अंदाज लगबैत बाजलि—'जहियासँ गेलैक तहियासँ आइ धरि केओ खोजो-पुछारि नहि कर' गेलैक। माउग सभ आठो पहर उलहन-उपराग दैत होयतैक। सभ लूलू-थूथू क' छोड़ि दैत होयतैक। हम की करू? हमरा तँ भगवान माउग बना देलनि, नहि तँ एखन हमरा बेटीके एतेक दुख नहि सह' पड़ैत। भगवान कतेक दिनक औरदा देने छथिन से नहि कहि? एहि दुनियाँसँ, उठिये जइतँहु सैह नीक होइत।' बजैत-बजैत कंठ अवरूद्ध भ' गेलैक।

थोड़ेक काल धरि वातावरण शान्त आ सहानुभूतिपूर्ण रहलैक। दुखनीक माय बाजलि--'मेघ बड़ जोर लगौने छैक आ अङना सेहो सुन्ने छैक। आब हम जाइत छी।'

रामपुरबाली खयबाक हेतु आग्रह कयलकैक, परंच ओ नहि खयलक आ चल गेलि।

कतहुसँ गीतक ध्वनि दुखनी-माइक कानमे पड़ैत छलैक जे बड़ दुखित स्वरमे केओ गाबि रहल छल। ओकरा बुझयलैक जे गीत ओकर अपन जीवनक थिकैक। गीतमे जतेक पीड़ा आ वेदना छलैक, से सभ ओकरा जिनगीमे बीतल छलैक।

मेघ ततेक लगौने छलैक जे किछु नहि सुझैत छलैक। एकदम अन्हार! सुन्न! कतहु किछु नहि, शान्त! बसातक झोंक ओकरा नीक लाग' लगलैक। ओ कल्पना कर' लागलि एहने जीवनक जत' केओ कतहु नहि होअय। एहि समाजसँ एकदम दूर! केओ उलहन-उपराग देब'वला नहि होअय आ जत' दुःखक एक्कोरत्ती गुंजाइस नहि परंच ई कतहु हो! ई तँ मात्र कल्पना थिकैक। बिहाड़ि बेसी जोरसँ बह' लगलैक। ओ दीप जरयबाक प्रयत्न कयलक, परंच दीप मिझा जाइत छलैक। हारिक' ओ छोड़ि देलक। ओ सोचलक जे दीप किएक जरतैक जत' एतेक जोरसँ बिहाड़ि बहतैक तत' कतहु दीप जरय?

अपन जीवनक घटनासभ मोन पड़' लगलैक। पतिक अवसान, खेतक बिकायब, दुखनीक वियाहक झंझटि आ एखनुका परिस्थिति। ओ खूब कानलि। जेना ओकर अवस्था देखिए क' केओ गोहाड़ि क' रहल छलैक --'अरर मरर के झोपड़ी, सीता माइक खोपड़ी राखि लैह- राखि लैह'।

भोर भ' गेल छलैक। सभ ठाम रातुक बिहाड़िक चर्चा चलैत छलैक। बहुतो घर खसि पड़ल छलैक। दुखनी माइक एक मात्र घर सेहो खसल, उजड़ल पड़ल छलैक। परंच ओकर कतहु पत्तो नहि। किछु गोटे शंका कयलकै जे भ' सकैत छैक ओ घर तरमे दबा गेल होअय। चार हँटाओल गेल। दुखनीक माय मुइल पड़लि छलि। दुपहर भ' गेलैक, परंच केओ कफनक कपड़ाक चर्चा नहि कयलक। सभके होअय जे कदाच् हमरे नहि देब' पड़य। साँझ धरि ओकर क्रिया-कर्म सम्पन्न भेलैक।

दुखनी ओहि दिन साँझमे आयलि छलि। यद्यपि केओ ओकरा बजाब' नहि गेल छलैक। ओ किछु आने कारणवश ओहि ठामसँ पड़ाक' आयलि छलि। एहि बातक ककरो पता नहि छलैक। दुखावेगसँ दुखनी विक्षिप्त छलीह आ ओहि पर माइक अकाल मृत्युक समाचार आर बताह बना देलकैक। किछु दिन धरि ओ रामपुरबालीक आश्रय पाबि समय काटि रहलि छलि; परंच आन आने होइत छैक। रामपुरबाली प्रेम करबासँ अधिक ओकर आन माउग सभ लग प्रचार कयलनि। दुखनी अपन विपत्ति-कथा ककरो कहैक तँ केओ विश्वासे नहि करय आ उनटले ओकरा दू-चारि टा बोलो सुन' पड़ैक। हारि हिया दुखनी चुप्पे रहब उचित बुझलक। नाना प्रकारक दुख, चिंता, उपेक्षा, उलहनसँ ओकर मोन सदिखन उदास रहैत छलैक। ओ जर्जर आ रोगाहि होइत गेलि।

एक दिन रामपुरबालीकें नहि रहलि गेलैक। ओ बमकलैक 'गय, तोरा जतेक नूनू बाबू करैत छियौक, ततेक तों कपारे पर चढ़ल जाइत छें। हे, कनियें लाजो ने! काज करबाक मोन नहि रहैत छैक तँ बहाना बनबैत रहैत अछि।'

दुखनीसँ नहि रहलि गेलैक। ओ प्रतिवाद कयलक—'हँ, हम बहाना बनबैत छिऐक तँ बनयबैक। ककरो किएक देह जरैत छैक? हम तँ ककरो खबासिनी नहि छिऐक जे सदिखन टहल-टिकोरा करैत रहबैक आ ने ककरो खेरातक अन्न खाइत छिऐक जे दाबीमे रहबैक। डेढ़ बीघा जमीन देने छिऐक।'

रामपुरबालीक देहमे जेना आगि लागि गेलैक। ओ ओसारापरसँ चमकैत नीचाँ उतरलि 'गय दादी, जो तँ तों, कोन नाना तोरा डेढ बीघामे परबरिश करैत छौक। कनेक हमहूँ देखबैक ओहि मरदानाकें जे तोरा नीक-निकूत खयबा ले' नीक वस्त्र पहिरबा ले' सिनूर-तेल जुमा दैत छौक। बुझैत छैक जे एतबेमे सभकें कीनि लेलिऐक। लोक ठीके कहैत छैक जे चास दी बास नहि दी।'

दुखनी आब एको क्षण रहब उचित नहि बुझलक आ ओ अपन नूआ-वस्त्र समेटि मोटरी बान्हि विदा भ' गेलि। वेदनाक अभियानमे ओ बाजलि —'जकरा सेहन्ता लागल छैक से देखौक जे कोना नहि हमर परवरिश चलैत छैक।'

—'जो-जो, तोरो देखबौक। तोहर जे गति होयतौक, से चारि गामक लोक देखतौक।' रामपुरबाली उनटौलकैक।

दुखनी एहन अचानक विपत्ति सम्हारबाक हेतु तैयार नहि छलि। ओकरा लेखेँ सभ दुआरि बन्द भ' गेल छलैक। ओ अन्तिम निर्णय लेलक जे एकसरि पेट तँ कुकरो पोसि लैत छैक। एतेक टा दुनियाँ छैक, एतेक लोक जीवैत अछि, तँ हमहूँ जीवे करब।

मौसीक ओहिठाम दुखनीक बड्ड आदर-भाव होइत छलैक आ एहि आदर भावक कारणेँ ओ मौसा-मौसीक स्वार्थ-भावनाकेँ नहि बूझि सकलि। थोड़े दिनक बाद गाममे दुखनीक खूब चर्चा चलय लागलैक। माउगसभ भिन्न-भिन्न प्रकारक आशंका प्रकट कर' लागलि। केओ कहैक—'एकर चालि-ढालि नीक नहि रहैक तेँ घरवाला छोड़ि देने छैक।'

केओ कहैक—'एहि खातिर अपना गाममे वास नहि भेलैक।'

केओ कहैक—'एहन कुलच्छिनी छैक जे माय-बाप सभकेँ सोधि लेलकैक।'

दुखनीक मौसीक कानमे एहि बातक भनक पड़लैक। ओ दुखनीकेँ पुछलकैक—'गय दाई, सासुरसँ केओ नहि अबैत छौक, से किएक ?'

'ओ सभ हमरा बाँझ बुझैत छथि।' दुखनीक स्वरमे वेदना आ असम्पक्ति छलैक

—'बेस, नहि ल' जयतौक तँ की दुनियाँ उनटि जयतैक ! हमहूँ देखा दैत छिऐक जे कोना नहि हमर बेटीक दोसर बियाह होइत अछि !'

दुखनी एहि कोशिशमे सदिखन लागलि रहय जे घरसँ बाहर नहि जाय। भिन्न-भिन्न तरहक उड़न्ती जे ओकरा द' उड़ल छलैक से सभ ओ सुन' नहि चाहैत छलि। ओ एहि प्रश्नसँ पड़ाइत छलि जे—तोरा अपन सायँ किएक छोड़ि देने छौक ? असली बात पर केओ विश्वास नहि करैक। तेँ अइ सभ वस्तुसँ ओकरा खौंझे होइक।

एक दिन मौसा फूसि-फटक बाजि ओकरासँ जमीन लिखबा लेलकैक। छल-प्रपंचक षड़यंत्र जे ओहने अन्हारमे रचल गेल रहैक—'जमीन जे लिखबा लेलिऐक से लोककेँ की कहबैक ?'

'की कहबैक ? कहबैक जे दुखनीक बियाहमे खर्च भेलैक।'

'—बियाहमे कतेक खर्च होयतैक ?'

—'खर्च की होयतैक ? खर्च तँ बुढ़बेकेँ लगतैक आ पाँचसय टाका सेहो ओ देबा हेतु तैयार अछि।'

—तखन तँ खेतो भ' गेल, पाँच सय टको भ' गेल आ लोक कहतैक जे दुखनीक वियाहो क' देलकैक।'

—अपन एहि फरिछौटसँ दुखनीक मौसीक अंतरमे भक सिन किछु वरलैक आ मिझा गेलैक।

१९६८

बेर बेर

केओ डिब्बाक केबाड़ खटखटा रहल छलैक। फस्ट क्लासक निचला गद्दा पर बैसल रघुवंश आ हरिवंश चुपचाप केबाड़क थपकी सुनैत रहलैक। खोलबाक मन नहि भेलैक। पूस रहैक आ बाहर ठंढ़ा हवा चलि रहल छलैक।

ओ दुनू देआद एक्के संग कालेजमे पढ़ैत रहैक आ छुट्टीमेगाम जा रहल छलैक। हरिवंशक परिवार ओतेक मातबर नहि रहैक। मुदा सुभीतासँ गाम पहुँचबा जोकर पाइ रघुवंशो लग नहि छलैक। ओ सभ आधासँ बेसी दूरक टिकट कटा लेने छलैक। आब दश टीशन आरो पार करबाक रहैक।

ओ सभ पहिनहुँ बिना टिकट लेने सफर क' चुकल छलै। कहियो चेकिंगमे पकड़यलैक नहि। मुदा डर आ धुकधुकी बरबखत होइते रहैक। जकरा ओ सभ एक्कोरत्ती पसिन्न नहि करैत छलैक। पसिन्न नहि रहितो कहियो काल बिन टिकटे सफर कर' पड़ैक। एहि इलाकाक कौलेजिया लड़का सभक तर्क आ नियमकेँ ओहो दुनू मानि लेने छलैक। जहिया टिकट नहि रहैक तहिया फस्ट क्लासमे सफर करैक। फस्ट क्लासमे अपने सन हालति आ अवस्थावला लोक भेटि जाइक। टिटिओ-फिटीकेँ जल्दी तंग करैक साहस नहि होइक आ किछु बेसी सुरक्षा बुझाइक। मुदा एहन स्थिति दिने टाकेँ रहैत छलैक। साँझक बाद लोकसभ पतराय जाइक।

ओ आदमी एखनो बाहर ठाढ़ रहैक आ रहि-रहि क' केबाड़पर थाप द' रहल छलैक।

'अरे भाइ, के छह भीतरमे ? सुनैत नहि छहक ? खोलह ने जी।' ओ आदमी आजिज भ' गेल छलैक।

रघुवंश आ हरिवंश बैसल बैसल अगुताय गेल रहैक। पता नहि गाड़ी कखनी खुजितैक। ओ सभ जल्दी गाम पहुँच' चाहैत रहैक। उपरका गद्दीपर सूतल लड़की बेर बेर उकासी क' रहलि छलैक। बाहरमे ठाढ़ आदमी एक नम्बरक रगड़ी बुझाइत रहैक। राति सर्द आ शान्त छलैक। एहन निस्तब्धतामे खोंखी आ थाप असहज भेल गेलैक। रघुवंश केबाड़ खोलि देलकैक। दू गोटे भीतर अयलैक। सामान राखिक' बैसलैक आ सभ चीजक टोह लेब' लगलैक। ओ दुनू अधबेसू आ कोनो सरकारी नोकरीमे लागल बुझाइत रहैक। कनी काल बाद एकगोटे बाहर चल गेलैक। ओ जखन घुमलैक त' संगमे एकटा टी० टी० रहैक। टी०टी० लड़कीसँ टिकट मंगलकैक जे कोनो एम० पी० क परिवारक छलैक। फेर दोसर गद्दापर सूतल कोनो आदमीक टिकट देखलकैक आ सीधे हरिवंश लग पहुँचि गेलैक। रघुवंशसँ टिकट नहि मंगलकैक। रघुवंश दामी आ प्रभाव शाली लिबासमे छलैक। खद्दरक चद्दरि ओढने हरिवंशकेँ अन्देशा रहैक जे टी०टीक नजरि पहिने ओकरेपर पड़तैक। मुदा ओकर दिमाग बचबाक कोनो रस्ता नहि ताकि सकलैक। बिन पाइक के दितिऐक ओकरा टिकट ? ओ एकदम्म निभरोस भ' क' सोचलकैक। अपनापर ओकरा आश्चर्य आ खौंझ भेलैक जे इएह टा गप्प फुरलैक आ एतेक कालसँ तकरे ओ धुनैत रहल। टी०टी० लग एहन सोझ आ सुधंग सन गप्प ओकरा विदूषक बना देतैक।

पाइ नहि छलैक त' एहिमे ओकर कोन गलती रहैक। ओकरा अपन माइ-बाप मोन पड़लैक जे गामक माटिमे राति-दिन लोटैत रहैत छैक आ तैयो एतेक पाइ नहि पठा पबैत छैक जे ओकर बेटा पूरा टिकट कटा क' आबि सकै। ओकरा अपन असमर्थता आ लाचारीक बोध भेलैक। कोनो चीजपर ओकर वश नहि छलैक। ई गाड़ी जे ओकरा गाम ल' जा सकैत छलैक, नहि ल' जेतैक। जाहि समय दिआ ओ सोचैत रहैक जे ई ओकर अपन छिऐक, आ ओ जेना चाहतैक तेना बिता सकतै, से भ्रम छलैक। एखने टी०टी० जत' आ जेना चाहतैक तेना ओकरा पाछू-पाछू घुमबैत रहतैक।

ओ टी०टीकेँ कहललैक जे ओकरा टिकट नहि छैक आ सरकारी आफसर दिस ताकलकैक जेना टिकट नहि होयबाक जिम्मेदार ओएह होइक। सरकारी अफसर निश्चन्त आ आश्वस्त भेल बैसल रहैक आ ओकर आँखि हरिवंशपर स्थिर छलैक। टी०टी० ओकरा स्टेशन मास्टर लग चलबा ले कहलकैक आ ओ पोसुआ जकाँ ओकर संग ध' लेलकैक।

कतहुसँ आयल एकटा गाड़ी दोसर प्लेटफार्मपर ठाढ़ छलैक। अनचोकेमे जेना कोनो दुर्घटना भ' गेल होइ तहिना बहुत रास पुलिस आ टी०टीकेँ हरिवंश ठाढ़ देखलकैक। ओकरा ओहि टिटिआक पोनपर समधानिकेँ एक लात मारबाक मन भेलैक जे स्टेशन मास्टरक नामपर ओकरा धोखा द' देने रहैक।

हरिवंश टी०टी०सँ छूटि क' पुलिसक फाँसमे पड़ि गेल छलैक। पुलिस जे दस-दस टाका ल'क' किछु गोटेकेँ छोड़ने जाइत रहैक। हरिवंश तीनटा टाका आ एकटा फौन्टेन बढ़ौलकैक।

'दस निकाल, दस। दससँ कम नहि।'

पुलिसक जबाब कनी कालक लेल ओकरा बौक बना देलकैक। मगर फेर लगले ओकरा उमेद भेलैक जे पुलिस पिघलि जयतैक। तेँ खेखनी करैत रहलैक। मुदा पुलिस नहि घमलैक आ ओकरा छड़सँ बेढ़ल खिड़की वला डिब्बामे बैसा देलकैक। डिब्बामे पच्चीस-तीस गोटे आरो छलैक जे चुप आ झमान भेल बैसल रहैक। मुँहथरिपर एकटा बन्दूकवला पुलिस सभपर नजरि रखने ठाढ़ छलैक।

आब छूटबाक कोनो उपाय नहि छलैक आ ई स्पष्ट होइते हरिवंश लेल सभ किछु शान्त आ स्थिर भ' गेलैक। ओकरा थकनी बुझाय लगलैक आ सुतबाक मन भेलैक। ओ उपरका बर्थ पर जाक' पड़ि रहलैक। मुदा निन्न नहि अयलैक। गाड़ी ओत'सँ खुजि क' बहुत दूर चल आयल रहैक। बीचमे दू ठाम रुकल छलैक आ रुकिते चेकिंगक धर-पकड़ आ हल्ला भेल रहैक। एहिसँ आब हरिवंशकेँ अरुचि भ' गेलैक। धड़-पकड़मे लागल मजिस्ट्रेट, टी०टी० आ पुलिस ओकरा उल्लू बानर सन आ भुच्च बुझाय लगलैक।

हरिबंशक आँखि लागि गेल रहैक। ओ एकटा भियौन सपना देखलकैक आ डरसँ उठि क' बैसि गेलैक। डिब्बामे किछु गोटे ओंघाइत आ किछु तकैत रहैक। बंदूकवला सिपाही आब ठाढ़ नहि छलैक मुदा जगले रहैक। हरिवंश लगही कर' गेलैक आ भीतरमे तार-मियार करैत रहलैक। खिड़कीक छड़केँ ओ हिला-डोला क' देखलकैक। छड़ मजगूत आ कड़ा छलैक। ओ आपस आबि क' बैसि रहलैक।

सिपाही औंघाय लागल रहैक। मुदा लगले चौंकि क' आँखि खोलि देल

करैक। चारि-पाँच गोटे मिलि क' सिपाहीकेँ कबुआ सकैत छलैक। खाली बंदूक एकटा समस्या रहैक। पकड़-धकड़मे जँ घोड़ा दबा जइतैक त' जानक आफत छलैक। हरिवंशक सामने एकटा लड़का बैसल रहैक। एक कात नीचाँमे पड़ल डीजलक टिन भरिसक ओकरे छलैक। डीजल छीटि क' डिब्बामे आगि लगा देलापर ओ सभ बचि सकैत अछि, हरिवंशकेँ फुरयलैक आ मन भेलैक जे ओहि लड़काकेँ ई बात कहैक। लड़का बड़ उदास छलैक।

गाड़ीसँ कूदि क' भागि जायब असंभव छलैक। मगर खिड़की छड़सँ बेढ़ल रहैक आ गेटपर सिपाही छलैक हरिवंश अनुमान करैत रहलैक जे कोन ठाम कुदलासँ कम जरब हेतैक।

ओकर सभक भोरमे पेशी भेलैक। हरिवंश सोचैत रहलैक जे मजिस्टेटकेँ की कहतैक। जँ कोनो दमगर सफाइ ओकरा भेटि जइतैक। भेटियो जेतैक त' मजिस्टेट विस्वास करतैक ? भ' सकैत छलैक। मुदा, ओकरा भरोस नहि रहैक। संभव छलैक मजिस्टेट इमानदार आ साँच जवाबपर विश्वास क' लेतैक। मुदा एहिसँ बेसी सत्य आरो की छलैक जे ओकरा पाइ नहि रहैक आ तेँ ओ टिकट नहि कटा सकलैक ? एकरा केओ नहि मानतैक, ने विश्वास करतैक। से रहितैक त' ओकरा पकड़ले किएक जइतैक ? मजिस्टेटकेँ ई सभ कहलासँ कोनो फायदा नहि रहैक।

हरिवंशकेँ जहल भ' गेलैक। पेशीक औपचारिकता जल्दिए खतम भ' गेल रहैक। कोर्टमे मामूली कार्यवाही टीशन परक एकटा कोठलीमे चलल रहैक। मजिस्टेट चौकीपर धएल टेबुल-कुर्सीपर बैसल छलैक आगाँमे राखल कागत-पत्तर पर मूड़ी झुकौने छलैक। हरिवंशक पेशी भेलैक तखनो मजिस्टेट ओहिना मूड़ी झुकौने बैसल रहलैक। कनी कालक बाद कनडेरिये आँखे ओकरा देखलकैक आ पुछलकैक जे ओ किएक पकड़यलैक। ओ जबाब देब शुरू कयलकैक तँ देखलकैक मजिस्टेट किछु लिख' लागल छलैक। हरिवंश चुप भ' गेलैक। ओ जान' चाहैत छलैक जे ओकरा कतेक दिनक सजा देल गेल रहैक। मुदा मजिस्टेट फेर घूरि क' ओकरा दिस नहि तकलकैक आ ओ चुपचाप पुलिसक संग विदा भ' गेलैक। किछु गोटे घड़ी आ औंठी बेचिक' छूटि गेलैक। मजिस्टेट एकटा तेरह-चौदह सालक बच्चाकेँ छोड़ि देलकैक जे पेशी होइते ठोह पाड़ि क' कान लागल रहैक जेना एखने अपन कोनो आत्मीय लोकक ओकरा सोग भेल होइक।

बेरूपहर चारि बजे ओहि सभकेँ जेल पहुँचा देल गेलैक। हरिवंशकेँ

उमेद नहि रहैक कहियो जहल जाय पड़तैक। आब छूटब अनिश्चित छलैक। ओ अपन पता-ठेकान सेहो गलत लिखा देने रहैक। जँ रघुवंशकेँ ओकर नकली पता-ठेकान मालूम नहि भ' सकलैक तँ नहि जानि ओकरा कतेक दिन जेलमे सड़य पड़तैक। कालेजो नहि जा हेतैक। जाहि छुट्टीकेँ ओ गाममे बितब' चाहैत छल से एत' आबि क' आब बरबाद भ' गेल छलैक। ओत' सभ सुनतैक तँ पता नहि की कहतैक ?

ओहि सभकेँ जखन भीतर आनल गेल रहैक तखत साँझ पड़ि रहल छलैक। ओहि सभक गनती लेल गेलैक। कनीकालमे खेबाक घंटी बजलैक आ लोकसभ टिनही थारी लेने उपरौंझ कर' लगलैक। हरिवंश तखन नहि बूझि सकल रहैक जे लोक किएक एना उपरौंझ करैत छलैक। टूटल-पचकल आ मैल टिनही थारी देखि ओकरा वितृष्णा भेलैक। ओ बासिये मुँहे छल आ पेट जरि रहल छलैक। ओकर बिन टिकटवाला किछु संगी सभ टिनही थारी लेने बारीक लग ठाढ़ भ' गेल छलैक। ओ बड़ी कालधरि ढ़ाठल आदमी जकाँ ठाढ़ रहलैक। फेर टिनही थारी उठा लेलकैक।

पाँच बजे ओहि सभकेँ एकटा कोठलीमे ढुका देल गेलैक। सिपाही गनती लेलकैक आ ताला मारि क' चलि गेलैक। हरिवंशकेँ भेलैक जेना ओ एकाएक खाली आ एकसर भ' गेल होअय। ओकरा जेलमे हेबाक तीव्र बोध भेलैक जे बहुत उदास बना देलकैक। जेलक बाहर कतहु संगीतक डूबल आवाज आबि रहल छलैक। हरिवंश सोचैत रहलैक जे ई सभ की छलैक आ कोना भ' गेलैक।

कोठलीमे लोक बोरा जकाँ गड़ँछल रहैक। कोठलीमे औनाइत गूँह-मूतक दुर्गन्धसँ थोड़बे कालमे हरिवंशक माथ भारी हुअ' लगलैक। कैदी सभकेँ बारह घंटा धरि कोठलीमे बन्द रह पड़ैत छलैक। निकासक कोनो दोसर रस्ता नहि छलैक। दुर्गन्धसँ बचबा ले' हरिवंश सूत' चाहैत छलैक। लेकिन निन्न नहि जानि कत' रहैक आ नहि अयलैक। लोक एक-दोसरपर चौंकल सन सूतल रहैक। एक्कोटा कम्मल ओढ़ने जाड़ कटि सकैत छलैक। खाली करोट फेरनाइ कठिन रहैक। हरिवंश बैचेन भ' गेलैक। ओकरा चिन्ता भेलैक पता नहि कखन भोर हेतैक। कातमे पड़ल बिन टिकटवला ओकर एकटा संगी ठुनकय लागल छलैक। हरिवंशकेँ तामस उठलैक। कने कालक बाद ओ ओकरा परबोधबाक कोशिश कयलकैक। ओ कनैत रहलैक, फेर अपने चुप भ' गेलैक।

जेलमे बिन टिकटवलाक कोनो मोजर नहि रहैक। आन कैदीक लेल ओ सभ दयनीय आ तुच्छ छलैक। ओ सभ झमान आ उदास रहैत छलैक। आन कैदीसँ बेरल जे अपना लेल जेलोमे छोट-छोट सुख आ संतोख सिरजि लैत रहैक। ककरोपर रोआब झाड़ब, एकटा बीड़ीमे ककरोसँ जता' लेब आ खेखनी कयलोपर कोनो चीज नहि देब—जेलक दुनियामे एहने घटना सभ सरसता अनैत छलैक आ ओकरा ठेलने जा रहल छलैक। हरिवंशो एकटा बीड़ीक आसमे कतेक बेर ने सेट लग बैसल एकटक ओकरा निश्चिन्त भ' क' बीड़ी पिबैत देखने रहैक। गाम-घर आ कौलेजक दुनिया हेराय-बिसराय गेल छलैक। हरिवंश जेलमे कोनो काज नहि करैत छलैक। संगक तीनटा टाका ओकरा जत्ता पीस' सँ बचा लेने रहैक। जाड़क दिन बितायब ओतेक कठिन ह नहि छलैक। पड़ल रहबामे, ताशक खेल देखबामे आ बीड़ीक ताकमे दिन बीत जाइत रहैक। सामनेवाला फाटकक ओहि कात जनाना कैदी छलैक। बीड़ी आ तेल साबुन फ लेल ओ सभ रोज नव-नव तरीकाक आविष्कार करैत छलैक। ओहि सभक कनखी मटकी आ बेपर्द कयल जाँघ छाती देखबामे सेहो किछु समय कटि जाइत रहैक। झोटहा सभकेँ कहियो काल सिपाही सभसँ बीड़ी आ खैनी भेटि जाइक। तेल साबुन मेटेसँ भेटि पबैक।

हरिवंशक लेल राति बितायब भारी भ' जाइत रहैक। देवालक ओहि पार दोसरे दुनिया छलैक। खुला धरती आ आकाशवला दुनिया। अनेक रूप रंगक ओहि दुनियामे हलचल आ गति रहैक। देबालक भीतरवला दुनिया थमकल आ औनायल छलैक। ओ कतेक बेर ने संकल्प कयलकैक जे आब बिन टिकटक कतहु नहि जेतैक। कहुना एहि ठामसँ ओकरा छुट्टी टा भेटि जाइक। बिन टिकटवला आन संगी सभ ओकरे जकाँ संकल्प करैक आ सोचैक जे एक ने एक दिन जल्दिए ओ सभ छूटि जेतैक। जे जेलसँ छुटैक तकर ओ सभ नेहोरा करैक आ ओकर बोल पर भरोस क' केँ प्रतीक्षा करैत रहैक जे कहियो गाम धरि समाद वा चिट्ठी जरूर पहुँचि जयतैक।

क्रिसमस बीत गेलैक। आब ओकर कौलेज छुटि रहल छलैक। तखने एक दिन रघुवंश अयलैक आ ओकर जुरमाना भरलकैक। हरिवंश फेरसँ बाहरक हवा आ इजोतमे आबि गेल रहैक। मुदा जेलक चिल्लड़ आ जीर्णताकेँ ओ संग लेने आयल छलैक। रघुवंश ओकरा होटल ल' गेलैक। चाह आ सिगरेट पिऔलकै। गलत पता ठेकानक कारणो रघुवंशकेँ भटक' पड़ल रहैक आ बहुत

रास पाइ खर्च भ' गेल छलैक। स्टेशन पहुँच' धरि रघुवंश ओकरा पछिला सभ घटनाक जानकारी देलकैक। आब जतेक पाइ बचल रहैक ताहिमे ओ सभ गाम नहि पहुँचि सकैत छल। गाम बहुत दूर छलैक। दूटा गाड़ी बदल' पड़ितैक। ओ सभ कने काल प्लेटफार्म पर टहलैत रहलैक। सुनलकै जे अखनुका गाड़ीमे चेकिंग नहि छैक। ओ दुनू टिकट बिआ कोनो गप्प नहि कयलकै। जा क' गाड़ीमे बैसि रहलैक। रघुवंश चुप छलैक। हरिवंश चिल्लड़ फड़ल काँखकेँ कुरिऔलकै आ जोड़लकै जे बिन टिकटे गाम पहुँचि गेला पर जुरमानावला कतेक पाइ सधि जेतैक।

१९७९

महिमा

सुखदेव सँझुका ट्रेनसँ आबि गेलै। एक मासक लगधग रहल होयतै जेलमे। मीटिन करैत काल पुलिस पकड़ि लेने छलै। ओकर पकड़यबाक खबरि सौंसे गाममे बिड़रो बनि गेल रहै। नरकटियाबालीकेँ लोक सभ बाइस रंगक गप्प कहलकै। तैयो ओ कानलि-खीजलि नहि। ई सुखदेवक कोनो नव किरदानी नहि छलै। ओ थोड़े दिन धरि नक्सली सेहो रहै' आ सरकारी बान्ह काटबाक कारणेँ एक बेर पहिनो आठ दिन जेलमे गमा आयल रहै। लड़ाई-झगड़ाक तँ कोनो गनतीये ने। नहि क्यो भेटै तँ नरकटियोबालीकेँ धुमधुमा दै। भोटमे कतेक गोटेसँ ने टाका ठकने होयतैक। लोककेँ आतरज होइ जे अछरकटुआ होइतो कोना एते पाइ कमालैत छै।

भवनाथ गाममे सभसँ काबिल बूझल जाइत रहै। नरकटियाबाली आबि क' सभ हाल ओकरा कहलकै। भवनाथ कहलकै जे सुखदेव मीसामे पकड़यलै आ बोल-भरोस देलकै जे जल्दीए छुटि जयतै। नरकटियाबाली देखि आब' ले' नेहोरा कयलकै। मुदा, भवनाथ टारि देलकै जे ओ असकर नहि छै, ओकरा संगे उनैस-बीस गोटे पकड़ायल छै।

नरकटियाबाली पनरह दिन धरि आस-पेरा देखैत रहलै जे आब अयतै तब अयतै, फेर भवनाथ लग अयलै। कहलकै —'लोक सभ कहै छै जे ओइ बेर आठे दिन मे छुटि गेल रहै मुदा अइ बेर खूब घी-खिचड़ी खाय पड़तै। लोक सभ हमर हँसी उड़बैत-ए आ धधौआ धधायल फिरैए।'

नरकटियाबाली नहि मानलकै तँ भवनाथकेँ सहरसा जाय पड़लै। सुखदेवक देह-दसा नीक भ' गेल छलै। ओ कहलकै जे जेल में कोनो तरहक तकलीफ नहि

छै। एमेले सेहो पकड़ायल छै। एमपी सभ भेंट-घाँट कर' आबिते रहैत छै। तेँ जेलर डेराइ छै। एक-दू दिनमे हाइकोटमे फाइल पुटप होयतै, तकर बाद छूटि जयतै।

मुदा, भवनाथसँ भेंट भेलाक बाद सुखदेवकेँ चौदह-पनरह दिन आर लागि गेलै।

सुखदेव जेलसँ आनल एक मोटा नुँआ-बस्तर भवनाथकेँ देवबैत रहलै। तीन पल्ला खादीक धोती, तीनटा अंगा, गोलगला, पेंट, मोफलर, कोट, कम्मल। लोक जमा होइत रहलै आ नुँआ-बस्तरकेँ छूबिक' नापिक' देखैत रहलै। सुखदेव ओकरा सभकेँ बुझबैत रहलै जे जेलमे कतेक सुख रहै, कतेक घी, कतेक दूध, माँछ-माँस, चाह-साबुन आ पाकिट खरच भेटैत रहै। केना चोर सभकेँ एक-एकटा बीड़ी पियाक' पहर पहर राति घरि जँतबैत रहै। सुकनाक आङनवालीकेँ कहलकै जे सुकनो आरकेँ गेल रहितौ तँ कतेक फैदा मे रहैत। सभ परानी निचेनसँ ई जाड़ खेप लैत। 'डरे नुकायल रहलासँ थोड़े होइ छै किच्छ।'

तीन-चारि दिर धरि सुखदेवकेँ अपन अनुभव सुनबैसँ पलखति नहि भेटलै। लोकसभ अँटकर लगबैत रहलै जे नहियोँ तँ चारि सयक कपड़ा होयतै। भवनाथ लग जे केओ अबै से सुखदेवक गप्प अवस्से करै। भवनाथकेँ कखनो सुखदेवक छल-कपट, झूठ आ बैमानी पर तामस उठै आ कखनो ओकर उपाइतसँ डाह होइक। फेर ई सोचि कचोट होइ जे ओ बहुत पाछू छुटि गेल अछि।

१९७५

रामनिहोर

ओ ठाढ़ छल जेना ककरो तकैत हो। भुट्ट आ थुलथुल होइतो चारि-पाँच दिनक दाढ़ीक कारणेँ ओ रुग्ण सन लगैत छलैक। पैंट, शर्ट आ चप्पल ओएह छलैक जे पहिरने ओ मेसमे हेल्परक काज करैत रहैत छल। ओकरा हाथमे मनीआर्डर फार्म देखिक' हमरा भेल जे पोस्ट ऑफिस खुजि गेल होयतैक। ओकरा फार्म भरयबाक छलैक। पोस्ट ऑफिस ऊपर फर्स्ट फ्लोर पर छलैक। हम ओकरा अपने संग आब' कहलिऐक। तखन दस बजैत रहैक। हमरा दुनूक रहितो सभ किछु शान्त आ बिरान छलैक।

रामनिहोर। ई ओकरे नाम होयतैक। मनीआर्डर फार्म भरैत हम सोचने छलहुँ। एहिसँ पहिने मेसक नित्तह भीड़मे ओकर नाम जनबाक जेना कोनो अर्थ नहि छलय। ओना, नाम बूझल रहलासँ कोनो चीज मङबा ले' हाक पाड़'मे सुविधा होइत। मुदा, सभ हेल्परक नाम जानब आ मोन राखब कठिन।

ओहि दिन रामनिहोर धन्यवाद द' क' चल गेल रहय। तेसर दिन मेसमे नाम ल' क' नमस्ते करैत देखि हमरा आश्चर्य भेल जे ओ हमर नाम कोना जानि गेल। कोनो आन हेल्पर हमर नाम जनैत हो, ई असम्भव-सन छल। फेर के कहने होयतैक? ओकर एतेक रुचि लेबापर विस्मय होइत रहल। बादमे जत'-तत' भेँट भेलापर रामनिहोरक नमस्ते कयनाइ हमरा लेल स्वाभाविक बनि गेल रहय।

ई एकटा संयोगे छलैक जे अगिला मास ओकर मनीआर्डर फार्म फेर हमही भरलिऐक। पता ओएह छलैक जाहिसँ सोचल जा सकैत छल जे ओ फैजाबाद

जिलामे कोनो स्त्रीकें प्रतिमास दू सय टाका पठबैत होयत।

पता नहि, कतेक मास बीतल होयतैक। मेसमे ओ सभ दिन एके रंग व्यस्त रहैत छल। "की हाल ?"—एक दिन मेसमे कम भीड़ छलैक तँ हम ओकरासँ पुछने छलिऐक। "गाम गेना बहुत दिन भ' गेलै। मोन छटपटाइत अछि।"—ओ कहने छल। ओकरा ई सोचि आश्चर्य होइत छलैक जे लोक कलकत्ता-बम्बैमे कोना दू-दू तीन-तीन साल धरि बिना गाम गेने कमबैत रहैत छैक।

एक दिन बड्ड रौद रहैक। बसक आस-पेरा देखैत-देखैत हम एकटा किताब पढ़ब शुरू क' देने छलहुँ। रामनिहोर आबिक' पाछाँ ठाढ़ भ' गेल। नमस्ते कयला पर हम पुछलिऐक जे ओ कत'सँ आबि रहल अछि। "सेन्ट्रल स्टोरसँ।" कहि क' ओ चुप भ' गेल छल। फेर बाजल रहय—"छुट्टी भेटि गेल। दस दिनक। दसकें जायब।" ओकर कहबाक ढंग ततेक टूटल आ विच्छिन्न छलैक जे हम तुरंत पुछलिऐक कतहु ओ बेमार तँ नहि अछि। ओ ओहिना निर्विकार आ निरलस भ' क' हमर शंकाकें अस्वीकार क' देने छल।

—"अहाँ लग होल्डाल हैत ?" थोड़े कालमे ओ पुछने छल।

—"छै तँ। मुदा दू ठाम फाटल छै।"

—"हम सिया देबै। पैंच छै कि नहि ?"

—"देखि लिहक। ठीक होइ तँ ल' लिह'।" कहि तँ देलिऐक, मुदा हम अनिश्चयमे छलहुँ।

ओकर अपन होल्डाल छलैक आ बहुतरास चीज ल' जयबाक छलैक। ओकर एहि बहुतरास चीज पर हमरा सन्देहो भेल छल। कतहु फेर घुरिक' अयबे ने करय! मुदा, होल्डाल सिया जायत, ई विचार द' देबा लेल प्रेरित कयने छल। पाइ आ आसकतिक कारणें होल्डाल डेढ़-दू सालसँ फाटल पड़ल छल।

रामनिहोरसँ बस अयबा काल धरि गप्प भेल छल। ओकरा माय नहि छलैक। गाममे बाप, पत्नी आ दूटा बच्चा छलैक। कच्चीसँ आठ बिगहा खेत छलैक। मोकदमाक कारणें कर्ज भ' गेल छलैक। किछु जमीनो सूदिभरना लागल

छलैक। तें ओ नोकरी क' रहल छल। ओकरा जे उमेद छलैक दू सालमे जमीनक झंझटि आ सभटा कर्ज सधि जयतैक।

आइ कैलेंडरमे तारीख देखैत अकस्मात हमरा रामनिहोर मोन पड़ि गेल अछि। एखन साँझ पड़लै अछि। फाटल-पुरान होल्डाल ले' हमरा एतेक चिन्तित नहि होयबाक चाही। ओ राति धरि आबि सकैत अछि। नहियो औतैक तँ की होयतैक ?

१९७५

लिफ्ट

ठाढ़ भेल-भेल मनोजक टाँग लोथ भ' गेलै, मुदा बस नहि आयल रहै। होइ जे आब एतै, इएह आब"'। कान पाथने गोंगिआइत-घड़घड़ाइत आवाज सुनै। लगै, बसे आबि रहल छैक ! आवाज तेज आ लगिचायल जाइक। लेकिन नहि ! ट्रक रहै जे बरकल अलकतरापर चरचराइत निकलि गेलै। ट्रक नहि होइत तँ कार वा लॉरी होइतै। कखनिएँ सँ ने इएह भ' रहल छलै। मनोज भरिगर निसाँस छोड़लकै। पीठसँ गाछपर जे भर देने रहै से मन भेलै, ससरिक' धरतीपर पोन रोपि देअय। ट्रकक छोड़ल खरायल धुइयाँसँ साँस अटक' लगलै।

गरमी सभ टा तागत जेना दूहि लेने रहै। किछु बजबाक इच्छा नहि होइ। लोकसभ चुप आ बसक लेल व्यग्र छल।

इनभरसिटी लग ठाढ़ मनोजकें आध कोस दूर होस्टल जयबाक रहै। मोटर साइकिल आ स्कूटरवला किछु लड़का जा चुकल छल; किछु आब चलल जाइत रहै। मनोज एक बेर लिफ्ट लेबाक कोशिश केलकै, मगर तखने एकटा लड़कियो बढ़ल आ बैसिक' चल गेल।

सभ चीज स्तब्ध आ सुनसान रहै-पत्ता''सड़क""। मनोजकें बुझयलै जेना स्नायु सभ सुस्त आ शिथिल भ' गेल होइ। गरमी ओकरा आँट आ खिन्न क' देने रहै।

एक टा आसमानी रंगक कार आबि रहल छलै। मनोजक कातमे ठाढ़ लड़िका आगू बढ़ि क' हाथ देलकैक। कार रुकैत देखि मनोज बढ़ल। जगह रहै आ लिफ्ट भेटि सकैत छल। आन लोक जे लिफ्ट लेल दू-चारि डेग बढ़ल छलै, आब ततमता गेल रहै।

कार चललापर मनोजकें आफियत बुझयलै। हवाक सिहकीसँ ओकर अर्द्धसुप्त आ म्लान अवस्था टूटि रहल छल। ओ स्फूर्ति आ चैतन्य अनुभव कयलक।

महिला एकाग्रतासँ कार हाँकि रहल छल। कातक अधबयसू आदमी चुप बैसल रहै। दुनू प्रोफेसर हेतै—मनोज सोचलक। स्त्री स्वस्थ आ सुन्दर रहै।

गद्दादार सीट मनोजकें बहुत मोलायम आ आरामदेह बुझा रहल छलै। सड़क निर्जन रहै; कोनो अवरोध, कोनो रुकावट नहि, जेना ओ दोसरक उपयोग लेल बनले नहि होइ। कार मद्धिम आ एकरस जा रहल छल। झोल आ जरबक नामो नहि। गुमसड़.इन बसक भीड़सँ ई कतेक भिन्न आ नीक रहै! मनोजकें एक टा रूमानी सुखक अनुभूति भेल। कार, स्त्री, बिरान दुपहरिया, मंद-मंद लगैत बसात—ई सभ विलक्षण आ अविस्मरणीय बुझयल। भेलै जेना बादमे एकर स्मृतियो ओकरा सुख देतै।

मनोज स्त्री दिस तकलकै। ओ उज्जर सादा लेबास पहिरने रहै। चेहरा सौम्य आ शान्त छल।

'ई स्त्री कतेक सुन्नरि आ गुणवती छै !'—मनोज आवेगपूर्ण ढंगसँ सोचलकै जइमे अभिलाषाजन्य पीड़ा छल।

प्रोफेसर सभक बंगला देखाय लगल। तकर सटले ओहि कात होस्टल। मनोजकें भेल जेना कार बहुत जल्दी पहुँचि गेल।

अधबयसू आदमी उतरि गेल। भरिसक ओकर बंगला आबि गेल रहै। ओ बिदा मङलकै। मिसेज कपूर सौजन्यक लेल मुस्कुरयलै आ माथ हिलाक' स्वीकृति देलकै।

गाड़ी फेरसँ चलल तँ मिसेज कपूरकें थकनी बुझयल। डहलहा पेट्रोलक धीपल गंध अलसा देने छल। आरामकुर्सीपर कने काल फैलसँ बैसतै आ ताजा हवा भेटतै तँ ठीक भ' जयतै। ओ अनिच्छासँ मनोज दिया सोचलकै जे एखनो पछिला सीटपर बैसल रहै। मनोज ओकरा सोहायल नहि छल। रंग-रूप अरुचिकर आ अभद्र बुझायल रहै। तइपरसँ कोना गोंग जकाँ कारमे आबिक' बैसि गेल रहै! एखन जे ओ टाङ पसारिक' ओङठल छल, से मिसेज कपूरकें अशिष्ट आ अनसोहाँत लगल। दिवाकरो तँ पाछुए बैसल छल, मगर कतेक शालीनतासँ !

मिसेज कपूरक बंगला आबि गेल। तीन-चारि लग्गा बाद होस्टल छल। कारसँ उतरि दिवाकर विनम्र भावेँ मिसेज कपूरकेँ धन्यवाद देलकै।

मनोज मिरमिरयलै—"धन्यवाद !" आ चलि देलकै।

कुढ़मगजी आ अवढंगपनीक ई चरम सीमा छलै। मिसेज कपूरक देह जरि गेल। ओकर चोटकल मुँह, बगय आ रंग-वलिक सम्पूर्ण व्यक्तित्व मिसेज कपूरकेँ घृणास्पद बुझयलै। मुदा, कोनो मुरुख-गँवार जकाँ अपन क्रोध आ घृणाक इजहार ओ नहि क' सकैत छल। ओकर अपन एक टा सीमा आ ढंग छल जे सोझ आ तात्कालिक नहि रहै।

मिसेज कपूर पाछूसँ बजौलकै तँ मनोजकेँ आश्चर्य भेलै। दिवाकरो सम्भ्रममे ठाढ़ भ' गेलै। मिसेज कपूर मनोजसँ नाम आ कत' की पढ़ै छै, अंग्रेजीमे पुछलकै। ओकर रुच्छ स्वरपर मनोजक ध्यान नहि गेलै आ भेलै जे ओकरामे कोनो एहन विलक्षणता छै जे मिसेज कपूरकेँ आकर्षित कयलकै अछि। ओ उत्सुकता आ स्पष्टताक संग जबाब देलकै। मगर मिसेज कपूरकेँ ओकर आवाज टाँस आ अवांछनीय बुझयलै।

'दिवाकरकेँ हम जनैत छिऐ आ ओ बिन पुछनहुँ चढ़ि सकैत छै, लेकिन तोँ? ई कोनो भाड़ा-गाड़ी नहि छिऐ जे जत' मन भेल रोकि लेलहुँ आ चढ़ि गेलहुँ !'—मिसेजक कपूरक तिक्ख आ कुटकुटाह बोलसँ मनोज जेना ऐंचि क' रहि गेलै। ई बात ओकर आस आ कल्पनाक ततेक विपरीत रहै जे ओकरा भेलै, जेना क्यो मुँह दूसि रहल छै।

'अफसोस, पूछि क' नहि चढ़लहुँ !'–ओ माफी मङलकै।

बंगलासँ बहरा गेलापर मनोज अपमान आ दुखक उत्तेजना अनुभव कयलकै। दिवाकरसँ, जे संग-संग होस्टल जा रहल छलै, ओ मिसेज कपूरक नाम-ठेकान पुछलकै; हालाँकि ओकरा पता नहि रहै जे एकर ओ की करतै।

दिवाकर आदिसँ अन्त धरि चुप छलै। मनोज एखन जे-जे पुछलकै, तकर ओ अत्यन्त जरूरी आ संक्षिप्त जबाब देने रहै। मनोजकेँ भेलै जेना ओ उठल्लू भ' गेल हो। दिवाकरक चुप्पी ओकरा बेबरदास्त बुझयलै।

'तँ इहो हमरा भकलोल बूझि रहल छै !'—ओ व्यंग्यपूर्ण ढंगसँ सोचलकै।

असलमे हाथ देलापर जखन कार रुकल छलै, तखने दिवाकरक पाछू लागल ओहो सवार भ' गेल रहै। अलगसँ पुछबाक बेगरता नहि बुझायल रहै जेना दिवाकर ओकरो प्रतिनिधित्व क' देने होइ। मगर दिवाकरसँ मिसेज कपूरक परिचय सभ किछु गड़बड़ा देलकै। मनोजकेँ अपन मानसिक निश्चेष्टतापर पछतावा भेलै—ओ किएक नहि पूछि लेलकै !

लेकिन नहिएँ पुछलकै तँ कोन अनर्थ भ' गेलै ? कैक टा तँ कारण भ' सकैत रहै। मिसेज कपूर से कहाँ सोचलकै ? जँ साँचे भल कर' चाहितै तँ मनोजकेँ पहुँचा देलापर ओकरा आत्मिक संतोष होइतै; तखन पुछनाइ नहि पुछनाइ महत्वहीन होइतै। ओकर परोपकार खाली अपन प्रशंसाक क्षुद्र आकांक्षासँ प्रेरित नहि छलै ? मनोज जतेक तर्क करैत गेलै, मिसेज कपूर ओकरा ततेक नीच आ स्वार्थी बुझयलै। ओकरा लेल ई सोचि पायब मुश्किल छलै जे आज्ञा नहि माङिक' मिसेज कपूरक महत्त्व आ स्वामित्व-बोधकेँ ओ कतेक निराश आ आहत क' देने रहैक।

१९८०

संकेत

दू घंटा पहिने ओ टैक्सीसँ उरतल तँ ओकर मित्र वार्ड सर्भेंटकेँ हाक पाड़ि सामान दोमहलापर रूम नम्बर नाइनमे पठबा देने छलैक। वर्किंग-डे केँ होस्टल साढ़े नओ बजेसँ खाली होब' लगैत छैक। गनल-गुथल किछु ट्यूशनियाँ मास्टर रहि जाइत छैक। रूम नम्बर नाइनमे छओ टा सीट छैक। दू टा स्कुलिया मास्टर दू टा ट्यूशनियाँ, एक टा असिस्टेंट इंजिनियर आ अन्तिम ओकर मित्र। ओ अबिते ट्यूशनियाँ मास्टरसँ बहसमे बाझि गेल छल। मित्र मना क' देलकैक तँ चुप भ' गेल। चौकी तर राखल बक्सासँ लुंगी आ साबुन बहार कर' लागल। मित्र कहलकैक जे ओसभ मूर्ख जकाँ कोनो बात पर अड़ि जाइत अछि। तेँ बहस करब नीक नहि।

इंजीनियरवला सीटपर बिछाओन तहिआयल छलैक। मित्रसँ ओकरा ज्ञात भेलैक जे इंजिनियर अकस्मात् अपन बेमार बेटाकेँ देख' चल गेल छैक आ कखनो घूरि सकैत अछि। ओ बड़ा रिजर्व-टाइप लोक अछि आ सभ वस्तुकेँ मनोनुकूल देख' चाहैत अछि।

लुंगी साबून लेने बाथरूमबला पैसेजमे आबि ओ तकलक। दिवस मेघौन छलैक। राति भरि वर्षा होइत रहल छलैक। गलीमे एखनो भरि ठेहुन पानि लागल रहैक। फेंसपर केहुनी राखि ओ मुक्त था संभावनासँ भरल मेघकेँ महसूस कर' चाहलक। 'एक टी छेड़े दीन' मेसक बंगाली नोकर फदफदयलै। पैसेज संकीर्ण छलैक। ओकरा फेंसपर बेसी झुक' पड़लैक (हवसि पड़बाक डरेँ ओकरा देह पर भुलकि गेलैक। ओ तेजीसँ बाथरूममे ढुकि गेल।

सीलिंग फैन फुल स्पीडमे हहाइत रहैक। कपड़ा बदलैत ओकरा कँपकपी शुरू भ' गेलैक। ओ मित्रकेँ फैन बन्न क' देब' कहलकैक। मित्र असमंजसमे पड़ि गेलैक। भरिसक ट्यूशनियाँ मास्टर पंखा खोलने होयतैक। ओ किछु सोचि मित्रकेँ मना क' देलकैक।

राति नओ बजे धरि ओ मित्रक संग होस्टल घुरि आयल। विस्थापति भेल सामान देखि ओकरा लगलैक जेना इंजिनियर आबि गेल होइक। ओ मित्रसँ पुछलक। मित्र ओकर संदेह दूर करैत कहलकैक जे सामान ककरो उपयोगमे आयल होयतैक। 'बेड बिछा ले, इंजिनियर आब अयबो करतैक तँ भोरे।' —मित्र सलाह देलकैक। ओकरा इंजिनियरेक बेडपर सुतबाक रहैक।

'भोरे के बिछाओन बदलय ?'—ओ बाजल।

'उठि जैहें। अइमे की छै ?'—ओकर मित्र किछु खिन्न भ' गेलैक।

इंजिनियरक बिछाओन तहिअयले छोड़ि ओ अपन बेड बिछा लेलक। बिछाओनपर पड़िते ओकरा लगलैक जेना देहमे कोनो जान नहि हो। करोटो फेरबाक साहस नहि रहि गेल छलैक। दिन भरि बस, ट्राम आ फुटपाथ परक भीड़सँ दाबल-पीचल गेलापर ओ गारि दैत रहल। दबाबक स्मरण करैत ओकरा ई बिछाओन अत्यधिक सुखद आ प्रिय बुझयलैक।

थोड़े कालक बाद ओकरा खोँखी होमय लगलैक। ओ रूमसँ बाहर भ' गेल। खोंखी लरम भ' गेलैक।

'पंखा चलैत छैक, तेँ खोँखी होइत छौक।'—मित्र लग आबि बजलैक।

ओ चुपचाप ठाढ़ रहल। मित्र आपस भ' गेलैक आ करीब बीस मिनटक बाद फेर आबि पुछलकैक—'सुतबिही नहि ? केबाड़ बन्न कर' पड़तैक।'

सात बजे भिन्न टुटिते अपनाकेँ सीटपर सुरक्षित पाबि कोकरा आफियत भेलैक। इंजिनियर कखनो आबि सकैत छैक। ई सोचि ओ बेड समेटि चौकी तर राखि देलक।

बेरमे ओ होस्टल घुरल तँ एक गोटाकेँ बैसल देखि भेलैक जे ओ आबि गेल छैक। मुदा, ककरोसँ पुछनक नहि आ फेर चल जाइत रहल।

रातिमे आधा पसरल बिछाओनपर ओंघरायल व्यक्तिकेँ देखि ओकरा फेर संदेह भेलैक।

'इएह थिकैक की ?'—ओ मित्रसँ पुछलक ।

'ओ नहि थिकैक । ओकरा उठ' दहिक तँ बेड बिछा लिहेँ । ओना क्यो सूति रहतौक ।'--मित्र निदेश देलकैक ।

ओ ओकरापर टक लगओने रहल जे ओ कखन उठतैक । ओ बड़ी कालक बाद उठलैक । ओकरा उठैत देखि ओ चौकी लग चल गेल । इंजिनियरक बिछाओन तहिऔलक । अपन बेड पसारल भ' गेलैक तँ बैसि गेल । ओकरा सोलहो आना लगलैक जे आइ भोर ओ चल औतैक । मित्र अखबारमे डूबल छलैक । ओकर ध्यान फेर अपनेपर फिरि अयलैक । भोरे ओ चल औतैक । आखिर ओ बेर-बेर एना किएक सोचैत अछि ?

१९७४

सहरसा दुपहर राति

एहि शहरकेँ लड़की छैक । डी०बी० रोड पर हाइस्कूल जाइत लड़की······ कॉलेज जाइत लड़की । सुभाष कनेक खुश होइत अछि । महाप्रकाशक भाव ओकर करिया फ्रेमक चश्मामे हेराय जाइत छैक । सुकान्त निरपेक्ष रहैत अछि । एहिना जाइत रहैत छैक छौंड़ी सभ । की देखल जाय, कोनो रूचि नहि । ओकरा चाही सिंगरहार ······लाल-लाल डंटीवाला फूल । ओहन राति नहि भेटैत छैक सहरसामे । ओ भोरकेँ मुरझायल फूल उठबैत अछि । मुदा एखनो ओहिमे सौन्दर्य छैक ।

सुभाष कोनो छौंड़ीक पीठपर जरैत सिगरेटक टुकड़ी फेकय चाहैत अछि । महाप्रकाश सड़कक कात थूक फेकैत अछि आ सुकान्तक ठोर पर एकटा मुस्की आबि जाइत छैक । हम सभ सोचैत छी जे उन्नैससँ ऊपरवालाकेँ गोली मारि दी: मुदा एहि शहरक जनसंख्या एखन ओतेक बेबर्दाश्त नहि भेल छैक । हम सभ रातिमे निरोधक फुकना बनबैत छी आ हँसैत छी ।

सुकान्त शहरक भीड़सँ भागय चाहैत अछि । सुभाष निर्णयहीन अछि—शहरक भीड़ आ एकांत । महाप्रकाशकेँ ओतेक सोचय नहि पड़ैत छैक । एकटा रिक्शा वा टमटम राति केँ दस बजे अबैत छैक आ ओ शहरक इजोतसँ दूर अन्हारमे गुम भ' जाइत अछि । सुकान्त ओ सुभाष कोनो उदास फिल्मी गीत गुनगुनबैत फेर भीड़ दिस बढ़य लगैत अछि । महाबीर चौक धरि अबैत, दूरेसँ एकटा रेकार्ड सुनाइ पड़ैत छैक—हो राजाजानी······होय-होय राजा जानी । दुनू गोटयकेँ हँसी लगैत छैक । सोचैत अछि महाप्रकाशक एकटा पैरोडी—जल गई खिचड़ी, फूट गई हाँड़ी······भरने गयी थी पानी····हो राजा जानी ।

ई शहर अपस्याँत रहैत छैक । भागाभागीक एकटा रूटीन्ड लाइफमे ।

दिनभरिक होहल्लाक बाद दुपहर रातिकें स्टेशन ओंघाय लगंत छैक। रोड पर चलैत सुभाष, महाप्रकाश आ सुकान्तकें हाफी होइत छैक।

रेलवे-क्रासिंगलग एकटा चाहक दोकान छैक।

कोनो कथा भ' सकैछ..........कविता ? सुभाष बेंचपर बैसैत पूछैत छैक।
महाप्रकाश पूबदिश तकैत अछि जतय भिखमंगा सभक मूनल आँखि पर आसमान ठहरि गेल छैक आ ओकरा भीतर अपन देश डूबय लगैत छैक।

सुकान्त चाहवालाक चेहरा पर एकटा दूरी नपैत अछि—आज नगद कल उधार। आ सभ सोचैत अछि कथा भरि गेल छैक। लिंग प्रदर्शन। सम्मिलित आक्रोश। जतय कवितासँ कोनो चूतिया राजनीतिज्ञ महत्वपूर्ण भ' जाइत छैक। लिंग-प्रदर्शन.....गलत प्रशासनक विरुद्ध लिंग-प्रदर्शन आ फेरभागमभाग। एकटा स्वस्थ दशाक लेल; सुभाष, सुकान्त आ महाप्रकाशक स्वस्थताक लेल एकान्त इजोरिया आ पियास।

हम सभ शहरक सामान्य गतिमे कोनो बाधा नहि दैत छिऐक। आँखि अछि, देखैत छियैक। उत्तर दक्षिण दिशामे दौड़ैत रेलक पटरी पर बैसल एक दोसराक दिस पाथर फेकैत रहैत छी। ई भेल आदिम मनुक्खक प्रवृत्ति। एक मित। मुदा, हमसभ आदिम मनुक्ख नहि बनय चाहैत छी, ने बनजारा सनक लाइफ। एहि शहरमे ई सभ संभव नहि छैक। रेलवे वेटिंग रूममे सूतल बनजाराक व्यक्तिगत जीवनमे ई शहर हस्तक्षेप क' देने छैक। एकटा मौगी चिकरैत रहैक भीड़कें चीरैत— लोक अपन साँइयो-बेटा लग नहि सूति सकैत अछि ? तोरा आर किएक घेरने छह। आ ओ गारि पढ़ैत रहैक। एहिठाम कतेको खूब-सूरत जवान लड़कीक देह पटरी बनि जाइत छैक। जकरा सुरक्षाक लेल भेजल गेल रेल पुलिसक असंख्य डिब्बा थकुचैत रहैत छैक।

हमरा सभकें चर्च लग पुलिस पकड़ि लैत अछि। मात्र एही लेल जे हम सभ रातिकें घूमैत छी। पुलिस दलील द' सकैछ —कहेंगे कुछ तो कहिएगा खचरई बतियाता है। भई, कैसे समझेंगे कि आपलोग भले आदमी हैं ? पहनावे से क्या फरक पड़ता है आदमी में।

सुभाष, सुकान्त आ महाप्रकाश एक दोसराक चेहरा देखय लगैत अछि। की फर्क पड़ैत छैक पहनावासँ ? की फर्क पड़ैत छैक शांतिरक्षक पुलिसमें आ कोनो लड़कीकें पटरी बना देब' वाला पुलिसमे। हमरा सभक आगाँ सलीब ठाढ़ भ' जाइत अछि। बहुत रास सलीब आ सलीब पर ठोकल ईसामसीह। हमरा सभ कतय छी ? ग्रेभ यार्डमे। श्मशानमे। कब्रगाहमे कतय छी हमसभ ? भई, थाना चलना होगा। पुलिस चिचिआइत अछि।

१९७२

सिकरेट

आइ भोरेसँ ओकरा सिकरेट पीबाक तीव्र इच्छा भ' रहल छलैक, मुदा पाइ नहि छलैक। एहिना जखन-तखन पाइ नहि रहैत छैक तँ ओकरा सिकरेट पीबाक मोन भ' जाइत छैक। पहिने ओकरा पाइ रहैत छलैक तँ ओ एतेक सबेरे सिकरेट नहि पीबैत छल।

ओ इच्छाकेँ जबर्दस्ती रोकबाक प्रयास कयलक, परंच ओकरा बुझयलैक जेना ओ असफल भ' रहल अछि। मोन बहटारबाक लेल ओ टेबुलपरसँ एक गोट पत्रिका उठा लेलक। दोसर वाक्य पढ़ैत-पढ़ैत ओकर ध्यान फेर सिकरेट दिस चल गेलैक।

'सिकरेट नहि पीबी'—हितैषी सभक कहल ई वाक्य मोन पाड़ि ओ पत्रिकामे मोन लगब' लागल। किछु कालमे ओकरा बुझयलैक जे ओकर माथ बड़ गर्म भ' गेल छैक। पत्रिकासँ ओकर ध्यान हँटि गेलैक। ओ अपनामे एक टा विचित्र तरहक तनाव आ घुटन अनुभव कर' लागल। ओ पत्रिकाकेँ जोरसँ टेबुलपर पटकि देलकैक आ कोठलीसँ बहार भ' गेलै।

अचानक सिकरेटक धुआँक गन्ध ओकरा नाककेँ लगलैक जकरा कारणेँ ओकर तलब आर बढ़ि गेलैक। ओ एम्हर-ओम्हर देखलक जे सिकरेट के पीबैत अछि। बगलवला किरायादारक नोकर नालीक कात बैसिक' लगही क' रहल छलैक। ओ देखलकैक जे ओकर दुनू आङुरक पोर सिकरेटक छोट होयबाक कारणेँ भरिसक जरि रहल छैक।

ओ सोचलक जे एकरेसँ एक टा माङि ली; कहि देबैक जे खुदरा पाइ नहि रहबाक कारणेँ नहि कीनि सकलहुँ, परंच एक टा नोकरसँ सिकरेट माङब ओकरा बेजाय लगलैक। नोकर उठिक' जाय लगलैक तँ ओकर इच्छा फेर बढ़ि गेलैक आ सभ इज्जति-प्रतिष्ठा ताखपर राखि ओ जोरसँ बाजि उठल—'हे, कनेक एम्हर आ तँ!'

नोकर आबि गेलैक तँ ओ लाजसँ दोसर दिस तकैत कहलकैक—'हमारा खुदरा पाइ नहि छल। तेँ सिकरेट नहि मङा सकलहुँ। तोरा छौक तँ एक टा द' दे। हम कीनब तँ तोरा द' देबौक।'

'सरकार, हम तँ मालिकक चौकी तरसँ अधकट्टी निकालिक' पिबैत छलहुँ', —ओ खेँखियाइत बाजल।

एतेक सुनिते ओ लाजेँ गड़ि गेलै आ तखन ओकरा खियाल अयलैक जे नोकर कतहु सिकरेट कीनिक' पीबय! ओ निराश आ हताश भ' क' घुरि आयल! ओकरा अपन एहि स्थितिपर तामस होब' लगलैक।

किछु काल धरि विचार-शून्य बैसलाक पश्चात् ओ बक्सा आ जेबीमे पाइ ताक' लागल, मुदा कयहु एको टा पाइ नहि भेटलैक। तखन ओ चौकीक तरमे अधकट्टी सिकरेट ताक' लागल, मुदा ओहो नहि भेटलैक।

ओकर मोन फेर एक बेर अशान्त भ' गेलैक। ओ सोचलक जे इच्छाकेँ दबयबाक नहि चाही। एहि तरहेँ इच्छाकेँ दबओलापेँ तँ ओ कोनो तरहक मानसिक काज नहि क' सकत।

ओ अपन हवाइशर्ट पहिरि पड़ोसियासँ पाइ पैँच लेबा लेल बिदा भ' गेल। पड़ोसिया नाकपर माछी नहि बैस' देलकैक। ओ घुरिक' अपन कोठलीमे बैसि रहल। कनेक काल धरि पड़ोसियापर मोने मोने तमसाइत रहल।

आब ओकरा बड़ जोरसँ पियास लागगि गेलैक। ओ 'बाथरूम' मे ढुकि पानि पीब' लागल। ओ पछता रहल छल जे ओहि पड़ोसियासँ तीने टा पाइ माङि लितय तँ कमसँ कम एक टा चार मीनार तँ भेटिये जैतैक अथवा ओहि नोकरसँ एक टा बीड़ी माङि लितय।

ओकरा लगपासक कोनो दोकानदार चिन्हितो नहि छलैक जे उधार दितैक। पयजामा पहिरिक' ओ एहि आशासँ चौक दिस बिदा भ' गेल जे ओत' तँ क्यो परिचित भेटिये जयतैक आ तखन ओ ओकरासँ सिकरेटक पाइ माङि लेत। रस्ता भरि ओ दोकान सभमे राखल सिकरेटक पैकेट दिस तकैत जल्दिये चौकपर पहुँचि गेल।

करीब नओ बाजि रहल छल क, तैयो ओकरा अपन कोनो परिचित व्यक्तिसँ भेँट नहि भेलैक। एक ठाम ठाढ़ भ' क' ओ आशान्वित दृष्टिएँ एम्हर-ओम्हर देख' लगलैक। अकस्मात् ओकरा एक टा विचार अयलैक जे दोकानपर जाक' ओ पहिने एक टा सिकरेट ल' क' सुनगा लेत आ तखन जेबीमे पाइ तकैत कहतैक जाह, पाइ त' बिसरि गेलिऐक। एतेक सोचिते ओकर छाती धक्-धक् कर' लगलैक आ एहि ऊहापोहमे पड़ल-पड़ल ओ दोकान धरि पहुँचि गेल। किछु काल धरि ओ अपन निश्चयकेँ दृढ़ करैत रहल, परंच ओकर मुँहसँ एको टा शब्द

नहि बहरयलैक।

ओ सोचलक जे नहि मानत तँ कलम द' देबैक। समस्याक एहन निदान सोचियोक' ओ ओहिना जड़वत् ठाढ़ रहल।

'की हौ, की ल' रहल छह ?'—एक टा परिचित स्वर ओकरासँ पुछलकैक।

'अरे, देखहक ने, सिकरेट लेबा लेल आयल छलहुँ, परंच जखन पाइ निकाल' लगलहुँ तखन मोन पड़ल जे पाइ तँ अनबे नहि कयलिऐक'—ओकरा आब विश्वास भ' गेलैक जे सिकरेट लेल पाइ भेटिये जयतैक।

—'बेस, कोन सिकरेट पीबह, ल' लैह।' ओ एक टा विल्स फिल्टर' सुनगओलक आ ओहि परिचितसँ कुशल पूछ' लगलैक।

१९६९

सुरंग

इएह सीढ़ी छिऐक जकरा टपि गेलापर शीलासँ भेंट हयत।

पहिल बेर ओकर फोटो देखने छलिऐक तँ किशोरी भाय कहने रहथि ई बीचबाली शीला थिकैक, बगलमे ओकर छोटभाय संतोष आ एक कात स्वयं। नहि जनैत छलहुँ जे किशोरी भायसँ शीलाक नेपथ्य कथा सुनलाक बाद हम एकटा उदास आ अवसादपूर्ण स्मृतिमे बेर-बेर भटकि जायब।

कतेक दूर लगैत छैक ओ दिन जहिया नित-दिन जकाँ शहरसँ असम्पृक्त अनुभव करैत किशोरी भायकें होस्टलक बासि रूममे शीलाक पहिल चिट्ठी भेटल हेतैक। कोनो पत्रिकामे भेटल पतापर ककरो लिखिकेँ आत्मीय बना लेबाक बात सही रहितो कतेक नाटकीय बुझाइत छैक।

किशोरी भायसँ ओहि पत्रक सारांश सुनैत हम सब वस्तुकेँ मूर्त्त कके सोचने रही जे शीलाक बूढ़ बापक एहने एकटा दोकान हेतैक जतय रोगग्रस्त रहितो ओ पाँच मजदूरक संग बैसि बीड़ी बनबैत रहैत हयत। पलथी मारि काज करैत रहबाक कारणें आकृति धनुषाकार भ' गेल हेतैक। बहुत संभव जे ओ बीड़ी पीबैत हयत। बीड़ीक निर्माणमे लागल ओकर आँगुर वाला लोहाक नोख खोंखी करैत काल काँपि जाइत हेतैक। कॉलेजमे पढ़ैत शीला आ संतोषकेँ ई कहैत लाज होइत हेतैक जे ओकर बाप बीड़ी बनबैत छैक। मुदा ओ सोचैत हयत ओहि दूनूक सर्किल सम्पन्न आ आधुनिक लोकक छैक। ओहि सर्किलकेँ एतेक फुरसति नहि छैक जे पूछय तोहर बाप की करैत छौक ?

ओकर सम्पूर्ण शक्ति आ श्रम बेटा बेटीक शिक्षा आ सर्किलक अनुरूप ... कायम रखबामे खर्च भ' जाइत हेतैक। शीलाक बियाहक बात सोचैत ओ

प्रत्येक बेर पाइक आगू पंगु आ पराजित होइत रहल हयत। बियाह नहि क' देबाक कारणें होइत अपन सामूहिक आलोचनासँ ओ भीतरे-भीतर कोना टूटैत गेल हयत।

सभ राति दोकानसँ घूरैत ओ शीलासँ आँखि बचबत अपन असमर्थताकें नुकबैत हयत। बाँस जकाँ बढ़ैत शीलाक देहयष्टिकें अस्वीकार करबामे ओ छटपटायल हयत आ नितान्त दयनीय एकान्त अन्हारमे बहुत दूर छूटि गेल सहभागी पत्नीकें मोन पाड़ि नोरक समुद्रमे डूबि गेल हयत। शीलाकें अपने सँ भय भेल हेतैक। एहने क्षणमे ओ किशोरी भायकें अपन आदर्श बियाहक व्यवस्था क' देबा लेल आग्रह कयने हेतैक।

किशोरी भायकें लागल हेतनि कतेक बोल्ड अछि ई छोड़ी? वैचारिक स्तर पर स्थापित कयल गेल भ्रातृत्व सम्बन्धक आदर्श हुनकामे अपूर्व उत्साहक संचार कयने हेतनि। बादमे शीलासँ रक्तसम्बन्धक हवाला दैत प्राइभेट फर्ममे काज कर'वाला इंजीनियरसँ गप्प कयने हेताह। नहि जानि ओ कोन मौसम रहल हेतैक जखन संतोषक संग शीला किशोरी भायक होस्टल बाला केबाड़ खटखटओने हयत। कोनो होटलमे व्यवस्था कयल गेल हेतैक। अगिला दिन इंजीनियर आ शीलाक आपसी साक्षात्कार भेल हेतैक। दुनू दिससँ स्वीकृति भेटि गेला पर शीला अपनाकें कतेक हल्लुक अनुभव करैत रहल हयत। एकटा दबल प्रसन्नता आ कान्ति चेहरा पर टिकि गेल हेतैक। फेर लंच आ पिक्चर।

बियाहमे सही स्थितिक जानकारी भेलापर इंजीनियरकें वैचारिक सम्बन्ध बहुत आधारहीन आ गलत लागल हेतैक। शीला आ किशोरी भायक अगिला समस्त क्रियाकलाप विपरीत अर्थ दिअय लागल हेतैक। दुनूक मुक्त निकटतासँ भेल सम्बन्धक अपमान आ तामसक धधरामे जरैत इंजीनियर छट-पटाइत रहल हयत। अविचलित चट्टान सन शीला लग कतेको दिन ठाढ़ हयत ओ चुपचाप कखनहुँ बर्फ कखनहुँ धधरा बनल हयत। फेर कोनो दिन अपनेसँ बहुत हारल, बहुत थाकल ठेहिआयल स्थापित मूल्य, शीलाक सम्बन्ध आ अपन पतनशील व्यक्तिगत इतिहासमे संगति बैसयबाक निष्फल कोशिश करैत मन्दिरमे ओकरा किरिया खिऔने हेतैक जे ओ किशोरीसँ सभ तरहक सम्बन्ध तोड़ि लिअय। मन्दिरसँ घूरैत काल भरि रस्ता ओ सम्बन्धकें सहज बनयबामे प्रयत्नशील रहल हयत।

सीढ़ीक अन्तिम स्टेप पर आबि हम रुकि गेल छी। बाहर बड़ रौद छैक।

एकटा रिक्शोबाला ठाढ़ भेल गमछी सँ घाम पोछि रहल अछि। दोसर रिक्शाक टायर बरकल अलकतरापर चरचराइत बस स्टैण्ड दिस जा रहल छैक। आओर कतहु क्यो नहि छैक। शहरक ई नीरवता उदास रहितो प्रिय लगैत छैक जेना किशोरी भायसँ सुनल शीलाक कथा।

एखन संगमे किशोरी भाय नहि रहितथि तँ बहुत सम्भव जे अस्वाभाविक भ' गेल रहितहुँ। कनिये ठेलि देलासँ केबाड़ खुलि गेलैक अछि। किशोरी भायक पाछू-पाछू हमहूँ कोठलीमे पहुँचि जाइत छी। इंजीनियर लग बैसलि अव्यवस्थित शीलाक घबड़ाहटि दिआ बादमे किशोरी भाय कहलनि जे हमरा सभकें नाँक करबाक चाहै छल। इंजीनियरकें कतेक खराब लागल हेंतैक।

हमर बिन परिचय करओने किशोरी भाय शीलासँ गप्पमे लागि गेलाह। हम चुपचाप सामान्य गप-शप सुनैत रहलहुँ। बीच-बीचमे कखनहुँ इंजीनियर सम्मिलित भ' जाइत छल। शीला पुरान पता पर राखी पठा देने छैक। किशोरी भाय कहैत छथिन जे ओ रीडायरेक्ट भ' जेतैक। इंजीनियर बेबीकें दुलार करैत अंग्रेजी शब्दक अर्थ पूछि रहल छैक। सभक ध्यान बेबीपर केन्द्रित भ' जाइत छैक तँ इंजीनियर कहैत छैक जे ई पूर्णतः अपन मायकें इनहेरिट कयलक अछि। बेबी साँचे तीक्ष्ण बुद्धि आ तेज स्वभावक अछि। मुह एनमेन शीला जकाँ छैक। बहुत पहिने हम शीलाक एकटा चिट्ठी पढ़ने छलिऐक। ओ नैहरमे रहैत छलि। बेनी डेढ़ बरखक छलैक। शीला चिट्ठीपर चिट्ठी दैत रहलैक। कोनो जबाब नहि। ई विश्वसनीय नहि भ' सकैत छलैक जे ओ अपने घर सभटा दरमाहा खर्च क' दैत हयत। आखिर एकटा अबोध बच्चाक दूध आ बिस्कुट छीनिकें ओ कोन प्रतिशोध लेब' चाहैत अछि, शीला पूछने रहैक।

किशोरी भायक बाथरूम चलि गेलाक उपरान्त शून्यताकें भरबा लेल इंजीनियर हमरासँ परिचय पूछैत अछि। किशोरी भाय अहाँक चर्चा कयने रहथि, शीला थाकल स्वरमे कहैत छैक।

शीला एम० ए० मे साल भरि क्लास क' कें छोड़ि देने छलि। किशोरी भाय फेरसँ शुरू करय कहैत छथिन। बेबीक आबि गेलासँ शीला अपन दिक्कति कहबासँ बचि जाइत अछि।

शीला इंजीनियरकें नहा लेबा ले' कहैत छैक। हम आ किशोरी भाय एके संगे सोचैत छी जे शीला किछु आन गप्प करबा लेल एकटा अवसर निर्मित

करबाक प्रयासमे अछि। इंजीनियर शीलाकेँ बाथरूम दिस बजा लैत छैक। खयलाक बाद इंजीनियर आ मकान-मालिकक बीच चलैत मोकद्दमा पर गप्प शुरू होइत छैक। हम सोचैत रहैत छी, एहन नीक खाना पर एके महीनामे मोटा सकैत छी।

इंजीनियर लैम्प वर्क्समे काज करैत अछि। उपयोगक अतिरिक्त रूममे बहुत रास बल्ब आ ट्यूब छैक। सिक्सटी वॉट बाला एकटा बल्ब किशोरी भाय हमरा पकड़बैत इंजीनियरसँ गोष्ठीमे अयबाक आग्रह करैत छथि।

सड़कपर आबि किशोरी भाय टिप्पणी दैत पूछैत छथि जे इंजीनियरक व्यवहारसँ एक्को रत्ती लगैत छैक जे ओकरा मोनमे कोनो ग्रन्थि छैक?

बस स्टैण्ड लग अबैत-अबैत किशोरी भाय बल्ब देखय लगैत छथि। हम हुनका कहैत छिअनि जे बल्ब फ्यूज छैक। किशोरी भाय ओकरा बदलि अनबाक आदेश दैत छथि। हम पछताइत छी जे बेकारे कहलिअनि।

शीला पूछैत अछि, हम कत'सँ घुरलहुँ। आउट पोस्ट, हम कहैत छिऐक आउट पोस्ट लगे छैक।

घुरला पर कनेक काल किशोरी भायक प्रतीक्षा करय पड़ल। ओ कोनो दोकानमे पानि पीबय चलि गेल छलाह। बल्ब देखैत ओ पुछलनि, ओतय की-की भेलैक?

एहन कराचूर दुपहरियामे पैसेंजर कम रहलाक कारणेँ बस बहुत-बहुत देरपर अबैत छैक। एक टूटा टैम्पोबाला सब सक्रिय अछि। रौदसँ बचबा लेल मुँहपर तरहत्थीक छत्ता बनबैत किशोरी भाय कहैत छथि जे ओहिठाम ठहरालासँ ओहि सभकेँ सूत'-तूत' मे असुविधा होइतैक। टैम्पोबाला हमरा सभकेँ उत्साहित करैत अछि—आइये, आइये।

पाछूक सीटपर बैसलासँ निरन्तर छूटैत टैम्पोक धुइयाँमे कखनहुँ कखनहुँकेँ बुझाइत छैक जे आब साँस अवरुद्ध भ' जयतैक।

सड़क एकदम आँखिक आगू छूटैत दूर भेल जा रहल छैक जेना हम सभ कोनो ट्रॉली पर बैसल पटरीकेँ देखैत होइ।

१९७२